CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी-तेलुगु व्याकरणों का

एक तुलनात्मक अध्ययन

लेखक

एस. वी. शिवराम शर्मा, एम० ए०,

प्रकाशक

आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी

हैदराबाद

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस रचना में मुख्यतया

* हिन्दी और तेॅलुगु भाषाओं का रचनात्मक-वैविध्य;
* तेॅलुगु भाषा की प्रकृति का आकार-प्रकार;
* हिन्दी में प्रतिबिंबित तेॅलुगु आदि द्राविड़ भाषा-संस्कार;
* हिन्दी-तेॅलुगु में अंतर्निहित भारतीय समन्वय-सामग्री आदि अंशों पर

तात्विक विचार प्रस्तुत किया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

With best compliments

of

~~Sri M.V. Krishna Rao garu~~

~~Minister for Education~~

~~Govt. of Andhra Pradesh~~

Padmashri
Nandkumar Avasthiji

S.V. Siva Rama Sarma
9-2-'76

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

* हि
वै

* तें

* हि
भा

* हि
सा

ता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी-तेलुगु व्याकरणों का

एक तुलनात्मक अध्ययन

लेखक

एस. वी. शिवराम शर्मा, एम० ए०,

प्रकाशक

आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी

हैदराबाद

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशक :
आंध्र-प्रदेश साहित्य अकादमी, कलाभवन
हैदराबाद–४

प्रथम मुद्रण : जुलाई, १९६७
द्वितीय मुद्रण : नवंबर, १९७१

मूल्य : ६.००

मुद्रक :
दक्षिण भारत प्रेस,
खैरताबाद, हैदराबाद–४ (आं. प्र.)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशकीय

(प्रथम–मुद्रण)

आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी की ओर से फ़रवरी 1965 को 'आन्ध्र प्रदेश हिन्दी लेखक संघ' की स्थापना की गयी थी। तेलुगु भाषी हिन्दी लेखकों की मौलिक रचना-शक्ति को प्रोत्साहित करने तथा हिन्दी माध्यम द्वारा आन्ध्र-साहित्य सौरभ को भारत के कोने-कोने तक पहुँचाने के उद्देश्य से लेखक संघ ने एक कार्यक्रम बनाया और कुछ पुस्तकें प्रकाशित करने का निश्चय किया था। उनमें से कुछ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अब 'हिन्दी तेलुगु व्याकरणों का एक तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक इस पुस्तक को विज्ञ-पाठकों के हाथों समर्पित करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक श्री एस. वी. शिवराम शर्मा आन्ध्र प्रदेश के बहुत पुराने हिन्दी प्रचारकों में से हैं जो पिछले 45 वर्षों से दक्षिण भारत में हिन्दी के अध्यापन कार्य में लगे हुए हैं। उनके इस विस्तृत अनुभव का परिणाम प्रस्तुत पुस्तक है जो हिन्दी और तेलुगु भाषाओं के व्याकरणों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुतकर, दोनों भाषा-भाषियों को निकट लाने में सहायक होती है। लंबे अरसे से अस्वस्थ रहते हुए भी श्री शर्मा जी ने यह पुस्तक लिखने का प्रयास किया है। अकादमी उनके प्रति अत्यन्त कृतज्ञ है।

आशा है, यह पुस्तक हिन्दी के अध्यापकों तथा भाषा शास्त्र के प्रेमियों की सहायिका सिद्ध होगी और विद्वानों के स्वागत-समादर का पात्र बनेगी।

कला भवन,
हैदराबाद
26–6–'67

देवुलपल्लि रामनुजाराव
मंत्री,
आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुक्रम

पृष्ठ

१. प्रकाशकीय (प्रथम–मुद्रण) iii
२. अनुक्रम iv
३. परिचय v
४. प्राक्कथन viii
५. निवेदन xi
६. प्रस्तावना (द्वितीय–मुद्रण) xiii
७. अभिमत xiv
८. एक समीक्षा xv
९. वक्तव्य xvii
१०. विषय–विवरण xviii
११. संकेत–परिचय xx
१२. वर्णविचार १
१३. शब्दविचार १६
१४. वाक्यविचार १३४
१५. सहायक ग्रंथसूची १३९
१६. शुद्धिपत्र १४१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परिचय

आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी से अनुबद्ध हिन्दी लेखक-संघ के अनुरोध पर श्री शिवराम शर्मा की रचना "हिन्दी-तेलुगु व्याकरणों का एक तुलनात्मक अध्ययन" की पांडुलिपि का मैंने अन्वीक्षण किया है।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से भारत बहुभाषी देश है। विभिन्न परिवारों की भाषाएँ यहाँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं में कहीं-कहीं आश्चर्यजनक साम्य भी मिलता है और कहीं-कहीं एक दूसरे से एकदम भिन्न और विपरीत प्रवृत्तियाँ। विज्ञान की रुचि इस भाषा-बाहुल्य का विश्लेषण करके हमारे यहाँ के वाग्वैविध्य को स्पष्ट करने की ओर बढ़ने लगी तो यहाँ की सांस्कृतिक चेतना इन भाषाओं के बीच आने वाले अवरोधों को भावुक मनोयोग से दूर करते हुए इन की अंतश्चेतना में निहित सामरस्य को आलोक में लाने का प्रयास करती आ रही है। विज्ञान का कार्य प्रायः विश्लेषण होता है जब कि संस्कृति का संश्लेषण अथवा संहतीकरण होता है। दोनों का जो समन्वित प्रयास कभी-कभी देखने में आता है, उसे हम ''विज्ञान का सांस्कृतिक अनुष्ठान' कह सकते हैं। इसी 'अनुष्ठान' की परंपरा में श्री शिवराम शर्मा के इस अभिनंदनीय प्रयास की गणना होनी चाहिए।

इस पुस्तक का अक्षर.अक्षर मैंने ध्यानपूर्वक पढ़ लिया है। रचना अधिकांश में मौलिक है। भाषा स्वाभाविक, शुद्ध तथा सरल है। शैली में प्रवाह है—निष्कंप और निर्मल! वैज्ञानिक विवेचन के लिए आवश्यक संतुलित शब्द-योजना पर काफ़ी ध्यान दिया गया है।

हिन्दी और तेलुगु के व्याकरणों का तुलनात्मक अध्ययन इधर कुछ वर्षों से पत्र-पत्रिकाओं में चर्चित होने लगा है, किन्तु व्यापक रूप में इतना विस्तृत विवेचन हिन्दी के माध्यम से इसी रूप में पहली बार प्रकाशित हो रहा है। इस दृष्टि से श्री शर्मा जी की यह रचना हिन्दी संसार के लिए स्वागत तथा सम्मान की वस्तु सिद्ध होगी। वास्तव में हिन्दी के माध्यम से सभी भारतीय भाषाओं को व्याकृत करके उनकी वैयक्तिकता को भारत-भारती (हिन्दी) में प्रतिच्छायित करने की आज सबसे बड़ी आवश्यकता है। जब तक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
भारतीय भाषा-दर्शन के माध्यम के रूप में हिन्दी का प्रयोग नहीं किया जाएगा, तब तक हिन्दी अपना ईप्सित रूप धारण करने में सफल नहीं हो सकेगी। इस महती साधना में इस रचना का विशेष महत्त्व है।

इस रचना की एक और विशेषता यह है कि इस में जहाँ भी तेलुगु की विशेषतओं पर प्रकाश डाला गया है, वहाँ लेखक का विचार-क्षेत्र केवल तेलुगु तक सीमित न रह कर दक्षिण की अन्य भाषाओं तथा प्राकृत, अपभ्रंश जैसी प्राचीन भाषाओं के साथ भी समन्वय करने में सजग रहा है। हिन्दी और तेॅलुगु पर लेखक का समान अधिकार तो स्पष्ट है ही, इसके अतिरिक्त संस्कृत के व्याकरण में भी आप का अभिनिवेश रचना को परिपुष्ट बनाने में सहायक हुआ है। तेॅलुगु के प्राचीन व्याकरण शास्त्र में भी आप का प्रशंसनीय प्रवेश मालूम होता है। आन्ध्र के आदि कवि नन्नयभट्ट की 'आन्ध्र शब्द चिंतामणि' तथा उसकी विभिन्न व्याख्याओं का आपने अपनी रचना में यथोचित उपयोग किया है। 'आन्ध्र शब्द चिंतामणि' का भारतीय व्याकरण शास्त्र के इतिहास में विलक्षण स्थान है। यह संस्कृत के माध्यम से ग्यारहवीं शताब्दी में लिखा गया तेलुगु व्याकरण है। जहाँ लेखक ने इस प्रकार की प्राचीन रचनाओं के प्रति अपनी श्रद्धा और उन में अपनी रुचि का अपनी रचना में प्रमाण दिया है, वहाँ उनका दृष्टिकोण इतना अधुनातन भी है कि बोलचाल की भाषा के शिष्ट प्रयोगों को भी आपने अपनी मान्यताओं की पुष्टि में उदाहृत किया हैं। प्राचीन और नवीन का यह औचित्यपूर्ण सामरस्य इस रचना की एक खास विशेषता है।

सर्वनामों का विवेचन सबसे अधिक सुन्दर बन पड़ा है। स्थूल दृष्टि से देखने पर दक्षिण की भाषाओं के सर्वनाम उत्तर की भाषाओं के सर्वनामों से अत्यधिक भिन्न दिखाई पड़ते हैं। लेकिन गहराई में पैठ कर तात्विक चिंतन करने से दोनों का मूलस्रोत एक ही-सा दिखाई देता है। 'आत्मन्' शब्द से जहाँ एक भूखंड में आप, आपण, आपनि, तमरु, तुम, तुमि, तुसी आदि शब्द प्रचलित हुए, वहाँ दूसरी जगह तमरु (तेलुगु), ताँगळ (तमिल), तावु (कन्नड़), आयन (बोलचाल की तेलुगु) आदि शब्द भी मिलते हैं। इस प्रकार प्रत्येक सर्वनाम की अपनी एक सरस कहानी है। गुणग्राही शोधकर्ता को चाहिए कि इस मूलभूत साम्य का अनुभव करे और कराए। इस दिशा में शोधकार्य अभी होने को है। श्री शर्मा ने इस अल्पकाय रचना में इस विषय का जो विवेचन किया है, यह आगे के शोधकर्त्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यद्यपि रचना का कलेवर अधिक परिवर्द्धित नहीं हो पाया है, लेखक ने भाषा के प्रायः सभी प्रमुख अंगों को स्थान दिया है और प्रत्येक का साधारण विवेचन प्रस्तुत किया है। इसलिए यह रचना इस दिशा में प्रारंभ मात्र है और इसी में इसका महत्त्व है।

अन्त में मैं आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी और हिन्दी लेखक संघ को बधाई देना चाहता हूँ जिनके सत्संकल्प से यह रचना प्रकाश में आ रही है।

5/411 ओल्ड राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-5
10-12-1966

डा० इलपावुलूरि पांडुरंगराव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राक्कथन

श्री शिवराम शर्मा जी का 'हिन्दी-तेँलुगु व्याकरणों का एक तुलनात्मक अध्ययन' ग्रंथ मैं आद्यन्त देख गया। अनुभवी लेखक ने इस ग्रंथ में हिन्दी और तेँलुगु व्याकरणों या भाषा-उपादानों की समानताओं और भिन्नताओं का विद्वत्तापूर्ण विश्लेषण एवं विवेचन किया है।

वर्ण, पद, एवं वाक्य, भाषा के इन तीन उपादानों को ही व्याकरण शास्त्र महत्त्व देता है। अर्थ-उपादान का अध्ययन तर्क-शास्त्र का विषय है। 'वह्निना सिञ्चति' व्याकरण-संगत वाक्य है, तर्कसंगत नहीं। 'जलेन सिञ्चति' वाक्य व्याकरण और तर्क दोनों के लिए ग्राह्य हो सकता है।

भाषा-विज्ञान, वर्ण, पद, वाक्य एवं अर्थ, भाषा के इन चारों उपादानों का अध्ययन करता है और इन चारों उपादानों के आधार पर भाषा-विज्ञान की चार शाखाएँ, ध्वनि-विज्ञान, पद-विज्ञान, वाक्य-विज्ञान और अर्थ-विज्ञान, की संज्ञा प्राप्त करके विकसित हुई।

व्याकरण-शास्त्र की प्रकृति के अनुसार आचार्य श्री शिवराम जी ने वर्ण, पद एवं वाक्य की प्रकृति के विश्लेषण एवं विवेचन के आधार पर तेँलुगु एवं हिन्दी भाषाओं के व्याकरणों का तुलनात्मक अध्ययन इस सुनियोजित ग्रंथ में प्रस्तुत किया है।

किसी भी भाषा की सामान्य वर्ण-प्रकृति संक्षिप्त होती है, पद-प्रकृति पर्याप्त विस्तृत होती है एवं वाक्य-प्रकृति भी संक्षिप्त ही रहा करती है। इस नियम के आधार पर श्री शिवराम जी के इस ग्रंथ का वर्ण-विचार-खंड संक्षिप्त है। यह १५ पृष्ठों एवं २५ ज्ञातव्य तथ्यों के अध्ययन में नियोजित है। इस ग्रंथ के शब्द-विचार-खंड का कलेवर ग्रंथ के १६ वें पृष्ठ से आरम्भ हो कर ११८ वें पृष्ठ पर पूर्ण हुआ है और इसमें १०७ ज्ञातव्य विषयों का विश्लेषण एवं विवेचन किया गया है।

भाषा के वाक्य-तन्त्र की संक्षिप्तता के अनुकूल ही इस ग्रंथ का वाक्य-विचार-खंड ११९ वें पृष्ठ पर आरम्भ हो कर १२१ वें पृष्ठ पर पूर्ण हो गया है और इस खंड में ५ ज्ञातव्य विषयों का विश्लेषण एवं विवेचन प्रस्तुत किया गया है। विषयों की नियोजन-प्रक्रिया में इस ग्रंथ में १३५ ज्ञातव्य दिशाओं के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
आधार पर हिन्दी एवं तेॅलुगु भाषाओं की प्रकृतियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इस ग्रंथ के निर्माण के लिए लेखक ने ऋक् प्रातिशाख्य, पातंजल महाभाष्य, वररुचि के प्राकृत-प्रकाश एवं हेमचन्द्र के प्राकृत-व्याकरण से अपनी धारणाओं के पोषण के लिए सामग्री ली है। प्राचीनतम काल से वर्तमान तक आ कर दो भाषाओं का इस सामग्री के आधार पर विवेचन हो जाने से दोनों के ऐतिहासिक क्रम में होने वाले विकास पर भी इस ग्रंथ में प्रकाश पड़ गया है।

इस सामग्री के अतिरिक्त लेखक ने श्री डाक्टर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, श्री एस. एच. केलॉग, श्री ज्यूलस ब्लॉख, श्री. जी. ए. ग्रियर्सन, श्री. पी. एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री एवं डा० श्री. आर. एन. वाले के चिन्तन का उपयोग करके अपने चिन्तन के सोपानों को अधिक पुष्ट एवं प्रमाण-संगत बनाया है।

उपर्युक्त विद्वानों की सामग्री के साथ-साथ लेखक ने अपने विवेचन के समर्थन एवं परिपोषण के लिए डा० श्री धीरेन्द्र वर्मा, डा० श्री बाबूराम सक्सेना एवं डा० श्री उदयनारायण तिवारी के मतों एवं चिन्तनों का उयोपग किया है।

तेॅलुगुकी प्रकृति पर सम्यक् प्रकाश डालने के लिए लेखक ने 'आन्ध्र शब्द चिन्तामणि', 'आन्ध्र भाषा विकासमु', 'भाषा चारित्रिक व्यासमुलु' 'बाल व्याकरणमु', 'आन्ध्र भाषानुशासनमु', 'काव्यालंकार चूडामणि' एवं 'आन्ध्र महाभारतमु' ग्रंथों की सामग्री का उपयोग किया है।

संस्कृत के तत्सम शब्दों के हिन्दी एवं तेॅलुगु अर्थों की तुलना भी इस ग्रंथ की विशेषता है। इस ग्रंथ में तीन प्रकार के तद्भव शब्दों की सूचियाँ दी गयी हैं। पहली सूची में ११५ ऐसे शब्द हैं जो संस्कृत, पालि या प्राकृत के क्रम से तेॅलुगु और हिन्दी में आये हैं एवं जिनके रूपों में तो कुछ परिवर्तन हुए हैं, पर उनके अर्थ दोनों भाषाओं में समान हैं। दूसरी सूची में तेॅलुगु के ७८ ऐसे शब्द हैं जो संस्कृत एवं प्राकृत की परम्परा से परिवर्तित हो कर तेॅलुगु में आये, पर हिन्दी में प्रचलित नहीं हैं। तीसरी सूची में ८६ ऐसे शब्द दिये गये हैं जो तेॅलुगु में अपेक्षाकृत आधुनिक काल में आये और जिनके रूप और अर्थ हिन्दी एवं तेॅलुगु भाषाओं में प्राय: अपरिवर्तित हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उपर्युक्त सूचियों के शब्दों के अतिरिक्त ३५ देशी और ३० विदेशी शब्दों का अध्ययन भी इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है और उनकी तुलनात्मक स्थितियों का अध्ययन, हिन्दी और तेॅलुगु दोनों भाषाओं को ध्यान में रख कर किया गया है। इनके अतिरिक्त ४७ मुहावरों और १३ कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन भी इस ग्रंथ में मिलता है।

अन्य व्याकरणात्मक दिशाओं में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण अव्यय, समुच्चय बोधक अव्यय, विस्मयादि बोधक अव्यय, काल, कारक, कृदन्त इत्यादि का अध्ययन भी हिन्दी एवं तेॅलुगु भाषाओं की तुलनात्मक दृष्टि से इस ग्रंथ में संक्षेप में एवं विद्वत्तापूर्ण ढंग से लेखक ने प्रस्तुत किया है।

यह ग्रंथ इस कारण भी अधिक उपयोगी हो गया है कि लेखक ने तेॅलुगु लिपि में प्रयुक्त सभी शब्दों का वैज्ञानिक पद्धति से नागरी उच्चारण एवं हिन्दी अर्थ दे दिया है। इस प्रक्रिया से हिन्दी भाषियों को तेॅलुगु की प्रकृति समझने में बड़ी सहायता मिलेगी एवं इससे इस ग्रंथ के प्रचार की व्याप्ति की संभावना बहुत अधिक बढ़ गयी है।

विद्या एवं वय दोनों दृष्टियों से कृति-लेखक मेरे लिए पूजार्ह हैं; अतः इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रंथ की रचना के लिए मैं उनके चरणों में अपने अनन्त प्रणाम अर्पित करता हूँ।

उस्मानिया विश्वविद्यालय
हैदराबाद, आं० प्र०
जुलाई १९६७

डा० रामनिरंजन पाण्डेय
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निवेदन

हिन्दी तथा तेॅलुगु भिन्न परिवारों से विकसित आधुनिक भारतीय भाषाएँ हैं। हिन्दी का मूल स्रोत प्राचीन भारतीय आर्य है तथा तेॅलुगु का प्राचीन मूल द्राविड। दोनों अपने-अपने परिवारों की अतिव्याप्त प्रमुख भाषाएँ हैं। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से हिन्दी तथा तेॅलुगु में कोई पारिवारिक संबंध (Geneological Afflnity) स्थापित नहीं होता। इन भाषाओं के विकासक्रम का ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना इस छोटी-सी रचना का उद्देश्य नहीं है; उन पर कई स्वतंत्र ग्रंथ उपलब्ध हैं। इसमें तो केवल खड़ी बोली हिन्दी तथा आधुनिक तेॅलुगु के प्रायोगिक व्याकरणों को ले कर उन दोनों की रूपरेखा तुलनात्मक रीति से खींचने का प्रयत्न किया गया है। सम की अपेक्षा असम अंशों पर ही विशेष ध्यान दिये जाने के कारण इसे विभेदात्मक अध्ययन(Contrastive Study) कहना अधिक उचित होगा।

अन्य भाषा सीखने में उसका विभेददर्शक व्याकरण कितना प्रयोजनकारी होता है–यह बात विशेषज्ञों से छिपी नहीं है। हिन्दी के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को यह जानना केवल लाभदायक ही नहीं वरन् आवश्यक भी है कि हिन्दी के कौन कौन से रचनात्मक अंश उनकी अपनी मातृभाषा से भिन्न और विलक्षण दिखाई देते हैं। यही कारण है कि 'सेन्ट्रल इन्स्टिटयूट आफ़ इंग्लिश' तथा 'दि लिंग्विस्टिक सर्क़िल आफ़ दिल्ली' जैसी प्रशिक्षण संस्थाएँ विभेदात्मक भाषाध्ययन (Contrastive Linguistic Study) को अपने पाठ्यक्रम में स्थान दे कर इस पर अनुसंधान कार्य भी आयोजित कर रही हैं। मुझे विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक इस दिशा में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

प्राय: सभी प्रादेशिक सरकारों ने अपने शिक्षाक्रम में 'त्रिभाषा सूत्र' पर अमल करने का प्रस्ताव स्वीकार किया है। दिल्ली, उत्तर प्रदेश तथा बिहार में तो तमिळ, तेॅलुगु जैसी दक्षिणी भाषाओं के लिए शिक्षण केन्द्र भी खुल गये हैं। आर्य भाषाओं के क्षेत्र में किसी एक द्राविड भाषा का तथा द्राविड भाषाओं के क्षेत्र में राष्ट्रभाषा हिन्दी का अध्ययन हमारे राष्ट्रीय समैक्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(National Integration) को परिपुष्ट करने में साधक होगा। पाठकों को इस रचना में तेॅलुगु भाषा का सामान्य परिचय मिल जाएगा।

ग्रियर्सन, स्टेन कोनो, ज्यूल्स ब्लाख तथा सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या जैसे प्रसिद्ध भाषाशास्त्र के विद्वानों की रचनाओं से हमें इस बात का पता चलता है कि प्राचीन भारतीय आर्य भाषा पर तत्कालीन द्राविड भाषाओं का जो प्रभाव पड़ा था उसके कारण भी उसमें नूतन संस्कार उत्पन्न हुए और उसने संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंशों में परिवर्तित होते हुए आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं को जन्म दिया था। इसमें संदेह नहीं कि यह द्राविड़ भाषा-प्रभाव इतना प्रबल और विस्तृत नहीं रहा जितना कि संस्कृत और प्राकृतों का द्राविड़ भाषाओं पर पड़ा प्रभाव था। फिर भी, इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भाषा के क्षेत्र में भी आर्य और द्राविड़ों में परस्पर आदान-प्रदान, सम्मिलन और समन्वय होते आया है। इस पुस्तक में हिन्दी और तेॅलुगु से संबंधित रचनात्मक समानता की जो सामग्री प्रस्तुत की गयी है उससे यह विदित होगा कि वास्तव में हिन्दी और तेॅलुगु एक दूसरी से उतनी दूर नहीं हैं जितनी कि अक्सर भ्रमवश समझी जाती हैं, बल्कि दोनों सन्निकट हैं। मैं यह दावा नहीं करता कि मेरी यह रचना उपर्युक्त दिशाओं में सफल बन पड़ी है। यह प्रयत्न मात्र है। इससे दूसरों को यदि आगे बढ़ने की प्रेरणा मिल जाय तो मैं अपने श्रम को सफल समझूँगा।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए मैं 'आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी' का चिरकृतज्ञ हूँ। उस्मानिया विश्वविद्यालय के तेॅलुगु-रीडर, डा० रामराजु, डा० ऐ० पाण्डुरंगराव, तथा डा० श्रीराम शर्मा का बड़ा उपकार मानता हूँ जिन्होंने इसकी पांडुलिपि पढ़ कर आवश्यक सुधार सुझाये हैं। 'हिन्दी लेखक संघ' की तरफ़ से डा० भीमसेन 'निर्मल' ने प्रकाशन की व्यवस्था में काफ़ी सहयोग दिया। उस्मानिया विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष आचार्य श्री रामनिरंजन पाण्डेय ने इसके लिए प्राक्कथन लिख कर मुझ पर बड़ी कृपा की है। मैं इन सब महानुभावों का आभार मानता हूँ। 'कमर्शियल प्रेस' के संचालक श्री मुनीन्द्र जी ने विशेष संकेत चिह्नों के साथ दो-दो लिपियों में इसे छापने का श्रम उठाया, वे मेरे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

हैदराबाद, आं. प्र.
जुलाई १९६७

एस. वि. शिवराम शर्मा
(भूतपूर्व प्राध्यापक : आर. बि, वि. आर. आर.
विमेन्स कालेज)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रस्तावना

(द्वितीय–मुद्रण)

'हिन्दी तेॅलुगु व्याकरणों का एक तुलनात्मक अध्ययन'—रचना का यह द्वितीय मुद्रण प्रकाशित करते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है। प्रथम मुद्रण की सारी प्रतियाँ बहुत पहले ही बिक गई थीं। जैसे हमने आशा व्यक्त की थी, उत्तर और दक्षिण के भाषा-शास्त्र के प्रेमी, अध्यापक तथा विद्यार्थी वर्ग ने समान रूप से इस पुस्तक को समादृत किया और हमारे यत्न को सफल बनाया। यह सन्तोष का विषय है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने इस रचना पर पुरस्कार प्रदान कर लेखक को सम्मानित किया।

हमारा विश्वास है कि भारतीय भाषाओं के जिज्ञासु-प्रेमी इस दूसरे संस्करण की उपलब्धि से समुचित लाभ उठायेंगे और यह रचना हमारे देश के भिन्न भिन्न भाषा-क्षेत्रों के बीच में समन्वय और समैक्य की भावना बढ़ाने में उपयोगी सिद्ध होगी। इसे दुबारा प्रकाशित करने की स्वीकृति दे कर लेखक ने अकादमी को गौरवान्वित किया है। इसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

कलाभवन,
हैदराबाद।
नवंबर १९७१

देवुलपल्लि रामानुजराव
मन्त्री
आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभिमत

मैंने श्री एस. वी. शिवराम शर्मा के 'हिन्दी तेॅलुगु व्याकरणों का एक तुलनात्मक अध्ययन' पुस्तक का अध्ययन किया। श्री शर्माजी गत पचास वर्षों से हिन्दी का अध्यापन-कार्य कर रहे हैं। उनका अपनी मातृ भाषा-तेॅलुगु पर तो अधिकार है ही, साथ ही उन्होंने हिन्दी भाषा की प्रवृत्तियों का भी मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया है। इस प्रकार वे दोनों भाषाओं के व्याकरणों का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता रखते हैं। हिन्दी भाषा के सतत अध्यापन से उन्होंने हिन्दी व्याकरण के प्रत्येक अंग का गहन अध्ययन कर अपने मौलिक निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं। यत्रतत्र दोनों भाषाओं के व्याकरिणक रूपों में समानता देख कर यह भी आभास होने लगता है कि तेॅलुगु को आर्य भाषा परिवार से सर्वथा पृथक् सिद्ध करना केवल बुद्धि चमत्कार है। काल्डवेल तथा अन्य पाश्चात्य भाषा-विज्ञानियों की प्रवृत्ति भारतीय भाषाओं में अधिक से अधिक विभिन्नता दिखाने की रही है; अधिक से अधिक एकता दिखाने की नहीं रही। शर्माजी ने दूसरा मार्ग ग्रहण किया है। भाषाई निकटता का उद्‌घाटन राष्ट्र में एकता स्थापित करने का महान पुण्यकार्य है। शर्माजी का यह अध्ययन हिन्दी और तेॅलुगु भाषियों को अपनी भाषाओं के मर्म को समझने में बड़ा सहायक सिद्ध हो सकता है। विश्वविद्यालयों को भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन की एक योजना बनानी चाहिए। प्रस्तुत ग्रंथ एक शोध-प्रबंध है। यदि यह किसी विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया जाता तो निश्चय ही शोध-उपाधि का अधिकारी होता। यह वर्तमान रूप में भी इश दिशा में कार्य करने वालों का मार्गदर्शन कर सकता है। इसकी रचना में शोध-प्रक्रिया का पूर्ण अनुसरण किया गया है। मैं शर्माजी को उनकी इस मौलिक और विद्वत्तापूर्ण शोधकृति के लिए हृदय से बधाई और आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी को इसे प्रकाशित करने के उपलक्ष्य में हार्दिक साधुवाद देता हूँ।

C/o भोपाल विश्वविद्यालय
भोपाल, २२–६–१९७१

विनय मोहन शर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक समीक्षा

(समालोचना का यह उद्धृत अंश 'समीक्षा' नामक त्रैमासिक के समापन विशेषांक में एप्रिल १९६८ को प्रकाशित हुआ।)

"हिन्दी के पुराने प्रचारक तथा एकान्त साधक श्री एस० वी० शिवराम शर्मा कृत 'हिन्दी तेलुगु व्याकरणों का एक तुलनात्मक अध्ययन' सच्चे अर्थ में, जैसा कि डा० इलपावुलुरि पांडुरंग राव ने 'परिचय' में इंगित किया है, 'विज्ञान के सांस्कृतिक अनुष्ठान परंपरा' में परिगणनीय एक अभिनंदनीय सत्प्रयास है। किसी बहुभाषी देश में प्रचलित विभिन्न भाषा-परिवारों की समकालीन प्रतिनिधि भाषाओं एवं उनके व्याकरणों के तुलनात्मक अध्ययन से न केवल उनके स्वरूपगत साम्य एवं वैषम्य का, अथवा दीर्घकालीन साहचर्य जनित पारस्परिक प्रभावों का ही ज्ञान होता हैं, अपितु उससे देश की सांस्कृतिक एकता को परखने की निर्मल दृष्टि तथा राष्ट्रीय अखंडता के संरक्षण एवं पोषण की समुचित प्रेरणा भी प्राप्त होती है।

"हिन्दी एवं तेलुगु यद्यपि पृथक् परिवार की भाषाएँ हैं, किंतु विवेच्य पुस्तक में इनके शब्द भण्डार एवं रचनात्मक स्वरूप की समानता से संबद्ध जो सामग्री उपस्थित की गयी हैं, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ये भाषाएँ बहुत से अंशों में साम्य भी रखती हैं। इसका एकमात्र कारण इनमें तथा इनके पूर्व स्रोतों में निरन्तर सहयोगपूर्ण साहचार्य तथा परस्पर आदान प्रदान की सुदीर्घ परंपरा को ही माना जा सकता है। इस संबंध में लेखक का यह कथन कि—"क्या हिन्दी क्या तेलुगु सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं की धारा आर्य-द्राविड की सम्मिलित गंगा-जमुनी है", उक्त सत्य की ओर ही संकेत करता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भारत की सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता का मूल रहस्य इसी सत्य में निहित है।

"यों तो लेखक ने पुस्तक के 'निवेदन' में इसे विवेच्य भाषाओं का विभेदात्मक अध्ययन कहना अधिक उचित माना है, किंतु वस्तु-निष्ठ दृष्टि से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुस्तक का अध्ययन करने पर लेखक का उक्त मंतव्य सही नहीं प्रतीत होता, क्योंकि, इसमें विवेच्य भाषाओं के सम तथा असम दोनों ही अंशों पर समान रूप से प्रकाश डाला गया है।

"पुस्तक वर्ण, शब्द एवं वाक्य के क्रमशः तीन प्रकरणों में विभक्त है, जिनमें वर्ण एवं वाक्य के प्रकरण तो अति संक्षिप्त हैं, किन्तु शब्द प्रकरण अपेक्षाकृत विस्तृत है। कुल मिला कर पुस्तक का वर्ण्य विषय जितना व्यापक है, उस अनुपात में इसकी काया बड़ी ही छोटी है। फलतः इसमें विवेच्य भाषाओं के व्याकरणों के केवल मुख्य मुख्य स्थूल तथ्यों का ही तुलनात्मक विवेचन हो पाया है। अतः जो लोग इनकी सूक्ष्म व्याकरणिक भंगिमाओं एवं विच्छित्तियों का सम्यक् तुलनात्मक ज्ञान प्राप्त करने के अभिलाषी हैं, उनका पूर्ण संतोष इस से प्रायः संभव नहीं। फिर भी इस में संदेह नहीं कि पुस्तक अत्यंत श्रम एवं मनोयोग के साथ लिखी गयी है तथा कम से कम पृष्ठों में अधिक से अधिक सामग्री भर देने का प्रयास किया गया है।

लेखक का हिन्दी तथा तेलुगु के प्राचीन एवं अर्वाचीन व्याकरणों पर तो समान अधिकार है ही, साथ ही प्राकृत एवं अपभ्रंश के व्याकरणों में भी अच्छी पैठ है, जिस के प्रमाण पुस्तक में सर्वत्र भरे पड़े हैं। इसके अतिरिक्त लेखक ने अपनी स्थापनाओं की पुष्टि में आधुनिक भाषाविज्ञानियों के भी मत उद्धृत किये हैं, जिन से पुस्तक की उपादेयता और भी बढ़ गयी है।

"पुस्तक भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भी प्रायः निर्दोष है। यों इस में यत्रयत्र कुछ ऐसी बातें भी अवश्य हैं, जो संदिग्ध या अप्रामाणिक कही जा सकती हैं; उदाहरणार्थ–हिन्दी को हलंत भाषा मानना; हिन्दी में 'श' का मूर्धन्य उच्चारण स्वीकार करना आदि। वस्तुतः हिन्दी में जिन विशेष स्थितियों में वैयाकरणों ने 'अ' के लोप या अश्रुत रह जाने की बात कही है, वहाँ उस का लोप नहीं, अपितु बलाघात रहित अर्धह्रस्व 'अ' की उपस्थिति है। इसी तरह हिन्दी में 'श' का उच्चारण मूर्धन्य नहीं, कठोर तालव्य है।...कुल मिलाकर पुस्तक अवश्य पठनीय है और इसके लिए लेखक तथा प्रकाशक दोनों बधाई के अधिकारी हैं।"

—अनन्त चौधरी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वक्तव्य

हिन्दी और तेलुगु व्याकरणों के तुलनात्मक अध्ययन पर रची गयी मेरी इस पुस्तक को पुनर्मुद्रण का सुयोग प्राप्त होगा–यह मैंने सोचा न था। पुस्तक के अप्राप्य हो जाने के कई महीनों बाद आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी के अधिकारियों ने स्वतः ही उसके पुनर्मुद्रण का निर्णय लेकर मुझे सूचित किया और मैंने उन का प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार किया। एतदर्थ मैं अकादमी का आभार मानता हूँ।

मुझे यह देखकर संतोष हुआ कि हिन्दी तेलुगु भाषाओं के अध्ययन में रुचि रखनेवाले विद्याव्यसनी तथा शिक्षकों ने इस पुस्तक की उपयोगिता सिद्ध कर दी। भाषाशास्त्र के कई विद्वानों ने इस पर अपना अमूल्य सम्मति प्रगट कर मुझे अनुगृहीत किया। उनके बताये कुछ दोषों का परिहार इस दूसरे संस्करण में किया गया है।

मेरी बड़ी कामना थी कि वर्ण, वाक्य, संधि और समास आदि मुख्य प्रकरणों पर अधिक से अधिक उपयुक्तांश जुटा कर रचना को यथासंभव समग्र बनाऊँ; किन्तु समय और साधनों की कमी ने मेरे यत्न को कुंठित कर दिया। फिर भी, अनेक स्थलों पर नूतनांश जोड़ दिये गये हैं जिस के कारण पुस्तक के आकार में पूर्व की अपेक्षा कुछ वृद्धि भी हुई है। तब भी वर्ण्य विषय के विस्तार के अनुपात में पुस्तक की काया बहुत ही छोटी हो गयी है। अनेक विषयों का विवेचन बड़े ही संक्षेप में हो पाया है। असल में इसके एक एक प्रकरण पर एक-एक शोध ग्रंथ स्वतंत्र रूप से लिखा जा सकता है। श्रद्धेय आचार्य श्री विनयमोहन शर्मा ने अपने अभिमत में यह परामर्श दिया कि हमारे यहाँ के विश्वविद्यालयों को भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन की एक योजना बनानी चाहिए। भारतीय भाषाओं की तथा सांस्कृतिक एकता की पुनः प्रतिष्ठा के लिए ऐसी योजना निश्चय ही अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

अन्यत्र प्रकाशित 'एक समीक्षा' नामक आलोचना में दो एक तथा-कथित त्रुटियों का ज़िक्र हुआ है। उस पर अपना मन्तव्य विज्ञ-पाठकों के सामने प्रस्तुत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करना मैं उचित समझता हूँ। हिन्दी (खड़ीबोली) को हलंत भाषा बतलाने में मेरा इतना ही आशय था कि शब्दों का अन्त्य असंयुक्त ह्रस्व अकार अनुच्चरित रहता है। 'हलचळ', 'दौड़धूप', 'मरघट' जैसे शब्द प्रकृतरूप से अकारांत होते हुए भी प्रचलित उच्चारण में हलंत ही बन जाते हैं; इस से कोई इनकार नहीं कर सकता। दूसरा अंश 'श' के विषय में है। 'शर्त', 'शहर', 'तमाशा' जैसे शब्दों में 'श' के उच्चारण को मूर्धन्य न मान कर कठोर तालव्य कहें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है; परंतु वह उच्चारण तेॅलुगु भाषा भाषियों के उच्चारण से अवश्य ही भिन्न होता है। उसे शुद्ध तालव्य तो नहीं कहा जा सकता।

मैं यह दावा नहीं करता कि मेरी यह रचना सर्वांश में निर्दोष है और विषयविवेचन की दृष्टि से पूर्ण है। विशेषज्ञ इस में जो दोष पायेंगे उनकी सूचना मुझे देने की कृपा करें।

हैदराबाद
नवंबर १९७१

एस० वि० शिवराम शर्मा

विषय-विवरण

१. वर्ण–विचार (पृ. १–१५) :

(ह्रस्व 'ऍ' और 'ऑ' १—संयुक्त स्वर २—नासिक्य ध्वनि, संवृत 'अ' ३—दंत्य 'च़' और 'ज़' ४—शकट रेफ ५—मूर्धन्य ळ ७—मूर्धन्य व्यंजन ९—मूल द्राविड की विशेष ध्वनि ழ १०—तेॅलुगु में स्वरांतता ११—खड़ी बोली हलन्त है १३—तेॅलुगु और नागरी लिपियाँ १४—हिन्दी लिखावट में सुधार १५)

२. शब्द–विचार पृ. (१६–१३३) :

(उत्पत्ति मूलक वर्गीकरण १६—भिन्नार्थक संस्कृत शब्द १८—तद्भव शब्द २०—तद्भव शब्द सूची १–२५—तद्भव शब्द सूची २–२७—तद्भव शब्द सूची ३–३२—देशी और द्राविड शब्द ३६—द्राविड ध्वनि नियम ३७—समान विदेशी शब्द ४०—संधि ४२—पररूप संधि ४३—यडागम ४३—नुगागम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और द्रुत संधि ४४—संधि में साम्य ४५—संज्ञा की रूपरचना ४८—लिंग ५१—महत्-अमहत् ५२—वचन और कारक ५३—विकारी रूप ५३—कारक शब्द ५४—अपभ्रंश के कारक परसर्ग ५५—कर्तृकारक ५६—संबोधन और कर्म कारक ५७—करण, संप्रदान, और अपादान कारक ५८—संबंध कारक ५९—अधिकरण कारक ६०—दो दो परसर्ग ६१—सर्वनाम पुरुषवाचक ६१—प्रश्नवाचक और संकेत वाचक ६२—प्रातिपदिक निर्देशक धातुएँ ६३—तेलुगु का विशेष सर्वनाम ६४—संबंधवाचक और निजवाचक ६४—अनिश्चयवाचक और संख्यावाचक ६५—क्रमवाचक ६६—आवृत्ति-सूचक ६७—सर्वनामों की रूपरचना ६७—विकारी रूप ६८—सार्वनामिक विकरण ६९—विकरणों से विशेष रचना ७०—तत्सम सर्वनाम ७२—विशेषण ७३—विशेषणों की रचना ७४—तरतम भाव ७५—संख्या शब्द ७५—क्रिया की रूपरचना ७५—कृदंतरीति का अवलंबन ७६—तेलुगु क्रिया से साम्य ७७—नाम धातु ७९—तत्सम क्रिया धातुएँ ८०—तद्भव क्रिया धातुएँ ८२—हिन्दी धातुएँ ८३—प्रेरणार्थक ८५—प्रार्थना या विधि ८६—तद्धर्मकाल ८७—अतिरिक्त कालभेद ८८—क्रिया में लिंग भेद ९०—वाच्य ९०—'पड़' का साम्य ९१—कृदन्त ९१—तें० में संबंधवाचकों का अभाव ९२—कृदन्त विशेषण तथा अव्यय ९३—भविष्यत् कालीन कृदन्त ९४—पूर्वकालिक क्रिया ९४—क्रियार्थक संज्ञा ९५—'अन्' तथा 'अन' प्रत्यय ९६—'ट' प्रत्यय ९७—रचना और प्रयोग ९७—संयुक्त क्रिया ९८—सहायक क्रिया ९९—संयुक्त क्रिया की रचना-रीतियाँ ९९—चाह, चाहिए १००—निषेधार्थक १०२—लग, दे, सक १०३—संयुक्त क्रिया द्राविडी है १०७—समान संयुक्त क्रिया सूची १०८—नकारार्थक क्रिया ११३—संबंध बोधक अव्यय, क्रिया विशेषण ११५—अवधारणार्थक, समुच्चय बोधक ११६—विस्मयादिबोधक, द्विरुक्ति ११७—पुनरावृत्ति ११९—सार्थक द्वंद्व १२०—निरर्थक द्वंद्व १२१—ध्वन्यनुकरण १२२—कृत् प्रत्यय (विशेष) १२३—तद्धित प्रत्यय १२६—मुहाविरे १३०—कहावतें १३२—)

३. वाक्य-विचार (१३४-१३८) :

(समानाधिकरण; सामान्य क्रिया लोप; वाक्य में शब्दों का क्रम-१३४—वाक्यभेद १३५—उपवाक्यों का स्थान; परोक्षउक्ति १३६—योजक; द्राविड वाक्य रीति का प्रभाव—१३७।)

——

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संकेत-परिचय

१. तेँलुगु-शब्दों का उच्चारण :

राम, भीम, मकान—जैसे अकारांत शब्दों का अंत्य 'अ' हिन्दी के उच्चारण में लुप्त रहता है और वे राम्, भीम्, मकान्—उच्चरित होते हैं। तेँलुगु में वैसा नहीं होता। अंत्य 'अ' पूर्ण और स्पष्ट बोला जाता है। तेँलुगु के शब्द जो नागरी में दिये गये हैं, उनके पढ़ने में इस स्वरांत उच्चारण पर ध्यान रखना आवश्यक है।

२. एँ, ओँ—तेँलुगु में ए और ओ के ह्रस्वरूप भी प्रचलित हैं। इन अक्षरों के ऊपर दिया गया ˘ यह संकेत ह्रस्व उच्चरण को सूचित करता है; 'एक्का', ओसारा और 'एकाएक'—में जैसा बोला जाता है। बारहखड़ी में भी यही संकेत दिया गया है, जैसे: తెలుగు = तेँलुगु, కొట్టు = कोँट्टु, ఒంటె = ओँटेँ.

३. च़ ज़—च और ज के दंत्य वर्ण भी तेँलुगु में विद्यमान हैं, जिन्हें नीचे अथवा पार्श्व में बिन्दु दे कर सूचित किया गया है। जैसे : చాప = च़ाप, చూచి = चू़चि, జంకు = ज़ंकु, జోడు = ज़ोडु।

४. ऱ—सादा 'र' के अतिरिक्त तेँलुगु में घर्षण वाला 'ऱ' भी पाया जाता है। 'र' के नीचे अथवा पार्श्व में बिन्दु दे कर इसे सूचित किया गया है, जैसे : కొఱకు कोँऱकु, అఱ = अऱ, గుఱ్ఱము = गुऱ्ऱमु

५. संक्षिप्त चिह्न :

हिं० = हिन्दी	ए० व० = एक-वचन
तेँ० = तेँलुगु	ब० व० = बहु-वचन
सं० = संस्कृत	उदा० = उदाहरण
प्रा० = प्राकृत	इ० = इत्यादि
प्रा० भा० आ० = प्राचीन भारतीय आर्य भाषा	दे० = देखिए
म० भा० आ० = मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा	
आ० भा० आ० = आधुनिक भारतीय आर्य भाषा	पृ० = पृष्ठ
पुं० लिं० = पुंलिंग	सू० = सूत्र
स्त्री० लिं० = स्त्रीलिंग	ई० = ईस्वीं
नपुं० लिं० = नपुंसक लिंग	परि० = परिच्छेद
म० लिं० = महत् लिंग	> = निष्पन्न रूप
अम० लिं० अमहत् लिंग	√ = धातु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी–तेॅलुगु व्याकरणों का एक तुलनात्मक अध्ययन

१. वर्ण विचार

१. खड़ी बोली हिन्दी में पाये जाने वाले सभी स्वर तेॅलुगु में भी विद्यमान हैं। ऋ का उपयोग केवल थोड़े से संस्कृत शब्दों में होता है। इससे बनने वाले ऋषि, ऋण, ऋतु, आदि तत्सम शब्द दोनों भाषाओं में प्रयुक्त हो' हैं। ॠ, लृ, लॄ का प्रयोग न हिन्दी में होता है, न तेॅलुगु में। अंतःकरण, अतःते क्रमशः आदि थोड़े से संस्कृत शब्दों में (:) विसर्ग का उपयोग दिखाई देता है।

२. तेॅलुगु तथा अन्य द्राविड भाषाओं में ऋ का उच्चारण हिन्दी बोलने वालों के उच्चारण से भिन्न होता है। हिन्दी में ऋषि, ऋतु, कृष्ण, कृपा का उच्चारण रिषि, रितु, क्रिष्ण, क्रिपा होता है, परन्तु तेॅलुगु में रुषि, रुतु, क्रुष्ण, क्रुपा होता है; उड़िया और मराठी में भी ऋ का रु जैसा उच्चारण प्रचलित है।[1]

३. हिन्दी में ए और ओ दीर्घ स्वर हैं, तेॅलुगु में दीर्घ के अतिरिक्त इनके ऍ (ॅ) और ऑ (ॅ) ह्रस्व रूप भी विद्यमान हैं। प्राकृत तथा अप-

---

१. ऋ का रु जैसा उच्चारण भी सही और प्राचीन मालूम होता है। शृणोति के पर्याय में श्रिणोति और श्रुणोति दोनों रूप वैदिक भाषा में मिलते हैं। नीचे के उदाहरणों में रु उच्चारण स्पष्ट लक्षित होता है :सं० √ कृ > कुरु; वृषभ > प्रा० उसभ; पृथ्वी > प्रा० पुढ़वी; वृक्षो > प्रा० रुक्खो, हिं० रूख; ऋतु > प्रा० उडु; मृणाल > प्रा० मुणाल; पृच्छ > हिं० पूछ; वृद्ध > हिं० बुड्ढा इ०। वररुचि के प्राकृत प्रकाश, प्रथम परिच्छेद सूत्र २६ : उदे ऋत्वादिषु में यही रु उच्चारण सूचित हुआ है। ई० १० वीं शती के पूर्व के तेॅलुगु अभिलेखों से पता चलता है कि ऋ का उच्चारण रि जैसा भी होता था। बाद को रु उच्चारण ही स्थिर हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भ्रंश में ह्रस्व ऍं और ओं का प्रयोग मिलता है। उदा०—**प्रेम> पॆम्म, ओष्ठ> ओट्ठ, सौम्य> सोंम्म, यौवन> जो वण**।[१]

खड़ी बोली, व्रज और अवधी आदि में ऐसे शब्द मिलते हैं जिनमें ह्रस्व ऍं तथा ओं का उच्चारण पाया जाता है, जैसे–**ऍक्का, सोंनार, लोंहार, ऍकाऍक, कें‍हि**। परन्तु नागरी वर्णमाला में इन ध्वनियों के लिए विशेष संकेतों का अभाव है।

वैदिक भाषा में **ए** और **ओ** का दीर्घ रूप ही सर्वत्र मिलता है, परन्तु भाष्यकार पतंजलि ने बताया कि सामवेद गायकों की एक शाखा में ह्रस्व ऍं–ओं का प्रयोग होता है, किन्तु वह उच्चारण उसी शाखा तक सीमित है।[२]

ह्रस्व ऍं और ओं द्राविड भाषाओं में मूल ध्वनियाँ कही गई हैं; तेंलुगु की वेंगी-चाळुक्य लिपि अशोकी-ब्राह्मी से विकसित हुई है जिसमें ह्रस्व ऍं तथा ओं के लिए दीर्घ से भिन्न संकेत नहीं थे, अतः १५ वीं शती तक के तेंलुग अभिलेखों में ह्रस्व ऍं ओं के स्थान में दीर्घाक्षर ही लिखे मिलते हैं। उसके बाद ही ह्रस्व ऍं ओं के लिपि संकेत बन गये।

४. ऐ और औ ठेठ हिन्दी के शब्दों में प्रयुक्त होने पर संयुक्त स्वर माने जाते हैं।[३] हिन्दी के शब्दों में इनका उच्चारण तेंलुगु के ऐ, औ से सर्वथा भिन्न होता है। हिन्दी के शब्दों में ऐ–अय् के समान तथा औ-अव् के समान उच्चरित होते हैं। अतः तेंलुगु भाषा-भाषियों को यह विशेष उच्चारण ठीक-ठीक जान लेना आवश्यक है।

---

१. दे०– **एदोतोः क्वचित्स्वरूपेणैव ह्रस्वः** — त्रिविक्रमकृत प्राकृतानुशासन सूत्र ४०।

२. **"छान्दोगानाम् सात्यमुग्रिराणायणीयाः अर्धमेकारम् अर्धमोकारं चाधीयते, नैवहि लोके नान्यस्मिन् वेदे अर्ध एकारो अर्ध ओकारोवास्ति।"**

(दे० पातंजल महाभाष्य, निर्णय सागर प्रेस–१, २२, पंक्ति २१–२४)

३. **उदा० सं० चलति>** प्रा० **चलइ>** हिं० **चलै** (अ + इ)

सं० वसामि> प्रा० **वसउँ>** हिं० **बसौं** (अ + उ)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५. हिन्दी में नासिक्य ध्वनि (अर्धानुस्वार) ँ का विशेष प्रचार है। आधुनिक तेॅलुगु में इसका प्रयोग नहीं होता।[१] जहाँ, वहाँ, कहाँ, लहँगा– आदि शब्दों में, मुँह खुला रख कर, पूर्णानुस्वार का उच्चारण करने पर अर्धानुस्वार की विशेष ध्वनि बराबर निकलती है।

६. तेॅलुगु में पूर्णानुस्वार (सुन्न) ही वर्गान्त अनुनासिकों का काम देता है, जैसे––कंकणमु, चंचलमु, गंट, हिंद्व, चंपा आदि। यद्यपि हिन्दी में क, च, ट, त, प वर्गों के व्यजनों के साथ वर्गान्त अनुनासिक ङ्, ञ, ण, न, म, अब भी प्रचलित हैं फिर भी तेॅलुगु के समान, सरलीकरण की दृष्टि से इन अनुनासिकों के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग बढ़ता जा रहा है।

७. हिन्दी के, विशेष रूप से, मैथिली, बँगला, असामी और उड़िया आदि मागधी भाषाओं के क्षेत्र में 'अ' का उच्चारण 'संवृत' होता है; मुँह पूरा न खोलकर, उसे गोल बनाते हुए उच्चारण करने पर 'ओ' के सदृश जो ध्वनि निकलती है वही 'अ' का संवृत उच्चारण है। तेॅलुगु और दक्षिणी भाषाओं में 'अ' का 'विवृत' उच्चारण ही प्रचलित है; मुँह पूरी तरह से खोल कर 'अ' बोला जाता है। 'अ' का यह संवृत विवृत भेद प्राचीन समय से चला आ रहा है।

८. आधुनिक तेॅलुगु में 'आ' की एक विशेष प्रकार की ध्वनि पाई जाती है। తాటాకు ताटाकु, తిట్టాడు तिट्टाडु, చెప్పాడు चेॅप्पाडु आदि में मध्यगत 'आ' अंग्रेजी के Atóm, Action के (Æ) 'आ' के सदृश उच्चरित होता है। उसके लिए लिपि चिह्न की आवश्यकता है।

९. हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले अरबी, फारसी, तुर्की आदि विदेशी शब्दों में विशेष प्रकार की कंठतालीय ध्वनियाँ प्रयुक्त होती हैं, जिनके लिए अक्षरों के नीचे बिन्दु लिखा जाता है; जैसे––क़लम, ख़ैरियत, ग़म, ग़ैर आदि। ये ध्वनियाँ भारतीय आर्य अथवा द्राविड भाषाओं में नहीं हैं, अतः इनका

---

१. प्राचीन समय की तेॅलुगु के उच्चारण में यह ध्वनि प्रचलित थी आज भी कहीं-कहीं आन्ध्र प्रदेश से दूर जाकर सुदूर दक्षिण में, बसे हुए लोगों में तोँटकूर, తోఁటకూర, वाँडु వాఁడు, कोँति, కోఁతి, तोँक తోఁక जैसे शब्दों में अर्धानुस्वार का उच्चारण सुनाई देता है। शुद्ध साहित्यिक शैली में प्रचलित **अरसुन्न** (अर्धानुस्वार) का लिपि-संकेत इसी नासिक्य ध्वनि को सूचित करता है, जो बोलचाल में लुप्त हो गयी है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सही-सही उच्चारण कष्टसाध्य है। आजकल इन ध्वनियों का परिचय देने के लिए बिन्दु का उपयोग भी कम ही हो चला है।

१०. हिन्दी में, **ज़रूरत, ज़ब्त, फ़ौरन, फ़र्क** आदि विदेशी शब्दों में **ज फ** के नीचे बिन्दु देकर उनकी विशेष ध्वनि सूचित की जाती है। **ज़** अंग्रेजी के Z और फ़ F के समान उच्चरित होता है। ये ध्वनियाँ तेॅलुगु तथा अन्य दक्षिणी भाषाओं में नहीं हैं। इनके सही उच्चारण पर ध्यान देना चाहिए।

११. **दन्त्य च-ज**। हिन्दी में **च, ज** तालव्य व्यंजन हैं। तेॅलुगु में तालव्य उच्चारण के अतिरिक्त बहुत से देशी और तद्भव शब्दों में इनका दन्त्य उच्चारण भी पाया जाता है। जैसे——చాకలి चाकलि (धोबी), చాప **चाप** (चटाई), జోడి **जोडि** (जोड़ा), జంకు **जंकु** (झिझक)। प्रसिद्ध भाषा शास्त्रज्ञ ग्रियर्सन तथा सुनीतिकुमार चटर्जी के मत में ये दोनों ध्वनियाँ, मराठी के साथ-साथ, पूर्वी बंगला, असामी तथा दक्षिणी उड़िया में भी पायी जाती हैं तथा 'त्स' और 'द्ज' के सदृश उच्चरित होती हैं। आ० भा० आ० भाषाओं में इन ध्वनियों का समावेश द्राविड प्रभाव माना जाता है। तेॅलुगु वर्णमाला में इन दन्त्य ध्वनियों के लिए अलग संकेत भी हैं, किन्तु इन दिनों उन संकेतों का उपयोग शिथिल हो चला है। मराठी में भी '**च**' और '**च़**' का भेद लिपि में व्यक्त नहीं होता।

१२ तेॅलुगु में '**थ**' और '**ध**' के उच्चारण में अक्सर शिक्षित लोग भी भेद नहीं बरतते, इस कारण '**रथ** को రథము '**रधमु**', '**रंगनाथ**' को రంగనాధుడు '**रंगनाधुडु**' और '**अर्थ**' को అర్ధము '**अर्धमु**' बोलते और लिखते भी हैं। तेॅलुगु लिपि में इन दोनों अक्षरों का आकार प्रायः एक-सा है; '**थ** और '**ध**' में मध्यस्थ बिंदी (పొట్టలో చుక్క) का ही अन्तर दिखाई देता है। (**थ** = థ **ध** = ధ) कदाचित् इसी कारण से '**थ**' को '**ध**' पढ़ने और लिखने की आदत चल पड़ी होगी।[1]

---

१. तेॅलुगु के प्राचीन व्याकरणों में यह भाषा संस्कृत और प्राकृत से' निकली '**विकृति**' बतलायी गयी है : (जैसे——'आन्ध्र-शब्द चिंतामणि' का यह सूत्र : "ఆద్యప్రకృతిః ప్రకృతిశ్చాద్యే, ఏషా తయోర్భవేద్వికృతిః" "**आद्यः प्रकृतिः प्रकृतिश्चाद्ये, एषा तयोर्भवेद्विकृतिः।**" परन्तु भाषा विज्ञान से यह सिद्ध होता है कि तेॅलुगु अपने असली रूप में मूल-द्राविड के साथ ही पारिवारिक संबंध रखती है। फिर भी प्राकृत से-विशेष रूप से, पैशाची से यह अत्यंत प्रभावित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१३ शकट रेफ:—तेॅलुगु में मूर्धन्य 'र' के अतिरिक्त, एक और प्रकार का 'र' (ఱ) पाया जाता है जिसे 'शकट रेफ' या 'बंडि र' कहते हैं। इसका उच्चारण साधारण 'र' से कुछ अधिक लुंठित और सघोष होता है। मामूली र के स्थान में इस विशेष 'र' का उपयोग करने से अर्थभेद भी होता है। जैसे—

नीरु (= जल) నీరు — नीऱु (= राख) నీఱు
दूरुट (= निंदा करना) దూరుట — दूऱुट (= प्रवेश करना, घुसना) దూఱుట
अर (= आधा) అర — अऱ (= कमरा) అఱ

नागरी में इस ध्वनि के लिये अक्षर नहीं है। अशोकी ब्राह्मी लिपि तथा संस्कृत भाषा में लिखे गये आन्ध्र के कुछ प्राचीन अभिलेखों में कहीं-कहीं ग्रामनाम, क्षेत्र-सीमा (सरहद) आदि परिचय द्योतक शब्दों में यह शकटरेफ दिखाई देता है, परन्तु वर्तमान तेॅलुगु लिपि में प्रचलित आकार में ही यह लिखा हुआ है।

ऋग्वेद के व्याकरण में एक जगह पर कहा गया है कि देश में कहीं-कहीं अतिस्पर्श दोष के कारण 'र' का एक दुष्ट और बर्बर उच्चारण पाया जाता है।[१] विद्वानों का अनुमान है कि दुष्ट उच्चारण वाला वह वैदिक रेफ तथा द्राविड भाषाओं का ऱ (ఱ) (शकटरेफ) संभवतः अभिन्न ध्वनियाँ होंगी।

तेॅलुगु, तमिळ, कन्नड, और मलयाळम आदि द्राविड भाषाओं में इस 'ऱ' का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसके मूल उच्चारण के संबंध में बहुत मतभेद पाया जाता है। तेॅलुगु के वैयाकरणों ने अपने ग्रंथों में रेफ और शकटरेफ के

है। शौरसेनी तथा पैशाची के कुछ शब्दों में 'थ' का 'ध' में बदल जाने का सादृश्य मिलता है। जैसे—प्रथम > पधम, यथा > जधा, कथय > कधेहि, मथुरा > मधुरा इ०।

१. दे०—"अतिस्पर्शो बर्बरताच रेफे।"—इसमें सूचित अतिस्पर्श दोष, वर्त्स्य अर्थात् दंतमूल के अग्रभाग के साथ जिह्वाग्र का होने वाला घर्षण है।

(ऋक् प्रातिशाख्य—मंगलदेव शास्त्री, इण्डियन् प्रेस, इलाहाबाद-पटल १४, सूत्र २६) दे० ఆంధ్రభాషావికాసము-పు. 346.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भेद के विवेचन में कई अध्याय लिखे हैं, साथ ही इन 'र' और 'ऱ' से बनने वाले शब्दों की अलग-अलग सूचियाँ भी तैयार की हैं। फिर भी प्राचीन अभिलेखों में कहीं-कहीं, लिपिकों की अज्ञता के कारण हो सकता है, 'र' के स्थान पर 'ऱ' और 'ऱ' के स्थान पर 'र' का प्रयोग दिखाई देता है। कथित भाषा में भी इनके उच्चारण में परिवर्तन होता आया होगा; फलस्वरूप, वर्तमान समय में इन दोनों के उच्चारण में कोई विशेष अंतर नहीं रहा। अतः लिखने में भी ఱ 'ऱ' की जगह साधारण ర 'र' ही का उपयोग होने लगा है।

तॆलुगु के कुछ मुख्य शब्दों के विकास में इस ऱ (शकटरेफ) का महत्व उल्लेखनीय है। दसवीं शती तक के अभिलेखों में जो शब्द 'न' और 'ऱ' के संयोजन से लिखे गये थे वे ही, कुछ शताब्दियों के पश्चात् के अभिलेखों में 'ण' और 'ड' के संयोजन से लिखे पाये गये हैं। जैसे :

पूर्व रूप	**पश्चात् परिवर्तित रूप**
రేగొన్ఱ **रेगॊन्ऱ**	రేగొణ్డ **रेगॊण्ड**
తాన్ఱికొన్ఱ **तान्ऱिकॊन्ऱ**	తాణ్డికొణ్డ **ताण्डिकॊण्ड**
మూన్ఱు **मून्ऱु**	మూణ్డు **मूण्डु**
పాపంబుగొన్నవాన్ఱు **पापंबु-गॊन्न-वान्ऱु**	పాపంబుగొన్నవాణ్డు **पापंबु-गॊन्न-वाण्डु**

इन शब्दों को देखने से स्पष्ट होता है कि న్ఱ 'न्ऱ' कालांतर में बदल कर ణ్డ 'ण्ड' हो गया। వాఁడు **'वाडु'** వీఁడు **'वीडु'** जैसे अन्यपुरुषवाची सर्वनामों के तथा ఉన్నాఁడు **'उन्नाडु'** పోయినాఁడు **'पोयिनाडु'** जैसे क्रियापदों के अन्त्य **'डु'** परसर्ग का विकास-क्रम हमें ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है।

तमिळ भाषा में इस ఱ 'ऱ' का द्वित्व रूप 'ऱ्ऱ' (ற்ற) आज 'ट्र' उच्चरित होता है। तॆलुगु के प्राचीन अभिलेखों में जहाँ जहाँ 'ऱ्ऱ' (ఱ్ఱ) का उपयोग हुआ है वहाँ-वहाँ तमिळ की भाँति ही इसका उच्चारण 'ट्र' होता रहा होगा। परन्तु कुछ समय पश्चात् जो अभिलेख लिखे गये, उनमें ఱ్ఱ 'ऱ्ऱ' के स्थान पर **'ट्ट'** (ట్ట) का प्रयोग देखा गया। आज भी वे शब्द इसी परिवर्तित **'ट्ट'** के रूप में बोले और लिखे जाते हैं। जैसे:

प्राचीन रूप	**परिवर्तित रूप**
కుఱ్ఱు **कुऱ्ऱु**	కుట్టు **कुट्टु**
కొఱ్ఱంబు **कॊऱ्ऱंबु**	కొట్టంబు **कॊट्टंबु**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
यह परिवर्तन सर्वत्र दिखाई नहीं देता। क्योंकि कुछ शब्दों में आज भी ఱ 'ऱ्र' का अपरिवर्तित उच्चारण ही विद्यमान है। పాంబఱు **पाम्बऱु** और నిడుమఱు **निडमऱु** आदि शब्द उदाहरण के लिए प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

तॆलुगु में 'घोड़ा' के लिए గుఱ్ఱము 'गुऱ्ऱमु' शब्द का प्रयोग होता है। संस्कृत में 'गुऱ्ऱमु' से मिलता जुलता **घोटक** शब्द दिखाई देता है; प्राचीन भारोपीय भाषा में 'घोड़ा' के लिए '**अश्व**' शब्द का प्रयोग होता था। आपस्तंब श्रौतसूत्र में पहली बार '**अश्व**' के लिए '**घोट**' शब्द का प्रयोग हुआ। प्रसिद्ध भाषा-शास्त्री जूल्स ब्लाख का विचार है कि '**घुट्र**' मूलतः द्राविड शब्द है, इसी से संस्कृत के '**घोट**' का उद्भव हुआ होगा।[१] प्राचीन समय में 'गुऱ्ऱमु' का ఱ 'ऱ्र' संभवतः 'ट्र' या 'ट्ट' उच्चरित होता रहा होगा।

१४. मूर्धन्य 'ळ' :—दंत्य ल के अतिरिक्त तॆलुगु में मूर्धन्य ळ भी पाया जाता है। तमिळ आदि अन्य द्राविड भाषाओं में भी यह ध्वनि विद्यमान है। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी तथा उड़िया में ळ का प्रयोग पाया जाता है। हिन्दी की बाँगड़ू आदि कुछ बोलियों में ल के स्थान पर ळ मिलता है। जैसे—**बलद-बळद, बाल-बाळ काल-काळ, चलन-चळन, जंगल-जंगळ**।

वैदिक भाषा में स्वरमध्यगत 'ड' और 'ढ' के, विकल्प से 'ळ' और 'ळ्ह' में बदलने के उदाहरण मिलते हैं। जैसे—**ईडे–ईळे, बोढुम–बोळ्हुम, एकनीडम्–एकनीळम्, देवहेडनम्–देवहेळनम्**। प्राकृत में मूल दन्त्यों तथा मूर्धन्यों के 'ळ' में परिवर्तित होने के दृष्टांत मिलते हैं, उदा०—**स्फटिकम्> फळिहं, गुडं> गुळं, तटाकं> तळाकं, वेणु> वेळु, दोहद> दोहळ, उदार> उळार, उदंक> उळुंक इ०**।

हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत व्याकरण में पैशाची की कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया है। '**ल**' का '**ळ**' में परिवर्तन उनमें से एक है। (दे० '**लोळः**' चतुर्थ पाद, सूत्र ३०८) उदा० **शीलं> शीळं, कुलं> कुळं, जलं> जळं, सलिलं> सळिळं, कमलं> कमळं**।

संस्कृत के कई शब्दों को तेलुगु भाषाभाषी बोलते और लिखते समय '**ल**' के स्थान पर 'ळ' का प्रयोग करते हैं। यथा—

---

१. दे०—भारतीय आर्य भाषा—पृ. ३४८

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्कृत	तेलुगु	हिन्दी
कला	కళ कळ	कला
कलंक	కళంకము कळंकमु	कलंक
गरल	గరళము गरळमु	गरल
गोल	గోళము गोळमु	गोल
तरल	తరళము तरळमु	तरल
ताल	తాళము ताळमु	ताल
दल	దళము दळमु	दल
धवल	ధవళము धवळमु	धवल
महिला	మహిళ महिळ	महिला
मंगल	మంగళము मंगळमु	मंगल
मुरली	మురళి मुरळि	मुरली
वेला	వేళ वेळ	वेला
व्याल	వ్యాళము व्याळमु	व्याल
सरल	సరళము सरळमु	सरल

'मंगळमु' शब्द में 'ळ' की जगह ल के प्रयोग से तेलुगु में अर्थ वदल जाता है। संस्कृत मे मंगल का अर्थ शुभ होता है, पर तेलुगु में उसका अर्थ होता है--चना आदि भूँजने का भाड़। మంగలము.

१५ 'श' संस्कृत में तालव्य ध्वनि है। श और ष तेलुगु की मूल ध्वनियाँ नहीं हैं। तत्सम शब्दों में 'श' का उच्चारण तेलुगु में तालव्य ही होता है, किन्तु हिन्दी तथा मागधी भाषाओं में इसका मूर्धन्य सा उच्चारण प्रचलित है। जैसे--

शान्ति	(हिन्दी के उच्चारण में)	षांति
शरद्	...	षरद्
शंकर	...	षंकर
शर्मा	...	षर्मा
शरीर	...	षरीर

तेलुगु में श का यह मूर्धन्य उच्चारण वेतुका-सा लगता है। हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले फ़ारसी के कुछ विदेशी शब्दों में तालव्य श लिखा जाता है किन्तु उच्चारण मूर्धन्य ष के समान किया जाता है। जैसे--

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शहर	(बोलने में)	षहर
शरबत	...	षरबत
तमाशा	...	तमाषा
शरम	...	षरम
शर्त	...	षर्त

१६. मूर्धन्य व्यंजन :—

ट वर्ग के अक्षर मूर्धन्यों में गिने जाते हैं। भाषा शास्त्रज्ञों के मत में ये वर्ण प्रा० भा० आ० भाषा में द्राविड भाषाओं के सम्पर्क से विकसित हुए हैं। मूल भारोपीय परिवार से उत्पन्न अन्य भाषाओं में मूर्धन्यों का अभाव रहा, स्वीडिश जैसी कुछ भाषाओं में उनका विकास अत्यंत आधुनिक माना जाता है। वैदिक भाषा के ऐसे अधिकांश शब्द जिनमें मूर्धन्य व्यंजनों का प्रयोग है, अन्य भारोपीय भाषाओं में दन्त्य वर्णों से पाये जाते हैं। प्रा० भा० आ० भाषा का सम्पर्क मुण्डा तथा द्राविड भाषाओं के साथ विशेष रूप से हुआ था, किन्तु मुण्डा में मूर्धन्यों का अभाव है, ये ध्वनियाँ केवल द्राविड में मिलती हैं। अतः यह माना जाता है कि ट वर्ग के लिए द्राविड प्रभाव ही मुख्य कारण रहा है। मूर्धन्य वर्णों का विकासक्रम वैदिक भाषा से ले कर, संस्कृत, पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश तक निरंतर चलता रहा। परिणामतः आज हिन्दी तथा अन्य आ० भा० आ० भाषाओं में ट वर्ग वाले शब्द प्रचुरता से मिलते हैं।[1]

१७ हिन्दी में मूर्धन्य ड ढ के अतिरिक्त ड़ और ढ़ का भी प्रयोग मिलता है। कुछ लेखकों ने उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहा है। प्रायः सभी आ० भा० आ० भाषाओं में ये उत्क्षिप्त ध्वनियाँ पायी जाती हैं। हिन्दी के लड़, चढ़, उड़, पड़, पढ़, आदि शब्दों में नीचे बिन्दु दे कर इनकी विशेष ध्वनि सूचित की जाती है, पर ग़ुजराती और मराठी में बिना किसी संकेत के ही, ये अक्षर लिखे जाते हैं। ड़ का उच्चारण नेपाली, बिहारी और पूर्वी हिन्दी में ऱ के समान, पंजाबी और सिंधी में ड्ड के समान तथा सिंहली में ल और ळ के समान होता है। ड़ अल्प प्राण और ढ़ महाप्राण अक्षर हैं।

---

१. हेमचन्द्र कृत देशी नाममाला में ऐसे कई शब्दों की सूची मिलती है जो टवर्ग वाले अक्षरों से शुरु होते हैं। उन पर विचार करते हुए Alfred Master ने यह सिद्ध किया है कि बहुतेरे शब्दों का मूलतस्रोत तेलुगु भाषा है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१८. मूल द्राविड की विशेष ध्वनि ழ

मूल द्राविड में तथा वर्तमान तमिळ और मलयाळम में एक विशेष प्रकार की मूर्धन्य ध्वनि पायी जाती है। प्राचीन ते॑लुगु में, ई१०वीं शती तक तथा प्राचीन कन्नड में १४वीं शती तक यह ध्वनि बराबर प्रचलित रही और फिर लुप्त हो गयी। तमिळ में, इस ध्वनि का अक्षर ழ आकार का होता है। ते॑लुगु तथा कन्नड के प्राचीन अभिलेख जिस लिपि में लिखे गये थे उसे 'वेंगी–चाळुक्य' लिपि कहते हैं; उस लिपि में इस विशेष अक्षर का रूप ఴ यों मिलता है, जो उसी लिपि के शकट रेफ ఱ (ऱ) से मिलता जुलता है।

प्राचीन ते॑लुगु में इस ध्वनि का उच्चारण क्या रहा होगा, इस संबंध में ठीक-ठीक जानकारी नहीं है, पर जिन शब्दों में यह अक्षर पहले लिखा हुआ मिलता है, वे ही शब्द, इस अक्षर का प्रचार लुप्त हो जाने के बाद कहीं ड कहीं ळ और कहीं ऱ से लिखे पाये जाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह मूल द्राविड वर्ण ते॑लुगु में, ड, ळ और ऱ में परिवर्तित होते हुए अपनी मूल ध्वनि खो बैठा है। आधुनिक कन्नड में इसका परिवर्तन ळ में हुआ। साधारणतया यह माना जाता है कि वर्तमान तमिळ और मलयाळम में यह ध्वनि अपने मूल रूप में सुरक्षित है; इन दोनों भाषाओं में इसका उच्चारण ळ्ह के समान होता है। कुछ लेखक नागरी में ष़ लिख कर इस ध्वनि को सूचित करने लगे हैं, पर ष़ उसकी यथार्थ ध्वनि से बहुत भिन्न पड़ जाता है। ते॑लुगु के प्राचीन अभिलेखों से थोड़े से शब्द उदाहरण के लिए नीचे दिये जाते हैं जिनमें परिवर्तन का क्रम स्पष्ट लक्षित होता है :

पूर्व-रूप	परवर्ती-रूप	बदली हुई ध्वनि
१. తాఴుతోంట ताऴुतोण्ट	తాడుతోంట ताडुतोण्ट	ड
२. మఴిసి मऴिसि	మడిసి मडिसि	ड
३. చోఴ चोऴ	చోళ चोळ	ळ
४. నోఴమ్బి नोऴम्बि	నోళమ్బి नोळंबि	ळ
५. వ్ఴచ్చినవారు व्ऴच्चिनवारु	వ్ఱచ్చినవారు व्ऱच्चिनवारु	ऱ
६. చెఴిఞ్చిన चेऴिञ्चिन	చెఱించిన चे॑ऱिंचिन	ऱ

वेंगी-चाळुक्य लिपि तथा संस्कृत भाषा में लिखे गये एक प्राचीन अभिलेख से एक वाक्य नीचे उद्धृत किया जाता है जिसमें ये तीनों विशेष

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ध्वनि वाले अक्षर एक साथ अंकित मिलते हैं। अभिलेख ई० सातवीं शती के चाळुक्य विक्रमादित्य के राजत्व काल में लिखा हुआ माना जाता है :—

"...श्री मेघाचार्याय स्वकीय गुरवे कोॅఴचुंकोॅन्ऱ् ग्रामस्योत्तर पार्श्वे एळसत्ति-र्नाम ग्राम: दत्तं।"[1] इस अभिलेख में अंकित ఴ का अस्तित्व क्रमश: मिटता गया; ఴ (ऱ्) तथा ळ की आकृतियाँ जो स्थिर हुई आज भी विद्यमान हैं। इन तीनों ध्वनियों के विषय में कन्नड के प्राचीन वैयाकरण नागवर्मा ने अपने ग्रंथ में लिखा है कि तालु और जिह्वा में होने वाले स्पर्शभेद के कारण ल, र, और ड, ही क्रमश: ळ, ऱ् और ఴ बन जाते हैं।[2]

इस विवेचन से लगता है कि ईषत् स्पृष्ट ड से उद्भूत ळ, प्रातिशाख्य में वर्णित अतिस्पृष्ट र तथा आ० भा० आ० भाषाओं में प्रचलित उत्क्षिप्त ड़ ये सभी परस्पर संबंधित हैं; इसीलिए दोनों परिवारों की भाषाओं में इन ध्वनियों का एक दूसरे में परिवर्तन पाया जाता है।

१९. तेॅलुगु में स्वारांतता :

तेॅलुगु में प्राय: सभी शब्द इकारांत अथवा उकारांत होते हैं। केवल कविता में छन्द के कारण अथवा ह्रस्वीकृत परसर्गों के कारण से न् कारांत शब्द प्रयुक्त होते हैं। समस्त धातुएँ उकारांत हैं, जैसे—తిను तिनु (खा) చూచు चू.चु. (देख), ఉండు उंडु (रह), చేయు चेयु (कर), చెప్పు चेॅप्पु (कह) వచ్చు वच्चु. (आ)। अधिकाश संज्ञाएँ भी उकारांत हैं; जैसे ఆవు आवु (गाय), గుఱ్ఱము गुऱ्ऱमु (घोड़ा), ఇల్లు इल्लु (घर), చెట్టు चेॅट्टु (पेड़) इ० तेॅलुगु के वैयाकरणों के विचार में यह उ पदांत में होने वाला आदेश मात्र है' जो संधि में अथवा परसर्गों के योजन में लुप्त भी हो जाता है। शब्दों के अन्त में, आने वाला यह उ, जो कहीं कहीं इ भी बनता है, मूल द्राविड संस्कार का परिणाम

---

१. "...శ్రీమేఘాచార్యాయ స్వకీయగురవే కొఴచుంకొన్ఱ గ్రామస్యోత్తర పార్శ్వే ఏళసత్తిన్నామగ్రామః దత్తం," दे० "भाषा चारित्रिक व्यासमुलु" : कोराड रामकृष्णय्य। 'భాషాచారిత్రిక వ్యాసములు' — కోరాడరామకృష్ణయ్య పు. 71.

२. " "లరడా ఏవ ళఱఴాః శ్రయన్నాశ్రయాత్." लरडा एव ळरఴाः प्रयत्नाश्रयात्।" (कर्णाट भाषा भूषणम्–संज्ञा–१०)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माना जाता है।[१] मूल द्राविड के नामद्योतक तथा क्रियाद्योतक हलंत शब्द भी, तेॅलुगु की स्वरांत–प्रकृति के अनुकूल इकारांत अथवा उकारांत में बदल गये है। उदा०—

मूल शब्द	तेॅलुगु में परिवर्तित रूप
కణ్ कण्	కన్ను कन्नु (आँख)
కాల్ काल्	కాలు कालु (पैर)
మిన్ मिन्	మిన్ను मिन्नु (आकाश)
అవన్ अवन्	అవండు> వాండు> వాడు
	अवण्डु> वांडु> वाडु (वह)
అద్ अद्	అది अदि (वह नपुं. लि.)
తిన్ तिन्	తిను तिनु (खा)
చెయ్ चेॅय्	చేయు चेयु (कर)

संस्कृत के हलंत शब्द भी तेॅलुगु में उकारांत बन जाते हैं। जैसे––

संस्कृत	तेॅलुगु
त्वक्	త్వక్కు- त्वक्कु
परिषत्	పరిషత్తు परिषत्तु
सम्राट्	సమ్రాట్టు सम्राट्टु
शिरस्	శిరస్సు शिरस्सु
तेजस्	తేజస్సు तेजस्सु
भगवान्	భగవానుడు भगवानुडु
उदकम्	ఉదకము उदकमु
ज्ञानम्	జ్ఞానము ज्ञानमु

इसी प्रकार विदेशी हलंत शब्द भी तेॅलुगु में स्वरांत बनते हैं: उदा०

---

१. तमिळ के सर्वप्रथम व्याकरश తొల్కాప్పియం 'तोॅल्काप्पियं' में, इस उकार को కుట్రియల్ ఉగరం 'कुट्रियल् उगरं' कहा गया है जो सभी शब्दों के अंत में आता है। इसका उच्चारण अर्धमात्रिक होता है। अपभ्रंश में भी पदांत में लघु उकार का नियम पाया जाता है: "पदांते उं, हुं, हिं हंकाराणाम्।" (प्राकृत व्याकरण–चतुर्थ पाद-सू ४११)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साहब	సాయిబు सायिबु
ख़बर	కబురు कबुरु
सवाल	సవాలు सवालु
तहसील	తాసీలు तासीलु
नंबर	నెంబరు नॆम्बरु
स्कूल	స్కూలు स्कूलु
रोड़	రోడ్డు रोड्डु
स्टेषन्	స్టేషను स्टेषनु

२०. तॆलुगु के ठेठ शब्दों में दीर्घ स्वरांत शब्द अपवाद के स्वरूप मिलते हैं। अपनी इस प्रकृति के अनुसार तॆलुगु भाषा, दूसरी भाषाओं के दीर्घान्त शब्दों को ह्रस्व बनाकर ही अपना लेती है[१]।
जैसे :

पिता	పిత पित	पक्षी	పక్షి पक्षि
दाता	దాత दात	विद्यार्थी	విద్యార్థి विद्यार्थि
कमला	కమల कमल	दया	దయ दय
गौरी	గౌరి गौरि	खिड़की	కిటికి किटिकि

अपभ्रंश में भी स्त्रीलिंगवाची आकारांत शब्द अकारांत बनते हैं। अपभ्रंश के विशेषज्ञों का कहना है कि अंत्य दीर्घ स्वर का ह्रस्वीकरण इस भाषा की मुख्य विशेषता है।

२१. खड़ी बोली हलंत भाषा है :

मूल शब्दों के व्यंजनों का लोप होना प्राकृतों की सामान्य प्रवृत्ति थी; लुप्त व्यंजनों के स्थान में केवल स्वर शेष रह गये। शौरसेनी प्राकृत अपनी मिठास और लालित्य के लिए मध्ययुगों के भारतीय साहित्य में प्रसिद्ध थी। अपभ्रंश भी जो हिन्दी तथा अन्य आ० भा० आ० भाषाओं की पूर्ववर्ती भाषा है 'उकार-बहुला' है।[२] व्रज, अवधी आदि बोलियों में अकारांत शब्दों को उकारांत

---

१. दे० 'దీర్ఘాణాంహ్రస్వస్స్యాత్.' "दीर्घाणाम् ह्रस्वस्यात्"–(आन्ध्र शब्द चिंतामणि–अजंत परिच्छेद् सूत्र ४७.) ఆంధ్రశబ్దచింతామణి, అజంతపరిచ్ఛేదము సూ. 47

२. दे० "हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग।" पृ. ३५९, ४२६

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उच्चरित करने की प्रवृत्ति आज भी विद्यमान है, जैसे–**घर-घरु, चल-चलु, मन-मनु, कह-कहु** । इन बोलियों की कविता में शब्द का अंतिम स्वर सुरक्षित रहता है। इसके विपरीत खड़ी बोली के अधिकांश शब्द व्यंजनांत बोले जाते हैं। घर, मकान, किवाड़, ज़मीन, राम, भीम– जैसे अकारांत शब्द व्यंजनांत ही बोले जाते हैं। इन शब्दों का अंत्य अकार उच्चरित नहीं होता। परंतु तेॅलुगु में शब्दांत 'अ' पूर्णतया उच्चरित होता है। इस कारण से ध्वनिमापन में तेॅलुगु शब्दों के आदि और मध्य अ की अपेक्षा अंत्य अ कुछ लंबा ही दिखाई देता है। अतः हिन्दी बोलनेवाले కడప कडप, పేట पेट, అయ్య अय्य जैसे तेॅलुगु शब्दों को-कडपा-पेटा, अय्या-बना कर बोलते और लिखते हैं। इसके अतिरिक्त, लड़का, खिड़की, धड़कन, लगभग, हर तरह-आदि शब्दों के मध्यस्थित अक्षरों से भी 'अ' का लोप हो जाता है।

खड़ी बोली के इस हलंत उच्चारण का एक कारण यह मालूम होता है कि अपभ्रंश दशा के बाद, पदांत वर्णों से तथा, मध्यस्थ वर्णों से भी, स्वराघात (Accent) के हटने की प्रवृत्ति बढ़ गयी, जिससे स्वरों का क्रमशः लोप होकर व्यंजन मात्र उच्चारण में रह गये। परंतु खड़ी बोली के क्षेत्र के बाहर, जहाँ बोलियों का प्रचार है, वहाँ पर यह हलंत प्रवृत्ति कम ही दिखायी देती है। खड़ी बोली का निकट संपर्क, उसके विकास और व्याप्ति के समय में अरबी फ़ारसी और तुर्की बोलने वाले विदेशियों और उनकी लिपि के साथ हो गया है। फ़ारसी लिपि में ह्रस्व अकार पढ़ा नहीं जा सकता, उच्चारण में उसका लोप हो जाता है, विशेष रूप से पदान्त ह्रस्व अकार का। इस विदेशी प्रभाव के कारण खड़ीबोली क्रमशः हलंत बन गयी होगी।

२२. लिपि :

देवनागरी के समान ही तेॅलुगु लिपि भी पूर्ण और विकसित है। प्राचीन अभिलेखों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि अशोक के समय की गुहा-लिपि से तेॅलुगु कन्नड की वेंगी-चाळुक्य लिपि का विकास हुआ है। जहाँ तक ध्वनियों की व्यंजकता का संबंध है, दोनों लिपियाँ वैज्ञानिक हैं। संयुक्ताक्षर बनाने में तेॅलुगु की अपेक्षा नागरी अधिक निर्दुष्ट है। उदा० : **क्व ज्य, स्म**, में क, ज, स आधे ही उच्चरित होते हैं तथा **व, य, म** पूर्ण। नागरी में इन संयुक्ताक्षरों को लिखने का क्रम भी यही है, अर्थात् जो वर्ण आधा (स्वर रहित) उच्चरित होता है वह आधा ही लिखा जाता है और जो पूरा उच्चरित होता है वह पूरा लिखा जाता है। परंतु तेॅलुगु की लिखावट में यह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बात नहीं है। ಕ್ಕ, ಜ್ಜ, ಸ್ಥ इसमें स्वरहीन क, ज, स पूरे लिखे जाते हैं, और स्वरयुक्त व, थ, म आधे। कहीं-कहीं तो ये स्वरयुक्त वर्ण संकेत रूप में ही दिखाई देते हैं। नागरी के क्र, ट्र, ज्ञ, द्व, द्ध, ह्र, ह्व, आदि संयुक्ताक्षरों में वही उपर्युक्त दोष पाया जाता है जो तेलुगु लिपि में है। छपाई, और टाइप आदि की असुविधाएँ दोनों लिपियों में समान रूप से पायी पाती हैं।

२३, नागरी वर्णमाला में ह्रस्व ಎ ऍ तथा ಒ ऑ के लिए, और बारह खड़ी में इनकी मात्राओं के लिए संकेत बनाने की अत्यंत आवश्यकता है। साथ ही द्राविड भाषाओं में पायी जाने वाली विशेष ध्वनियों के लिए भी, अक्षर विधान नागरी लिपि में वांछनीय है।

२४. हिन्दी की वर्तमान लेखन- पद्धति में सुधार आवश्यक प्रतीत होता है। जैसा बोला जाता है वैसा लिखा जाना, और जैसा लिखा जाता है वैसा बोल सकना वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है। आज शब्दों के मध्य और अंत में कुछ वर्ण स्वर रहित बोले जाते हैं, किन्तु उन्हें हलंत लिखने की पद्धति नहीं है। जैसे, धड़कन में दूसरा और चौथा वर्ण बोलते समय हलंत हैं, किन्तु लिखते समय इन्हें पूर्ण (अकार के साथ) लिखा जाता है।

२५. हिन्दी की लिखावट में इस समय नासिक्य-अर्धानुस्वार (ँ) और पूर्णानुस्वार (ं) के संकेतों में गड़बड़ी पड़ गयी है। वहाँ, जहाँ, कहाँ आदि शब्दों में नासिक्य ध्वनि सूचित करने के लिए चन्द्रबिन्दु का उपयोग होता है। बिंदी पूर्णानुस्वार का संकेत है। अतः वहाँ, जहाँ, कहाँ, हूँ--आदि को बिन्दी के साथ लिखना ठीक नहीं हो सकता। संभवतः मुद्रणालय की सुविधा को दृष्टि में रख कर, कहाँ, जहाँ, हूँ आदि शब्द 'कहां', 'जहां' 'हूं' लिखे जाने लगे हैं। उसी प्रकार–हैं, नहीं, में, मैं, उन्हें, उन्होंने--इन शब्दों को बिन्दी के साथ लिखना वैज्ञानिक नहीं है। क्योंकि उनमें नासिक्य ध्वनि का संकेत चाहिए न कि पूर्णानुस्वार का। हैँ, नहीँ, मेँ, मैँ, उन्हेँ–लिखना ठीक होगा।

हिन्दी भाषा के क्षेत्र से दूर रहने वाले लोग बोलचाल की भाषा से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित नहीं कर सकते, पुस्तकों की सहायता से वे लोग हिन्दी सीखते हैं। इस कारण, मैं का मैम्, है का हैम्, में का मेन्, उन्होंने का उन्होम्ने–ऐसा विकृत उच्चारण यदाकदा सुनाई देता है। अतः जहाँ तक संभव हो छपाई में उचित संकेतों का प्रयोग करना आवश्यक है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२ शब्द-विचार

२६. उत्पत्ति-मूलक वर्गीकरण :

खड़ी बोली हिन्दी के शब्द-भण्डार को व्युत्पत्ति की दृष्टि से **तत्सम, तद्भव, देशी** और **विदेशी** नामक चार वर्गों में बाँटा जा सकता है। प्राचीन भारतीय आर्य भाषा अर्थात् संस्कृत के वे शब्द तत्सम कहलाते हैं जो बिना किसी आंतरिक परिवर्तन के हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। तद्भव वे शब्द हैं जो प्राकृत तथा अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी को मिले हैं और जिनमें ध्वनि संबंधी अनेक परिवर्तन हो चुके हैं। जिन शब्दों का सम्बन्ध संस्कृत से अथवा किसी विदेशी भाषा से स्थापित नहीं होता, पर हिन्दी में प्रचलित हो गये हैं, वे देशी अथवा देशज शब्द कहलाते हैं। विदेशी शब्द, अरबी, फ़ारसी, तुर्की, तातारी, अर्मीनी, पुर्तगाली, अंग्रेजी, फ्रांसीसी आदि बाहर की भाषाओं से लिए हुए हैं। वर्तमान हिन्दी, उपभाषा की अवस्था पार कर, परिनिष्ठित साहित्यिक माध्यम के रूप में विकसित हो रही है। इसमें तत्सम शब्दों की संख्या नित्यप्रति बढ़ती जा रही है। १९ वीं शती के पहले तक हिन्दी का साहित्य ब्रज, अवधी तथा राजस्थानी का साहित्य है। ये बोलियाँ संस्कृत के शब्दों को अपने ध्वनि-नियमों के अनुसार बदल कर आत्म-सात कर लेती थीं। परन्तु आधुनिक खड़ी बोली, जिसमें नये युग का भारतीय साहित्य रचा जा रहा है, संस्कृत शब्दों को बिना किसी रूपपरिवर्तन के ग्रहण करती है। भाषा की उपयोगिता तथा अभिव्यंजना-शक्ति के विस्तार के साथ-साथ तत्सम शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग स्वाभाविक ही दिखाई देता है।

तॆलुगु के शब्दों को **तत्सम, तद्भव, देशी** और **ग्राम्य** नामक वर्गों में विभाजित किया गया है। संस्कृत और प्राकृत के शब्द, बिना परिवर्तन के जब प्रयुक्त होते हैं तो तत्सम कहलाते हैं। संस्कृत और प्राकृत के वे शब्द जो तॆलुगु की ध्वनि रीतियों के अनुसार विकृत (परिवर्तित) हो गये हैं, तद्भव कहे जाते हैं। जिन शब्दों का संबंध संस्कृत और प्राकृत से नहीं है, और तॆलुगु देश में प्रचलित हैं अथवा तमिळ, कन्नड आदि अन्य देशी भाषाओं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से ग्रहण किये गये हैं, वे सब देशी शब्द समझे जाते हैं। ग्राम्य शब्द उन्हें कहते हैं जिनका प्रयोग शिष्ट लोग नहीं करते। शिष्ट-व्यवहार से भिन्न प्रयोग ग्रामीण जनता किया करती है। यह चौथा विभाग शब्दों की व्युत्पत्ति की दृष्टि से किया हुआ नहीं है।

हिन्दी तथा तॆलुगु में इन भिन्न वर्गों के शब्दों का अनुपात क्या है, इसका पता निम्नलिखित तालिका से लग सकता है :

भाषा का नाम	तत्सम शब्द प्रतिशत संख्या	तद्भव शब्द प्र. सं.	देशी शब्द प्र. सं.	विदेशी शब्द प्र सं.
हिन्दी (खड़ी बोली)	५०%	२०%	५%	२५%
व्रज-अवधी	५%	८०%	५%	१०%
तॆलुगु (साहित्यिक)	५०%	१५%	३०%	५%
तॆलुगु (बोलचाल की)	३०%	१५%	४५%	१०%

साहित्यिक तॆलुगु तथा बोलचाल की तॆलुगु में विदेशी शब्दों की प्रतिशत संख्या जो दी गयी वह अरबी, फ़ारसी, तुर्की आदि विदेशी भाषाओं के शब्दों से संबंधित है। यह तालिका किसी अनुसंधान पर आधारित नहीं है, लेखक के अनुभव के आधार पर दिया गया अनुमान मात्र है।

२७. हिन्दी में संस्कृत शब्दों का प्रयोग व्यस्त पदों के रूप में होता है; सामासिक रचना बहुत कम होती है, समास लम्बे भी नहीं होते। पर तॆलुगु के साधारण गद्य में भी लम्बे-लम्बे समास देखे जा सकते हैं। साहित्यिक शैली का तो कहना ही क्या, कविता के चरण के चरण एक ही समास में बाँध दिये जाते हैं :[1]

१, उदाहरण के लिए महाकवि पोतनामात्य के 'आंध्र महाभागवत' का एक पद्य नीचे दिया जाता है :

శారదనీరదేందు ఘనసారపటీరమరాళ మల్లికా
హారతుషారఫేనరజతాచల కాశఫణీశకుంద మం,
దార సుధాపయోధి సితతామరసామరవాహినీ శుభా
కారత నొప్పు నిన్ను మదిఁగానఁగ నెన్నఁడుగల్గు భారతీ ॥

शारदनीरदेंदु घनसारपटीरमराळ मल्लिका
हार तुषारफेनरजताचल काशफणीश कुंद मं–
दार सुधापयोधि सिततामरसामरवाहिनी शुभा–
कारत नॊप्पु निन्नु मदिँगानँग नॆन्नँडु गल्गु भारती ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२८. भिन्नार्थक संस्कृत शब्द :

हिन्दी तथा तेॅलुगु में साधारणतया संस्कृत शब्द एक समान अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। परन्तु ऐसे शब्दों की संख्या कुछ कम नहीं है जो प्रयोग-परम्परा के कारण भिन्न अर्थों में रूढ़ हो गये हैं।[1] उदाहरण के लिए इस प्रकार के थोड़े से शब्द यहाँ दिये जा रहे हैं :

संस्कृत शब्द	हिन्दी में प्रचलित अर्थ	तेॅलुगु में प्रचलित अर्थ
अवसर	समय, मौका	आवश्यक, आवश्यकता
अभ्यंतर	भीतर	आपत्ति, रोक, मनाही
अपवाद	नियम से छूट	बदनामी, निंदा
आलस्य	सुस्ती	देर, विलंब
आलोचना	विमर्श, टीका टिप्पणी	सोचना, युक्ति
आग्रह	अनुरोध, हठ, तत्परता	क्रोध
उपन्यास	गद्य काव्य, Novel	भाषण, व्याख्यान
उद्योग	प्रयत्न, व्यवसाय	नौकरी
उचित	वराबर, लायक	मुफ्त, निश्शुल्क
कृषि	खेतीबाड़ी	मेहनत, श्रम
चरित्र	शील, स्वभाव, चालचलन	इतिहास
चेष्टा	प्रयत्न	ऊधम, उत्पात
तरुण	युवक, जवान	सुअवसर, मौका
धर्म	मजहब, कर्तव्य	न्याय, दान, विधि

१. संस्कृत शब्दों का यह अर्थ-परिवर्तन केवल तेॅलुगु में नहीं हुआ, वरन् सभी दक्षिणी भाषाओं में हुआ है। विशेष परिचय के लिए द्रष्टव्य है: (i) Semantic Divergencies in Indo-Aryan Loan words in South Dravidian"-Journal of Oriental Research, Madras, Vols 8&9 1934-35

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संस्कृत शब्द	हिन्दी में प्रचलित अर्थ	तेलुगु में प्रचलित अर्थ
नागरिक	चतुर, नगरवासी	सभ्य
नागरिकता	पौरत्व	सभ्यता
निज	अपना	सत्य (निजमु)
परिश्रम	मेहनत	व्यवसाय, धंधा, उद्योग
प्रसंग	संदर्भ	व्याख्यान
प्रपंच	कपट, छल	संसार, दुनिया, विश्व
बाधा	विघ्न, अड़चन	दर्द, कष्ट
भाग्यवान	खुशनसीब	धनवान्
मत	अभिप्राय, Vote	धर्म
मर्यादा	सीमा, प्रतिष्ठा	शिष्टाचार, गौरव
यजमान	यज्ञ अथवा धार्मिक क्रिया करने वाला	मालिक, स्वामी
लांछन	कलंक	उपचार, निशान
लेख	निबंध	पत्र, चिट्ठी
वासना	विषयासक्ति	गंध (खुशबू, बदबू)
विज्ञापन	इश्तिहार Advertisement	प्रार्थना, निवेदन
विचार	ख्याल, भावना	चिंता, दुख
व्यास	वृत्त की मध्य रेखा	निबन्ध
व्याख्यान	भाषण Lecture	टीका, भाष्य
व्यवसाय	परिश्रम, धंधा	खेतीबाड़ी
संसार	दुनिया, लोक	परिवार, गृहस्थी
संगति	साथ, स्नेह, संपर्क	खबर, समाचार, मामला
सभ्य	शिष्ट Civilised	सदस्य, मेंबर
शिक्षा	विद्या	सजा, दण्ड

ऊपर के शब्द साहित्यिक तथा व्यावहारिक दोनों प्रकार की शैलियों से संबंध रखते हैं। विशेष अर्थ देने वाले ऐसे पारिभाषिक शब्द बहुत से हैं जो हिन्दी तथा तेलुगु में भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हो रहे हैं। ऊपर जो शब्द दिये गये हैं उनमें बहुत से केवल तेलुगु में ही नहीं अन्य दक्षिणी भाषाओं में भी उसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं जो ऊपर सूचित हुआ है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२९. तद्भव शब्द :

तेॅलुगु में सैकड़ों तद्भव शब्द पाये जाते हैं। उनमें से कुछ तो साहित्यिक हैं, बोलचाल में उनका प्रयोग बहुत ही कम होता है। अधिकांश तद्भव शब्दों को तेॅलुगु भाषा ने संस्कृत, पाली तथा प्राकृत से ग्रहण किया है।[१] उनमें तेॅलुगु के ध्वनि नियमों के अनुकूल परिवर्तन पाया जाता है। उन शब्दों के जो विभिन्न रूप हमें हिन्दी तथा अन्य आ० भा० आ० भाषाओं में दिखाई दे रहे हैं वे अपभ्रंशों के द्वारा विकसित हुए हैं।

हिन्दी को अधिकांश तद्भव शब्द अपभ्रंश से प्राप्त हुए जब कि तेॅलुगु ने उन्हें सीधे प्राकृत से लिया है, इस कारण तेॅलुगु के रूप पूर्ववर्ती दिखाई देते हैं। उदा०—सं० अग्नि—प्रा० अग्गि—तेॅ० अग्गि—हिं० आग। भाषा शास्त्र की दृष्टि से अग्गि पूर्वरूप है तथा आग उससे सरलीकृत पररूप कहा जा सकता है।

दूसरे प्रकार के तद्भव शब्द कुछ ऐसे मिलते हैं जो तेॅलुगु में तो प्रचलित हैं पर हिन्दी में उनका प्रचलन पाया नहीं जाता। तीसरे प्रकार के तद्भव शब्द हिन्दी तथा तेॅलुगु दोनों में समान रूप से प्रचलित हैं। तेॅलुगु में उन शब्दों का प्रयोग अपेक्षाकृत परवर्ती काल में होने लगा।

आंध्र के शातवाहन तथा इक्ष्वाकु नरेशों ने प्राकृत भाषा को प्रोत्साहन दिया था। उनके समय में बौद्ध धर्म का प्रचार देश भर में हुआ था। बौद्ध धर्म के साथ पाली और प्राकृत का भी प्रचार हुआ। इस प्रान्त में ई. ४०० तक के अभिलेख प्राकृत भाषा में ही लिखे मिलते हैं। राष्ट्रकूट और चाळुक्य राजाओं के समय में जैन धर्म को यहाँ पर प्रश्रय मिला था। यहाँ के कवि

---

१. तेॅलुगु के साथ साथ तमिळ, कन्नड, जैसी अन्य द्राविड भाषाओं में भी संस्कृत, पाली और प्राकृतों से गृहीत शब्द सैकड़ों की संख्या में मिलते हैं। उन के विशेष अध्ययन के लिए द्रष्टव्य है :

(i) "Dravidian Borrowings from Indo-Aryan"—University of California Publications in Linguistics, Vol. 26.

(ii) "Indian Linguistics" Turner Jubilee Volume.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और विद्वानों ने अपभ्रंश में ग्रंथ भी रचे थे। शिक्षितों में प्राकृत काव्यों का पठन-पाठन संस्कृत के साथ साथ १६ वीं शती तक होता रहा। यद्यपि तेॅलुगु भाषा का मूल स्रोत प्राचीन द्राविड है, किन्तु संस्कृत तथा प्राकृत के साथ इस भाषा का घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। इसी कारण से तेॅलुगु के वाङ्मय में ठेठ देशी शब्दों की अपेक्षा तत्सम और तद्भव शब्द अधिक संख्या में प्रयुक्त हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तद्भव शब्द सूची–१

हिन्दी तथा तेँलुगु में प्रयुक्त होने वाले भिन्नरूपी समानार्थक तद्भव:

संस्कृत	पाली या प्राकृत	तेँलुगु	हिन्दी
अग्नि	अग्गि	అగ్గి अग्गि	आग
अक्षर	अक्खर	అక్కరము अक्करमु	अक्खर
अंकुश	—	అంకుసము अंकुसमु	अंकुस
अप्सरा	अच्छरा	అచ్చెర अच्चऱ	अछरा
अपसारित	ओसारिअं	ఒసారా ओँसारा	ओसारा
अमावस्या	अमावस्स	అమవస अमवस	मावस
आक्रोश	—	అక్కసు अक्कसु	अकस
आरात्रिकम्	अरत्तियम्	హారతి हारति	आरति
आश्चर्य	अच्छेर	అచ్చెరువు अच्चेँरुवु	अचरज
इष्टिका	इट्टिअ	ఇటిక इटिक	ईंट
उष्ट्र	ओट्ठ	ఒంటె ओंटेँ	ऊँट
उपाध्याय	उज्झो	ఒజ్జ ओँज्ज	ओझा
कपर्द	कवड्ड	గవ్వ गव्व	कौड़ी
कूष्माण्ड	—	గుమ్మడి गुम्मडि	कुम्हडा
कार्य	कज्जं	కజ్జము कज्जमु	काज
कोष्ठिका	कोँट्ठिअ	కొట్టు कोँट्टु	कोठी
कर्पूर	कप्पूर	కప్పురము कप्पुरमु	कपूर
करेणु	कणेर (विपर्यय से)	గన్నెరు गन्नेरु	कनेर
कांस्यकार	—	కంచరి कंचऱि	कँसेरा
कुम्भकार	कुंभार	కుమ్మరి कुम्मरि	कुम्हार
कोणम्	—	కోన कोँन	कोना
काष्ठ	कट्ठ	కట్టె कट्टेँ	काठ
कुकुर, कुक्कुर	कूकर	కుక్క कुक्क	कूकर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्कृत	पालि या प्राकृत	तॆलुगु	हिन्दी
कुमार	कुमर	కొమరుడు कॊमरुडु	कुँवर
कुब्ज	खुज्ज	గుజ్జు गुज्जु	कूब (ड़)
कूर्चिका	कुच्चिअ	కుంచె कुंचॆ	कूँची
गृह	गेह	గేహము गेहमु	घर
गृध्र	गिद्ध	గద్ద गद्द	गीध
गोपाल	गोआल	గొల్ల गॊल्ल	ग्वाला
गोष्ठ	गोट्ठ	కొట్టము कॊट्टमु	गोठ
गर्दभ	गड्डहो	గాడిద गाडिद	गदहा
ग्रन्थि	गण्ठि	గంటు गंटु	गाँठ
गोनर्द	गोइँड	గోడ गोड	गोंडा (गाँव की हद)
गुण	गुण	గొనము गॊनमु	गुन
घटिका	—	గడియ गडिय	घड़ी
घट्टं	—	గట్టు गट्टु	घाट
घात	घाय	గాయము गायमु	घाव
घास	घासो	కసవు कसवु	घास
चतुर्थी	चउत्थी	చవితి चविति	चौथ
चिक्कणं	—	చిక్కన चिक्कन	चिकना
चूर्णम्	चुण्ण	సున్నము सुन्नमु	चूना
चक्रवाक	चक्कवा	జక్కవ जक्कव	चकवा
चतुष्क	चउक्क	చౌకము चौकमु	चौक
जूट	—	జుట్టు जुट्टु	झोंटा, जूड़ा
ज्योति	--	జోతి जोति	जोत
तृतीया	—	తదియ तदिय	तीज
द्वितीया	दुइया	విదియ विदिय	दूज
दण्ड	तण्ट	తంటా तंटा	टंटा
दैव	दइया	దయ్యము दय्यमु	दैया
द्रोणी	द्रोणि	దొన్నె दॊन्नॆ	दोना
दूर्वा	दुब्बा	దుబ్బ दुब्ब	दूब
दीपिका	दीविअ	దివియ दिविय	दीया

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्कृत	पालि या प्राकृत	तेॅलुगु	हिन्दी
द्यूत	जूद	జూదము ज़ूदमु	जुआ
दृष्टि	दिट्ठि	దిష్టి दिष्टि	दीठ
धात्री	—	దాది दादि	धाय
निश्रेणि	निस्सेनि	నిచ్చెన निच्चेॅन	निसेनी
निद्रा	णिद्दा	నిద్దుర निद्दुर	नींद
निंबुक	निंबुअ	నిమ్మ निम्म	नींबू
पंक्ति	पंति	బంతి बंति	पाँत
पुस्तक	पोॅत्थअं	పొత్తము पोॅत्तमु	पोथी
पक्षी	पंखी	పక్కి पक्कि	पंखी
पूर्णिमा	पुण्णं	పున్నమ पुन्नम	पूनम
पीठिका	—	పీట पीट	पीढ़ा
पृथ्वी	पुढवि	పుడమి पुडमि	भूमि
प्रग्रहं	पग्गहं	పగ్గము पग्गमु	पगहा
पाद	—	పావు पावु	पाव (चौथाई)
पुण्य	—	పున్నెము पुन्नेॅमु	पुन्न
प्रयाण	—	పయనము पयनमु	पयान
प्रथमा	पडिवआ	పాడ్యమి पाड्यमि	पड़वा
पण्यशालिक	पण्णसालिअ	పచారి पचारि	पनसारी
पंक्ति	पांत	బంతి बंति	पाँति
परकीय	पराइअ	పరాయి परायि	पराया
पल्यंकिका	—	పల్లకి पल्लकि	पालकी
पत्रिका	पट्टिआ	పట్టీ पट्टी	पट्टी
भक्ति	—	బగితి वगिति	भक्ति
,,	,,	బత్తి वत्ति	,,
भिक्षा	भिक्कं	బిచ్చము बिच्चमु	भीख
मंच	—	మంచము मंचमु	मंच
मुख	मुह	మొగము मोॅगमु	मुँह
मौक्तिक	मोॅत्तिअ	ముత్తియము मुत्तियमु	मोती

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्कृत	पालि या प्राकृत	तेॅलुगु	हिन्दी
मथित	महिअ	మజ్జిగ मज्जिग	मही, मट्ठा
मृत्तिका	मट्टिअ	మట్టి मट्टि	मट्टी, माटी
मृत्यु	—	మిత్తి मित्ति	मौत
मत्स्य	मच्छ	మచ్చము मच्चमु	मच्छ
मण्डप	—	మండువ मंडुव	मँडवा
मलिनं	मइलं	మైల मैल	मैल
मध्य	माह	మయము मयमु	में
यज्ञोपवीत	जन्नवीदी	జన్నిదము ज़न्निदमु	जनेऊ
याम	—	జాము ज़ामु	जाम
राज्ञी	राजी	రాణి राणि	रानी
रात्रि	रातिरि	రేతిరి, రేయి	रात
राक्षस	रक्खसो	రక్కసుడు	राक्कस
राज	राच	రాచ	राच़
रिक्त	रित्तअ	రిత్త रित्त	रीता
लाक्षा	—	లక్క लक्क	लाख
लक्षण	—	లచ్చనము लच्चनमु	लच्छन
वापि	वावि	బావి बावि	बाय
वेत्र	—	బెత్తము बेॅत्तमु	बेंत
वर्धक	वड्ढअ	వడ్లవాడు बड्ड (ल) वाडु	बढ़ई
विज्ञप्ति	विञ्ञत्ति	విన్నపము विन्नपमु	विनती
वक्र	वंक	వంకర वंकर	बाँका
वैद्य	वेॅज्जो	వెజ్జు वेॅज्जु	बैज
वर्तिका	वत्तिअ	వత్తి वत्ति	बत्ती
व्याख्यानं	वक्खाणं	వక్కాణము वक्काणमु	बखान
व्यथा	—	వెత वेॅत	विथा
व्याघ्र	वग्घ	వేంగి वेंगि	बाघ
शर्करा	सक्खरा	చక్కెర चक्केॅर	शक्कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्कृत	पालि या प्राकृत	तॆलुगु	हिन्दी
शय्या	सॆज्जा	సెజ్జ सॆज्ज	सेज
शून्य	सुण्णो	సున్న सुन्न	सून
शुण्ठि	सुट्ठि	సొంఠి सॊंठि	सोंठ
श्लथिर	सढिल	సదలు सडलु	शिथिल
शकट	छक्कड	కచ్చడము कच्चड़मु (विपर्यय से)	छकड़ा
शृंगार	सिंगारो	సింగారము सिंगारमु	सिंगार
श्रेष्ठि	सॆट्ठि	సెట్టి सॆट्टि	सेठ
शृंखला	—	సంకెల संकॆल	साँकल
श्मशान	मसाण	మసనము मसनमु	मसान
श्मश्रु	मंसू	మీసము मीसमु	मूँछ
सिंह	सिंघ	సింగము सिंगमु	सिंह
सपत्नी	सवत्ती	సవతి सवति	सौत
सर्षप	सरिसव	ఆవ आव	सरसों
संध्या	संज्झा	సంజ संज	साँझ
स्थालिका	थालिया	తళియ तळिय	थाली
स्वामी	सामी	సామి सामि	साइँ
सूचिका	सूई	సూది सूदि	सूई
समुद्र	—	సంద్రము संद्रमु	समुंदर
सुवर्ण	सॊन्नं	సొన్నము सॊन्नमु	सोना
स्कंभ	खंभो	కంబము कंबमु	खंभा
स्थान	—	తావు, తావు ठावु, तावु	ठाँव
स्नेह	णेहो	నెయ్యము नॆय्यमु	नेह
स्फटिक	फटिक	పటిక पटिक	फटिक
स्नान	नहान	తానము तानमु	नहान
स्वर	—	సొరము सॊरमु	सुर
हंस	हंसो	అంచ अंच	हंस
हिंगु	हिंगु	ఇంగువ इंगुव	हींग
हृदय	हिअअ	ఎడద ऍडद	हिय
क्षार	खार	కారము कारमु	खारा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तद्भव शब्द सूची-२

संस्कृत और प्राकृत के शब्द जिन्हें तेॅलुगु ने अपने अनुकूल बदल कर अपना लिया है; हिन्दी में ये शब्द प्रचलित नहीं हैं :

संस्कृत	प्राकृत	तेॅलुगु	
अटवी	—	అడవి	अडवि
अंगार	इंगालो	ఇంగిలము	इंगिलमु
अर्पण	—	అప్పనము	अप्पनमु (भेंट चढ़ाव)
आज्ञप्ति	आणत्ति	ఆనతి, ఆనతిచ్చు	आनति, आनतिच्चु. (क्रिया)
आकाश	आकस	ఆకసము	आकसमु
आलस्य	आलस्स	ఆలసుడు	आलसुडु
आज्ञा	आण	ఆన	आन
आर्य	अज्ज	అయ్య	अय्य
ईर्ष्या	—	ఈసు	ईसु
ऊष्म	उम्ह	ఉమ్మ	उम्म
ऋक्ष	—	రిక్క	रिक्क (नक्षत्र)
एकान्त	—	ఏకతము	एकतमु (रहस्य स्थान)
		ఏకతముఆడు	एकतमु आडु (मंत्रणा करना)
कपिला	कविल	కవిల	कविल
कवित्व	कैता	కైత	कैत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्कृत	प्राकृत	तॆलुगु	
कर्तरी	कत्तरी	కత్తెర	कत्तॆर
		కత్తిరించు	कत्तिरिंचु (करतना)
काव्यं	कव्वं	కబ్బము	कब्बमु (छंद, पद्य)
कथा	—	కత	कत
कन्या	—	కన్నె	कन्नॆ
कर्मकार	कम्मार	కమ్మరి	कम्मरि (लुहार)
कुत्सित	—	కుచ్చితుడు	कुच्चितुडु (नीच)
गौरव	गारव	గారవము	गारवमु
		గారవించు	गारविंचु (गौरव देना)
गर्व	—	గరువము	गरुवमु
घंटा	—	గంట	गंट
चतुरंग	—	చదరంగము	चदरंगमु
चेटिका	—	చేడియ	चेडिय
चिह्न	चिण्ह	చిన్నె	चिन्नॆ
छिद्रित	—	చిల్లి	चिल्लि
दीप	दीव	దివ్వె	दिव्वॆ
दिशा	दिसा	దెస	दॆस
दोष	—	దోసము	दोसमु
दृढ़	—	దిటము, దిట్టము	दिटमु, दिट्टमु
द्रव्य	—	డబ్బు	डब्बु
द्रौपदि	—	ద్రోవది	द्रोवदि
द्वीप	—	దీవి	दीवि
नित्य	णिच्च	నిచ్చ	निच्च (सदा)
निशा	णिसि	నిసి	निसि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्कृत	प्राकृत		तेलुग
निश्चय	—	నిచ్చేయము	निच्चयमु
पूग	पूग	పోక	पोक
प्रच्छद	पच्छड	పచ్చడము	पच्चड़मु (दुपट्टा)
पृथ्वी	पुढवी	పుడమి	पुडमि
पायस	—	పాసెము	पासॆमु
प्रश्न	पण्हं	పన్నం	पन्नं
प्रौढ	—	ప్రోడ	प्रोड
बृहस्पति (वार)	—	బేస్త వారము	बेस्त (वारमु)
बीभत्स	—	విడ్డచ్చేము	विव्वच्चमु
भक्ति	भत्ति	బత్తి	बत्ति
भाषा	—	బాస	बास
भार	भारो	బరువు	बरुवु
भेद्य	—	బెజ్జము	बॆज्ज़मु
भोजनं	भोयनं	బోనము	बोनमु
भट	—	బంటు	बंटु
मुग्धा	मुद्दो	ముగుద	मुगुद
,,		ముద్దరాలు	मुद्दरालु (मुग्धा स्त्री)
मल्लिका	—	మల్లియ	मल्लिय
मूक	मूगो	మూగ	मूग
मत्सर	मच्छर	మచ్చరము	मच्चरसु
मोष	—	మోసము	मोसमु (धोखा)
मृग	—	మెకము	मॆकमु (वन्य मृग)
यज्ञ	जण्णो	జన్నము	जन्नमु
यात्रा	—	జాతర	ज़ातर (देवता संबंधी मेला)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्कृत	प्राकृत	तेॅलुगु	
युगादि	—	ఉగాది	उगादि
योद्धा	—	జోదు	जोदु
युवती	—	ఉవిద	उविद
रामा	लामा	లేమ	लेम
रथ्या	रच्छा	రచ్చ	रच्च
रथ	—	అరదము	अरदमु
राक्षस	—	రక్కసుడు	रक्कसुडु
राजहंस	—	రాయంచ	रायंच
रम्या	रवण्णा	రవణము	रवणमु
		రవణించు	रवणिंचु (सुन्दर लगना)
राजा	राया	రాయడు	रायडु
		రాయలు	रायलु (आदर सूचक व. व.)
लग्न	लग्ग	లగ్గము	लग्गमु (शुभ मुहूर्त)
लांगल	णांगल	నాగలి	नागलि
लक्ष्मी	लच्छी	లచ్చి	लच्चि
वर्तुल	—	వట్రువ	वट्रुव
वृद्धि	वड्ढि	వడ్డి	वड्डि
विष्णु	विण्हु	వెన్నుడు	वेॅन्नुडु
विज्ञानं	विञ्ञाणं	విన్నాణము	विन्नाणमु (चातुर्य)
वर्ण	वण्णो	వన్నె	वन्नेॅ (रंग, सोने की शुद्धता, सौंदर्य)
		వన్నెకాడు	वन्नेॅकाडु (सुन्दर पुरुष)
		వన్నెలాడి	वन्नेॅलाडि (सौंदर्यवती)
विद्या	—	విద్దె, విద్దియ	विद्देॅ, विद्दिय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्कृत	प्राकृत	तॆलुगु	
वृषभ	वसभ	బసవ	बसव
वैशाखी	—	వేసంగి	वेसंगि (ग्रीष्मकालीन)
शब्द	सद्दो	సద్దు	सद्दु (आवाज़)
शुक्र	सुक्क	చుక్క	चुक्क (तारा)
शुद्धि	—	సుద్ది	सुद्दि
शंख	—	సంకు	संकु
श्री	सिरी	సిరి	सिरि (लक्ष्मी, दौलत)
शिखा	—	సిగ	सिग (बालों की चुटिया)
शुल्क	सुंको	సుంకము	सुंकमु
सौभाग्य	सोभग्ग	సొబగు	सॊबगु
स्थिर	—	తిరము	तिरमु
संतान	संतान	సంతు	संतु
संतोष	—	సంతసము	संतसमु
सत्व	—	సత్తువ	सत्तुव
संज्ञा	सञ्ञा	సన్న	सन्न (इशारा)
संभ्रम	—	సంబరము	संबरमु (उतावलापन)
संदेह	—	సందియము	संदियमु
स्थानपति	—	తానపతి	तानपति
स्निग्ध	णिद्ध	నిద్దము	निद्दमु
स्थूल	—	తోరము	तोरमु
सख्य	सक्का	సెక్కము	सॆक्कमु
स्नान	—	తానము	तानमु
क्षेम	—	సేమము	सेममु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तद्भव शब्द-सूची–३

ऐसे शब्द जो हिन्दी तथा तॆलुगु दोनों भाषाओं में एक ही रूप और प्राय: एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। तॆलुगु में इन का प्रचलन पूर्वोक्त शब्दों की अपेक्षा आधुनिक माना जा सकता है।

हिन्दी		तॆलुगु
अगरु	అగరు	अगरु
अगाडी	అగాడి	अगाड़ि (घोड़े की गर्दन या पाँवों में बाँधने की रस्सी)
अच्छ	అచ్ఛము	अच्छमु
अटकाना	అటకాయించు	अटकायिंचु
अडंगा	అడ్డంకి	अड्डंकि
अंगी, अंगिया	అంగి	अंगि
अंगुल	అంగుళము	अंगुळमु
अंगरखा	అంగరఖా	अंगरखा
अंबारी	అంబారి	अंबारि
आसरा	ఆసరా	आसरा
आंगन	అంగణము	अंगणमु
आड़ा	అడ్డము	अड्डमु
आड़े पड़ना	అడ్డముపడు	अड्डमु पडु
आढ़त	అడితి	अडिति
कटारी	కటారి	कटारि
कंठी	కంటె	कंटॆ
कंकड़	కంకర	कंकर
काँवरी	కావడి	कावडि
कुप्पी	కుప్పె	कुप्पॆ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी	तॆलुगु	
कुत्सितं	కుచ్చితము	कुच्चितमु
खटिक	కటిక	कटिक
खिड़की	కిటికి	किटिकि
खोंपा	కొప్పు	कोॅप्पु
गज	గజము	गजमु (नापने का परिमाण)
गमछा	గావంచె	गावंच़ (तौलिया)
गुटकना	గుటక్కుమను,	गुटक्कुमनु
	గుటకవేయు	गुटकवेयु
गोली	గోలి	गोलि
गंगाल	గంగాళము	गंगाळमु (बड़ा जलपात्र)
गोट	గోటు	गोटु (वस्त्रों का किनारा)
गोंद	గోందు	गोंदु
घड़ियाल	గడియారము	गड़ियारमु
घूँट	గుటక	गुटक
जत्था	జట్టు	ज़ट्टु
जवान	జవాను	जवानु (सिपाही)
जतन	జతనము	जतनमु
जोड़ा	జోడు	ज़ोडु
जोटि (ड़ी)	జోటి	ज़ोटि
जोड़ना	జోడించు	ज़ोडिंचु.
जोहार	జోహారు	जोहारु
झगड़ा	జగడము	जगडमु
झंडा	జెండా	जॅंडा
टोपी	టోపి	टोपि
ठिंगना	ఠింగణ	ठिंगण
डंठल	దంటు	दंटु
डोली	డోలి	डोलि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी	तेॅलुगु	
डेरा	డేరా	डेरा
डब्बा, डब्बी	డబ్బా, డబ్బి	डब्बा, डब्बि
डोंगी	డుంగి	डुंगि, डिंगि (छोटी नाव)
ढिढ़ोरा	దండోరా	दंडोरा
ढोल	డోలు	डोलु
डंका	డంకా	डंका
ढक्का	ఢక్క	ढक्क
तगड़ी	తక్కెడ	तक्केॅड (तराजु)
तंबूरा	తంబూర	तंबूर
थान	తాను	तानु (कपड़े का पूरा टुकड़ा)
थापी	తాపి	तापि (गारा पीटने का औज़ार)
दीवट	దివిటి	दिविटि
देवल	దేవళము	देवळमु
दुपट्टा	దుప్పటి	दुप्पटि
धोती	ధోతి	धोति
नाड़ा	నాడ	नाड
पाड़ा	పడ్డ	पड्ड (भैंस का बच्चा)
पट, पाट	పట్టు	पट्टु
पागा	పాగ	पाग (पगड़ी)
पोतड़ी	పొత్తిడీ	पोॅत्तिडि
पुजारी	పూజారి	पूजारि
पेटी	పెట్టె	पेॅट्टेॅ
पल्टी मारना	పల్టీకొట్టు	पल्टी कोॅट्टु
पोटली	పొట్లము	पोॅट्लमु
बँटवारा	బట్వాడ	बट्वाड
बड़ा	వడ	वड (उड़द या मूँग का भक्ष्य)
बड़ी	వడియము	वडियमु
बस्ती	బస్తి	बस्ति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी	तेॅलुगु	
बाट	బాట	बाट
बित्ता	బెత్త	बेॅत्त
बोहिनी	బోణి	बोणि (दिन की पहली बिक्री)
बजंत्री	బజంత్రీలు	बजंत्रीलु (बाजा बजाने वाले)
बीहड़	బీడు	बीडु (ऊसर)
भाला	బల్లెము	बल्लेॅमु
भत्ता	బత్తా	बत्ता (दैनिक भोजन व्यय)
मेंथी	మెంతి	मेॅंति
मोट	మోట	मोट (पानी खींचने का चमड़े का थैला)
मोट	మూట	मूट (गठरी)
महाउत	మావటి	मावटि
मंदला	మద్దెల	मद्देॅल
रवा	రవ్వ	रव्व
राउत्त	రౌతు, రావుతు	रौतु, रावुतु (घुड़सवार)
लेखा	లెక్క	लेॅक्क
लड्डू	లడ్డు	लड्डु
साहनी	సాహిణి	साहिणि

ऊपर की तीनों सूचियों में सब मिला कर ३२६ शब्द दिये गये हैं। अ सूचियाँ पूर्ण नहीं कही जा सकतीं। तेॅलुगु के लोक-व्यवहार में तथा प्राचीन ग्रंथों में कितने ही तद्भव शब्द भरे हुए हैं जो आ० भा० आ० भाषाओं में मिलते-जुलते रूपों में प्रचलित दिखाई देते हैं।

उपर्युक्त तद्भव शब्दों में अंत्य 'इ' 'उ' तेॅलुगु भाषा की ध्वनि संबंधी विशेषता है, 'डु' महद्वाचक (पुंलिंग) को सूचित करने वाला, 'मु' और 'वु' भाववाचक तथा निर्जीव पदार्थों को व्यक्त करने वाले प्रत्यय हैं। कौनसा शब्द किस प्राकृत से संबंधित है, यह जानने के लिए उसके पूर्व रूप तथा विकृत रूप के अंतर को समझना होगा। विशेषतया, पाली, शौरसेनी, र्धयेमागधी, महाराष्ट्री तथा पैशाची से आये हुए तद्भव शब्द तेॅलुगु में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रचलित होते रहे हैं। सूची ३ की शब्दावली अपेक्षाकृत परवर्ती अपभ्रंश से संबंधित है।

३०. देशी और द्राविड शब्द :

वर्तमान समय की तेॅलुगु, तमिळ, कन्नड, अहैर मलयाळम विकसित प्रमुख द्राविड भाषाएँ हैं जो उत्तर में विन्ध्याचल से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक के विस्तृत प्रदेश में बोली जाती हैं। भाषा विज्ञान के अनुसार ये सभी भाषाएँ आर्येतर परिवार की मूलद्राविड भाषा से विकसित हैं। इन भाषाओं के वर्तमान क्षेत्र से हट कर उत्तर पूर्व में उड़ीसा की महानदी के आस-पास कुई मध्यप्रदेश में गोंडी, कोलामी और भीली, छोटानागपुर में कुरकु अथवा ओॅराओ तथा मालतो भाषाएँ, सिन्ध और बलूचिस्तान में ब्राहुई जो बोली जाती हैं—ये सब इसी द्राविड परिवार से संबंधित भाषाएँ हैं। उपर्युक्त बोलियाँ आर्य परिवार की विकसित भाषाओं से घिरी रह कर भी आज तक अपना द्राविड रूप किसी न किसी हद तक बनाए हुए हैं।

ऐतिहासिक अनुसंधान से पता चलता है कि आर्यों के भारत में आगमन से पूर्व ही उत्तर पश्चिमी भारत तथा सिन्ध का मैदान आर्येतर जातियों से बसा हुआ था। पंजाब के नवागत आर्यों को इन आर्येतरों का सामना करना पड़ा। इस सघर्ष में उन आदिमवासियों का समूल विनाश न होकर, उन का अधिकांश में आर्यपरिवार में सम्मिलित हो जाना अवश्यंभावी था। उस समय के आर्येतर लोगों में द्राविड भाषा-भाषी प्रमुख थे। उन के आपस में सामाजिक धार्मिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान जो हुआ उस का प्रभाव आर्य और द्राविड भाषाओं में भी स्पष्ट लक्षित होता है।

प्रसिद्ध भाषा तत्ववेत्ता जूल्स ब्लाख का मन्तव्य यहाँ उद्धुत किया जाता है—"...द्राविड और मुंडा इन दोनों समुदायों की भाषाओं में, उनके, भारतीय आर्य भाषा के साथ स्थापित संपर्क के प्रमाण मिलते हैं। यह बात इस कारण से भी बतायी जाती है कि आर्यों के आक्रमण से पूर्व ये ही लोग भारत में निवास करते थे। द्राविड लोग सिंधु की निम्न घाटी, गुजरात, और दक्षिण के समुद्री राज्यों में निवास करते थे, और मुंडा लोग गंगा नदी द्वारा सिंचित भूमि भाग में और पंजाब के निम्न हिमालय प्रदेश में निवास करते थे। ये दोनों समुदाय आर्यों के उच्चारण तथा व्याकरण पर अपना प्रभाव छोड़ गये हैं और उनकी शब्दावली समृद्ध कर गये हैं। हम यह कह सकते हैं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कि मुंडा अहैर द्राविड उन लोगों की भाषाएँ रही होंगी जिन्हें आर्य भाषा ग्रहण करनी पड़ी थी।"[१]

३१. द्राविड ध्वनि नियम : (Phonetic Laws)

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के अध्ययन के आधार पर प्रो. टि. बरो आदि विद्वानों ने, द्राविड और अन्य अनार्य भाषाओं के ऐसे कई सौ शब्द चुन कर बताये हैं जिन्हें प्राचीन समय के आर्यों ने अपनी भाषा में ग्रहण कर लिया था।[२] जैसे : अटवी, अणु, अरणि, कटुक, कपि, कंबल, कर्मार, कला, काल, कितब, कुट, कुंड, गण, तिल, नाना, नील. नीर, नीहार, पुष्प, पुष्कर, पूजन, फल, बिल, बीज, मयूर, मीन, मर्कट, रूप, वल्ली, व्रीहि, शव—। द्राविड भाषा-भाषी जनता आर्य संघ में जब घुलमिल गयी तब उसने प्राचीन आर्य भाषा को भी क्रमशः अपना लिया होगा। फलतः द्राविड ध्वनि नियम तथा उच्चारण की रीतियों से प्रभावित हो कर वैदिक भाषा ने कई नयी बातें स्वीकार कर लीं। द्राविड भाषा के जिन ध्वनि नियमों के प्रभाव से, प्रा० भा० आ० भाषा के शब्दों में आभ्यंतरिक परिवर्तन हुए उनके कुछ मुख्य तत्व इस प्रकार सूचीबद्ध किये जा सकते है :

१. द्राविड में श, ष की ऊष्म ध्वनियाँ नहीं हैं, अतः संस्कृत के 'श और 'ष' बदल कर 'स' या 'च' बनते हैं। उदा०—**शाणम् > सानं, पुरुष > पुरिस, शिर > सिर, मोष > मोस** आदि।

२. द्राविड में महाप्राण व्यंजनों का अभाव है, अतः संस्कृत के महाप्राण व्यंजन या तो अल्पप्राण बन जाते हैं अथवा 'ह' में परिवर्तित होते हैं उदा०—**मुख > मुह, मेघ > मेह, शंख > संक, गभीर > गहिर** आदि।

३. शब्दों के मध्य में अघोष व्यंजन अघोष उच्चरित होते हैं, अतः संस्कृत के स्वरमध्यगत, **क, च, ट, त, प** बदल कर क्रमशः **ग, ज, ड, द, ब** बनते हैं। उदा०—**लोक > लोग, मूक > मूग, शुक > सुग, कुटुंब > कुडुंब**।

---

१. दे०— "भारतीय आर्य भाषा" (लाँ आँदो एरियाँ) पृ. ३४४

२. दे०—"Collected Papers on Dravidian Linguistics" By: Prof. T. Burrow, Annamalai University, South India.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४. द्राविड में भिन्न वर्गीय व्यंजनों का संयोग नहीं होता, अतः संस्कृत के शब्दों में स्वरभक्ति आ जाती है। जैसे—**इन्द्र> इन्दर, पृथ्वी> पृथिवी, चैत्य> चेतिय, गर्व> गरुव, शब्द> सबद, माधुर्य> मधुरिय ।**

५. शब्द के मध्य में सवर्गीय द्वित्वाक्षर आ सकता है, अतः संस्कृत के संयुक्त व्यंजन द्वित्व में बदल जाते हैं। जैसे–**वर्तिका> वत्ती, माणिक्य> माणिक्क, चक्रवाक> चक्कवा, राक्षस> रक्कस ।**

६. शब्द के आरंभ में किसी भी प्रकार का संयुक्त व्यंजन नहीं आता[1] अतः संस्कृत के शब्दों में स्वर-भक्ति का प्रयोग होता है। उदा०–**स्नान> सिनान, श्री> सिरि, प्रेत> परेत** आदि ।

उपर्युक्त ध्वनि नियम तमिळ आदि द्राविड भाषाओं में दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपनाते समय लागू होते आज भी पाये जा सकते हैं। उपर्युक्त ध्वनि रीतियों के कारण प्रा० भा० आ० भाषा में, वर्णागम, वर्णलोप, वर्णविपर्यय आदि आभ्यंतरिक परिवर्तन हुए और ऐसे परिवर्तन, पाली तथा प्राकृत दशा में भी होते रहे हैं। फिर वे प्राकृत भाषाएँ बदलती हुई जब अपभ्रंश दशा में, पहुँचीं तब तो द्राविड भाषा का प्रभाव शब्दों (सुप् और तिङ्) की रूप रचना, वाक्य विन्यास आदि अंशों में भी अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगा। हिन्दी तथा तेॅलुगु शब्दों की रूप रचना में साम्य दिखाते समय इस विषय पर प्रकाश डाला जाएगा ।

३२. मध्यकालीन संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंशों के शब्द भंडार में ऐसे सैकड़ों शब्द पाये जाते हैं जो प्रा० भा० भाषा से व्युत्पन्न नहीं हैं। हेमचंद्र जैसे वैयाकरणों ने इन शब्दों को 'देशी' नाम से अभिहित कर उनके कोष तैयार किये हैं। कुछ लेखकों ने बहुत से देशी शब्दों की व्युत्पत्ति घुमा-फिरा कर प्रा० भा० आ० भाषा से लगाई। विद्वानों का विचार है कि बहुत से देशी शब्द संस्कृत का संस्कार पा कर उत्तरकालीन बौद्ध-संस्कृत में प्रयुक्त होने लगे ।

---

१. साहित्यिक द्राविड भाषाओं में से केवल तेलुगु में आदि संयुक्त व्यंजन वाले ठेठ शब्द दिखाई देते हैं। जैसे ప్రాకుడు प्राकुडु, ప్రొద్దు प्रॉद्दु, వ్రేలు व्रेलु, మ్రోగు म्रोगु इ० परन्तु वर्णविपर्यय (Metathesis) के प्रभाव से ये शब्द तेॅलुगु में मूल द्राविड प्रकृति के विरुद्ध बनते गये हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देशी शब्द समूह में, कोल, मुंडा जैसी भिन्न परिवार की अनार्य भाषाओं के भी शब्द सम्मिलित हुए होंगे, किन्तु द्राविड शब्दों की प्रचुरता तो असंदिग्ध है। देशी शब्दों के पूर्ण अध्ययन के बाद ही इस बात का प्रमाण मिल सकेगा।[१]

नीचे कुछ ऐसे देशी कहलाने वाले शब्दों की सूची दी जाती है जो स्पष्टतया तेॅलुगु मे संबंधित हैं :

देशी शब्द		हिन्दी में अर्थ	कोशकार का विवरण
అక్క	अक्क	बड़ी वहिन	अक्का-वृद्ध भगिनी
అత్త	अत्त	फूफी, सास	अत्ता पितृष्वसा, श्वशुर भार्याच
ఇంగలం	इंगलं	आग	इंगालो अग्निः
ఉద్దు	उद्दु	उड़द	उडिदो माष धान्यं
ఊరు	ऊरु	गाँव	ऊरो ग्रामः
ఒడ్డాణం	ओॅड्डाणं	स्त्रियों की सोने चाँदी की कमर पट्टी	ओड्ढणं
కురులు	कुरुलु	घुंघुराले बाल	कुरुलो कुटिल केशः
కల్లు	कल्लु	ताड़ी, मद्य	कल्लो मद्यं
కావి	कावि	गेरुआ	कावि नीलवर्ण
కసువు	कसुवु	कूड़ा, कचरा	कस्सो पंकः
కుండ	कुंड	कूँड़ा, घड़ा	कुंडयं भांडम्
కొంప	कोॅप	छप्पर	तृणादिमयं वृष्टिनिवारणम्
కోట	कोट	कोट, किला	

---

१. देशी शब्दों के परिचय के लिए निम्नलिखित ग्रंथों से बहुत सहायता मिल सकती है :

(i) John Beams : A Comparative Grammar of Modern Indian Languages, Vol. I Introduction.

(ii) Dr. R. Pischel : Comparative Grammar of the Prakrit Languages, Introduction.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देशी शब्द		हिन्दी में अर्थ	कोशकार का विवरण
గడ్డం	गड्डं	दाढ़ी	खड्डं श्मश्रु
చిల్లి	चिल्लि	छेद	चिल्लं छिद्रं
చింత	चिंत	इमली	चिंता आम्लिका
చిచ్చు	चिच्चु	आग	चिच्चु: हुताशन:
జొన్న	जोन्न	ज्वार (धान)	धान्य विशेष:
జోలె	जोलें	झोली	झोलिआ (अपभ्रंश)
చిప్ప	चिप्प	सीप	शुक्ता (सं)
తుంటె	तुंटें		
తొంట	तोंट	कटा हाथ	तुंटो छिन्न कर:
దారం	दारं	धागा	दारो कटिसूत्रं
పసిండి	पसिंडि	सोना	पसिंडी कनकं
పాము	पामु	साँप	पावो सर्प:
పులి	पुलि	बाघ	पुल्ली व्याघ्र:
పల్లె	पल्लें	छोटा गाँव	पल्ली
మామ	माम	मामा	मामो मातुलः
మెడ	में ड	कंठ	में डो कंठ:
ముంగిస	मुंगिस	नेवला	मुंगुसो नकुलं
ముద్దు	मुद्दु	चुम्मा	मुद्दी चुंवितं
మాడిగ	माडिग	दुमंजिल मकान	माडियं गृहं
మొగ్గ	मोंग्ग	कली	मोंग्गरं कुट्मलं
రొట్టె	रोंट्टें	रोटी	रोंट्टं तंडुल पिष्टं
వెల్ల	वेंल्ल	सफ़ेद	वेल्हं धवलं

ऊपर की तद्भव शब्दसूची ३–में कई देशी शब्द मिले हुए हैं, उनके मूल-स्रोत का निश्चय नहीं है। ये हिन्दी तथा तेंलुगु दोनों में प्रचलित हैं।

३३. समान विदेशी शब्द :

चौदहवीं शती के आरंभ में मुसलमान विजेता दक्षिण भारत में आये; उन्होंने दीर्घकाल तक दक्षिण के बहुत बड़े भूभाग पर शासन किया। उन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुसलमानों के शासनकाल में अरबी, फ़ारसी, तुर्की आदि भाषाओं के सैकड़ों शब्द तेॅलुगु भाषा में प्रचलित हुए। केवल बोलचाल में ही नहीं साहित्यिक ग्रंथों में भी वे शब्द बहुत बड़ी संख्या में दिखाई देते हैं। **ज़िला, रकम, रैयत तहसील, कचहरी** जैसे प्रशासकीय शब्दों के अतिरिक्त, ऐसे बहुत से शब्द हैं जिनके पर्यायवाची तेॅलुगु में मुश्किल से मिलते हैं।[१]

नीचे कुछ विदेशी शब्द तेॅलुगु में प्रचलित रूपों के साथ उदाहरणार्थ दिये जा रहे हैं :—

	तेलुगु में प्रचलित रूप	हिन्दी में प्रचलित रूप
త్రాసు	त्रासु	तराज़ू
పరవా	परवा	परवाह
సీసా	सीसा	शीशा
మేకు	मेकु	मेख़
చొక్కా	चोॅक्का	चोगा
గచ్చు	गच्चु.	गच
కుర్చీ	कुर्ची	कुरसी
కబురు	कबुरु	खबर
కాగితము	कागितमु	कागज़
సన్నాయి	सन्नायि	शहनाई
కొరడా	कोॅरडा	कोड़ा
తాయిత్తు	तायित्तु	तावीज
దస్తూరి	दस्तूरि (तेॅलुगु में इसका अर्थ लिखावट है)	दस्तूरी
తగాదా	तगादा (तेॅ = झगड़ा)	तकाजा
రాజీనామా	राजीनामा (तेॅ = इस्तीफ़ा)	राजीनामा

---

१. तेॅलुगु भाषा के विद्वान C. P. Brown (सि. पि. ब्राउन) ने पिछली शताब्दी में तेॅलुगु का एक बृहत् कोष प्रकाशित किया था। उसमें अरबी फ़ारसी के ऐसे हज़ारों शब्द संग्रहीत हुए हैं जो तेॅलुगु में प्रचलित हुए। यह कोष 'साहित्य अकादमी, आन्ध्र प्रदेश', द्वारा अभी हाल में पुनः प्रकाशित हुआ है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

దుకాణము	दुकाणमु	दूकान
ఖరీదు	खरीदु (ते = दाम)	खरीद
తాహతు	ताहतु	ताकत
దస్కతు	दस्कतु	दस्तखत
కచ్చేరి	कच्चेरि	कचहरी
తాసీలు	तासीलु	तहसील
సైతాను	सैतानु	शैतान
పకీరు	पकीरु	फ़कीर
కందకము	कंदकमु	खंदक
సిపాయి	सिपायि	सिपाही
కిరాయి	किरायि	किराया
ఖైదీ	खैदी	कैदी
నగదు	नगदु	नकद
రైతు	रैतु	रय्यत
దినుసు	दिनुसु	जिन्स

३४. संधि

दो शब्दों को मिला कर एक साथ जब उच्चरित किया जाता है, तो उनके बीच के वर्णों में होने वाले परिवर्तन को स्थूल रूप से हम संधि कह सकते हैं। हिन्दी तथा ते॑लुगु में प्रयुक्त होने वाले तत्सम शब्दों में संस्कृत व्याकरण की दीर्घ, गुण, वृद्धि, यणादि, व्यंजन, विसर्ग आदि रीतियों से संधि होती है। ठेठ हिन्दी के शब्दों में संधि नहीं देखी जाती, यद्यपि कथित भाषा में वक्ता के उच्चारण के कारण स्वरों का समीकरण होता है, जैसे— **हम + इस = हमिस, थक + गये = थग्गये**, आदि।

ते॑लुगु में संधि का बड़ा महत्व है। साधारण अशिक्षित लोग भी **'वाडु + ऍक्कड'** को मिला कर स्वाभाविक रूप से **'वाड़ेक्कड'** बोलते हैं। यह उनकी सहज प्रवृत्ति है। शब्द में असंयुक्त स्वरों का होना, तथा दो शब्दों को इस ढंग से बोलना कि प्रथम शब्द का अंतिम स्वर और दूसरे शब्द का प्रथम स्वर अलग-अलग रह जाएँ, ते॑लुगु भाषा की प्रकृति के विरुद्ध है। यह इस भाषा का साधारण लक्षण है। 'स्वर मैत्री' (Euphony) तथा स्वरों की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रक्षा तेलुगु संधि के मुख्य प्रयोजन हैं। चूँकि इस भाषा के प्रायः सभी शब्द स्वरांत हैं इसलिए इस में स्वर संधि की प्रधानता पायी जाती है।

साधारणतया संधि में तीन कार्य होते हैं: (१) प्रथम शब्द के अंतिम स्वर का लोप हो कर उसके स्थान में द्वितीय के प्रथम स्वर का एकादेश होता है, जैसे—**देव + आलय = देवालय**। (२) द्वितीय शब्द का प्रथम स्वर, प्रथम शब्द के अंतिम स्वर में मिल जाता है, जैसे—**तथा + अपि = तथापि**। (३) प्रथम शब्द का अंतिम स्वर तथा द्वितीय शब्द का प्रथम स्वर दोनों नष्ट हो कर एक तीसरे स्वर को जन्म देते हैं, जैसे—**एक + एक = एकैक**। इन तीनों रीतियों में से केवल प्रथम तेॅलुगु में प्रचलित है। साहित्यिक तेॅलुगु में प्रचलित संधि विधान की मुख्य रीतियाँ नीचे सूचित की जाती हैं:

(१) పరరూప సంధి **पररूप-संधि :**

पररूप अर्थात् परस्वरके आदेश को ही तेॅलुगु के व्याकरणों में वास्तविक संधि माना गया है।[1] अर्थात् दूसरे शब्द के स्वर का आदेश प्रथम शब्द के स्वर पर होता है। जैसे—మేన + అత్త = మేనత్త **मेन + अत्त = मेनत्त**; చింత + ఆకు = చింతాకు **चिंत + आकु = चिंताकु**; చూడన్ + ఇమ్ము = చూడనిమ్ము, **चू. डन् + इम्मु = चूडनिम्मु**; పొరుగు + ఊరు = పొరుగూరు **पोॅरुगु + ऊरु = पोॅरुगूरु** इ०। यह स्वरादेश संबंधी नियम व्याकरण में ఉకారసంధి **उकारसंधि**, అత్వసంధి **अत्वसंधि**, ఇత్వసంధి **इत्वसंधि** के नाम से सूचित हुआ हैं।

(२) యడాగమము **यडागमः**

संधि न होने की दशा में दो स्वरों को एक साथ बोलना पड़ता है, ऐसे स्थानों पर उच्चारण में कठिनाई होती है। इस कारण, इ, ई, एँ, ए, ऐ के

---

(१) दे० (अ) "आद्यंतवर्णयोरैक्यं संधिरित्युच्यते बुधैः।
पूर्वस्य पररूपत्वमत्रैव नियतं भवेत्"।
—अथर्वण (संधि परिच्छेद)

(आ) "पूर्व परस्वरंबुलकुं बरस्वरं बेकादेशंबगुट संधि यनंबडुनु।"
—बाल व्याकरण : चिन्नय सूरि।

పూర్వపరస్వరంబులకుం బరస్వరం బేకాదేశంబగుట సంధియనంబడును.
—బాలవ్యాకరణము

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
पहले 'य' तथा उ, ऊ, ओॅ, ओ, औ के पहले 'व' श्रुतियों (Glides) के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

संधि ऐच्छिक होती है, कभी कभी अनर्थकारी भी बन जाती; जैसे—చూచి + ఉండెను चू.चि + उंडॆनु में यदि संधि की जाय तो చూచుండెను चूचुंडॆनु होता है, जिसमें 'चू.चि' असमापिका क्रिया का अर्थ स्पष्ट व्यक्त नहीं होता अतः अर्थ मे गड़बड़ी होती है। इस कारण वहाँ संधि नहीं की जाती। इस प्रकार जहाँ जहाँ संधि नहीं की जाती वहाँ वहाँ 'य' और 'व' श्रुतियों का विधान नियम के रूप में निर्दिष्ट हुआ है। इसे तॆलुगु में యడాగమము यडागममु कहते हैं। उदा० అ + ఇల్లు = అయిల్లు आ + इल्लु = आयिल्लु, చూచి + ఉండెను = చూచి-యుండెను चूचि + उंडॆनु = चूचियुंडेनु, హరి + అతడు = హరియతడు हरि + अतडु = हरियतडु, ఆడ + ఏనుగు = ఆడయేనుగు आड + एनुगु = आडयेनुगु।

'व' श्रुति तॆलुगु में केवल बोलचाल में पायी जाती है, जैसे—ఆవూరు आवूरु, ఇంతవుప్పు इंतवुप्पु, మావోడ मावोड। इन शब्दों में 'व' का आगम तॆलुगु व्याकरण के अनुसार निषिद्ध है। अतः साहित्यिक भाषा में 'व' के स्थान में भी 'य' का ही प्रयोग मिलता है। जैसे—ఆయూరు आयूरु ఇంతయుప్పు इंतयुप्पु, మాయోడ मायोड आदि। परन्तु कन्नड और तमिळ में 'व' का आगम नियमानुकूल होता है।

(३) నుగాగమము नुगागम :

जैसे ऊपर कहा गया हैं, जिन वर्णों में संधि कठिन अथवा अनिष्ट है, वहाँ स्वरों की 'व्यवहिति, (पृथक अस्तित्व–Hiatus) का दोष आ जाता है; इसके निवारण के लिए कुछ शब्दों के अंत में 'न्' का आगम होता है, व्याकरण में इसे 'नुगागम' कहते हैं। यह नकार शब्द का अंग नहीं बनता, केवल संधि के लिए आता है। उदा०—చేయు(న్) + ఆమె = చేయునామె चेयु(न्) + आमॆ = चेयुनामॆ, అను (న్) + ఒక = అనునొక अनु (न्) + ओॅक—अनुनोॅक, నాతో (న్) + ఉన్న = నాతోనున్న नातो (न्) + उन्न = नातोनुन्न।

(४) ద్రుతసంధి द्रुत-संधि :

शब्द के मध्य में प्रयुक्त अघोष क, च, ट, त, प—का सघोष ग, ज, ड, द, ब—में परिवर्तन द्राविड भाषाओं में प्राचीन समय से चला आ रहा है, विशेष रूप से जब वे स्वरों के मध्य में हों अथवा अनुनासिक के परे हों। आज भी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तिमळ में **'पन्तु' 'वन्तु' 'कोंकै', 'उंटु', 'मकन'** आदि शब्द क्रमशः **'पन्दु', 'वन्दु' 'कोंगै', 'उंडु', 'मगन'** बोले जाते है।

तेॅलुगु में इस रीति का प्रचलन **'द्रुत संधि'** के रूप में भी पाया जाता है। सभी नकारांत शब्द **'द्रुत प्रकृतिक'** कहलाते हैं। जैसे–బిడ్డలన్ **बिड्डलन्,** రాముని **रामुनि,** కానన్ **कानन्,** వనమున, **वनमुन** । इन शब्दों के बाद आने वाले क, च, ट, त, प, सघोष बन जाते हैं; पूर्वस्थित न् भी घोष वर्ण है, अतः समीकरण की दृष्टि से वह भी परिवर्तित हो कर अनुस्वार बन जाता है; जैसे :– బిడ్డలన్ + కనెను = బిడ్డలంగనెను **बिड्डलन् + कनेॅनु + बिड्डलंगनेॅनु;** రాముని + చూచి = రామునింజూచి**रामुनि + चूचि = रामुनिंजूचि,** కానన్ + పడియె = కానంబడియె **कानन् + पडियेॅ = कानंबडियेॅ,** పూచెన్ + కమలము = పూచెంగమలము **पूचेॅन् + कमलमु = पूचेॅंगमलमु** ।] इन शब्दों में पाया जाने वाला अनुस्वार, कालांतर में अर्धानुस्वार(नासिक्य) में बदल कर वर्तमान भाषा में लुप्त हो गया। इस समय ये शब्द क्रमशः బిడ్డలగనెను **बिड्डलगनेॅनु,** రామునిజూచి **रामुनिजूचि,** కానబడియె **कानबडियेॅ,** పూచెగమలము **पूचेॅगमलमु** बोले जाते हैं, और साहित्यिक भाषा में अर्धानुस्वार के चिह्न **'अरसुन्न'** के साथ लिखे जाते हैं। नासिक्य ध्वनि के नष्ट होने के बाद రాగలడు **रागलडु,** పోగూడదు **पोगूडदु,** చేయగల **चेयगल,** కాగా कागा आदि शब्द लोक व्यवहार में रूढ हो गये हैं, साधारण व्यक्ति यह नहीं पहचान सकता कि చేయన్ + కల = చేయంగల > చేయఁగల > చేయగల **चेयन् + कल = चेयंगल > चेयॅंगल > चेयगल हो गया है।**

तेॅलुगु संधि के और भी भेद प्रभेद तथा अपवाद के नियम व्याकरणों में दिये हुए हैं। परन्तु मुख्य तत्वों का निर्देश ऊपर दिया जा चुका है। इसमें संदेह नहीं कि तेॅलुगु संधि संस्कृत के समान ही जटिल है। संश्लिष्ट-रचना आभ्यंतरिक स्वर परिवर्तन तथा उपसर्गात्मकता संस्कृत संधि की जटिलता का कारण है। तेॅलुगु संधि की क्लिष्टता के दो मुख्य कारण दिखायी देते हैं। (i) प्राचीन द्राविड के अधिकतर शब्द हलंत थे, तेॅलुगु में वे सब स्वरांत हो गये, फिर भी उनकी पूर्व प्रकृति पूरी तरह नष्ट नहीं हुई; विकासकी अवस्था में इस भाषा पर संस्कृत तथा प्राकृतों का प्रभाव पड़ा (ii) तेॅलुगु के प्रायः सभी वैयाकरणों ने संस्कृत व्याकरण को ध्यान में रख कर, तेॅलुगु व्याकरण के सूत्रीकरण का प्रयत्न किया है।

३५. संधि में साम्य :

संस्कृत का संधि- विधान तेॅलुगु से एकदम पृथक् है; पालि और प्राकृतों ने अधिकांश में संस्कृत संधि को ही बनाये रखा है, फिर भी कुछ बातों में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देशी रीतियों का स्वतंत्र अवलंबन दिखाई देता है। यहाँ पर दो-तीन अंश इस प्रकार के दिये जा रहे हैं जिनमें प्राकृत संधि का साम्य तेॅलुगु संधि में पाया जाता है।

(१) द्राविड-ध्वनि रीतियों के संबंध में यह कहा जा चुका है कि शब्द के मध्य में अघोष क, च, ट, त, प, सघोष ग, ज, ड, द, ब में बदल जाते है। तेॅलुगु की द्रुत-संधि में इसका सीमित प्रयोग पाया जाता है जिसके अनुसार 'न' कार के बाद भी यह परिवर्तन होता है। पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश में तो यह परिवर्तन बहुत प्रचलित रहा। इन भाषाओं के शब्द भंडार को परखने से तथा व्याकरण के नियमों से यह बात भली-भांति स्पष्ट हो जाती है।[1] अघोष अल्प प्राण ही नहीं, वरन् महाप्राण—ख, छ, ठ, थ, फ भी सघोष घ, झ, ढ, ध, भ में बदलने की रीति इन भाषाओं में पायी जाती है। नीचे के उदाहरण द्रष्टव्य है :

(पालि)—शाकल> सागल, माकंदिक> मागन्दिय, प्रतिकृत्य> पटिगिच्च उताहो> उदाहो, रुत> रुद, प्रव्यथते> पवेधते, पूप> पूब स्फटिक> फडिग, लाट> ल... और तमिळ[2] ...त> सेद।

(प्रा)—मूक> मूग, सुख> सुघ, शपथ ... सुबध, सफल> ... सभल, नट> नड, विटप> विडब, रजत> ... लकुचं> लगुजं, ... कथयत> कधेदु, सातवाहन> सादवाहन ...

---

(१) दे० (i) "अयुक्ताङ्गजडदब ... कचटतपा बहुलम्।" सूत्र ४, परि १९: प्राकृतानुश...

(ii) "घझढभानां ख ... ।"—सूत्र ५, परि १९ : प्राकृतानुशासन

(iii) "कगादेः स्वरविशेषता ... सूत्र ५, परि १७ : प्राकृतानुशासन

(iv) "अनादौ स्वरादसंयुक्तानां ..., प—कें ... गघदधबभाः" सूत्र ३९६ च पा. प्राकृत व्याकरण ... चला आ र... ।" सू. कखतथ

(२) हिन्दी भाषा का उद्गम तथा विकास—पृष्ठ ७४ परे ...

(३) प्राकृत विमर्श—पृष्ठ १०२–१३५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(हि)—कंकण> कंगन, अंतर> अंदर, वन + चर = बनजर, तान + पूरा = तंबूरा।

(२) प्राकृत शब्दों की संधि में कहीं-कहीं तेॅलुगु के समान ही पर-रूप संधि दिखाई देती है जहां प्रथम शब्द के अंत्य स्वर का लोप और पर स्वर का आदेश मिलता है। यथा—नर + इन्द्र = नरिंद, गज + इंद्र = गंजिव यस्स + इन्द्रियाणि = यस्सिद्रियाणि, वसंत + उत्सव = वसंतुस्सव, नील + उप्पल = नीलुप्पल, एग + इंदिय = एगिंदिय, रयण + उज्जल = रयणुज्जल इ०[1]

(३) शब्द के मध्यवर्ती व्यंजन के लोप होने पर अवशिष्ट स्वरों में संधि नहीं होती, पर व्यवहिति (Hiatus) दूर करने के लिए प्राकृतों में तेॅलुगु के सदृश, य, व और र, म की श्रुति का उपयोग होता है। जैसे :

(प्रा) दु + अंगुल = दुयंगुल, सु + अक्खाए = सुयक्खाए, भविस + अत्त = भविसयत्त (भविष्यदत्त), अंध + आर = अंधयार (अंधकार), उअअ = उव (उदय) दीइअ = दीविय (दीपिका)

हिन्दी में भी 'य' तथा 'व' श्रुति के थोड़े से उदाहरण मिलते हैं। जैसे—चउथ> चवुथ (चतुर्थ), सूअर> सूवर (सूकर), जुआ> जुवा (द्यूत), आ + एगा = आयेगा, आवेगा, हो + एगा = होवेगा, चलि + आ = चलिया, देखि + आ = देखिया। इ०

तेॅलुगु की साहित्यिक भाषा में, वाक्य के बीच में ऐसा कोई शब्द नहीं आता जिसके आरम्भ में असंयुक्त स्वर हो। नीचे का उदाहरण द्रष्टव्य है :

వివేకానందుడంతట భారతదేశమునకు దిరిగి వచ్చి యొక సంవత్సరము మాత్రముండి యనంతర మింగ్లాండునకేగదలచెను.

"विवेकानंदु डंतट भारत देशमुनकु दिरिगिवच्चि योॅक संवत्सरमुमात्र मुंडि यनंतर मिग्लांडुन केग दलचेॅनु।"

---

१. प्राकृत विमर्श पृ. १३२–१३६.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस वाक्य में रेखांकित अक्षर संधि के कारण बदले हुए रूप में हैं। संधि तोड़ने पर यह वाक्य इस प्रकार होगा—

వివేకానందుడు అంతట భారతదేశమునకు తిరిగి వచ్చి ఒక సంవత్సరము మాత్రము ఉండి అనంతరము ఇంగ్లాండునకు ఏగతలచెను.

"विवेकानंदुडु अंतट भारतेशमुनकु तिरिगि वच्चि ओ॑क संवत्सरमु मात्रमु उंडि अनंतरमु इंग्लांडुनकु एग तलचे॑नु।"

संज्ञा

३७. रूप-रचना

द्राविड भाषाएँ, भाषा विज्ञान में, रूपरचना की दृष्टि से योगात्मक (Agglutinative) मानी गयी हैं। मूल द्राविड में पहले एकाच् धातुएँ थीं, जैसे—ई, तें, चो॑ल, पो, नड्, अन्, अद्—इ०। अधिकांश धातुएँ क्रियाद्योतक थीं, और थोड़ी सी विशेषण, सर्वनाम और संख्या बोधक। एक के साथ दूसरी धातु जोड़ कर अर्थभेद किया जाता था। फिर वह जुड़ी हुई धातु एक तीसरी धातु के लिए प्रातिपदिक बन जाती। इस प्रकार नये अर्थों और प्रयोजनों के लिए धातु के साथ धातु जुड़ती गयी। एक स्वर वाली धातु दो-तीन स्वरों से युक्त हो गयी। इस तरह संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम आदि के मूल रूप निष्पन्न हुए। फिर कुछ शब्दों के अंश अन्य धातुओं में परसर्ग अथवा विकरण के समान जुड़ने लगे। कु, गु, चु, तु, दु, पु, वु, इसी प्रकार बने परसर्ग हैं। मूल शब्द से अलग होने पर इनका वास्तविक अर्थ और प्रयोजन बदल जाता था। इस प्रकार के शब्दों अथवा शब्दांशों (Particles) में जब निश्चित अर्थशक्ति और क्रमरीति आ गयी तो उनके योग से नये-नये शब्दों की रचना होने लगी। मूल द्रविड से अलग होने के पश्चात् ते॑लुगु भाषा पूर्व सामग्री को आधार बना कर योगात्मक रीति से वृद्धि प्राप्त करती गयी और लगभग ईसा की १० वीं शती तक वर्तमान विकसित दशा को पहुंच गयी।

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा अर्थात् वैदिक भाषा, परिवर्तित होते होते, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंशों के रूप में विकसित हुई। विकास की अंतिम दशा के समाप्त होते-होते १२ वीं शती के लगभग वर्तमान हिन्दी का प्रारंभिक रूप दिखाई

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
देने लगता है। प्रा० भा० आ० भाषा मूल भारोपीय परिवार में प्रधान मानी गयी। भाषाओं के रचनात्मक वर्गीकरण (Morphological Classification) के अनुसार प्रा० भा० आ० संश्लिष्ट (Inflectional) भाषा है। उसमें उपसर्ग और प्रत्ययों की प्रधानता है। प्रत्ययों का न तो अपना कोई अलग अर्थ है और न वे स्वतंत्र शब्दों के अवशेष ही हैं। इनका न कोई निश्चित रूप है और न वे सभी प्रकार के शब्दों के साथ जोड़े जा सकते हैं। इनका शब्दों के साथ संयोजन स्पष्ट और नियमबद्ध नहीं रहता। इसके अतिरिक्त, इन उपसर्ग और प्रत्ययों के योग से, मूल शब्दों के स्वरों में आभ्यंतरिक परिवर्तन भी होते हैं। उस प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का यह एक मुख्य लक्षण है।

द्राविड होने के कारण तेॅलुगु भाषा में संज्ञा आदि की रूप-रचना योगात्मक रीति से होती है; उसी तरह आर्य होने के नाते हिन्दी में रूप-रचना संश्लिष्ट ढंग पर होनी चाहिए। वैदिक भाषा में वही रीति पाई जाती है; परंतु आर्य परिवार की इस परंपरा का अनुसरण हिन्दी की संज्ञा तथा क्रिया की रूप-रचना में अत्यल्प ही दिखाई देता है। वर्णागम, वर्णलोप, वर्ण-विपर्यय आदि ध्वनि संबंधी परिवर्तनों के कारण संस्कृत की संश्लिष्ट-रचना प्राकृतों में बहुत कुछ बदल गई; प्राचीन उपसर्ग, प्रत्यय, विभक्तियाँ आदि रचनात्मक अंशों के व्यंजन घिस-घिस कर नष्ट हो गये। उनमें केवल स्वर ही स्वर शेष रहे। मूल शब्दों का स्वरूप नष्ट होने के कारश से उनकी अर्थशक्ति भी जाती रही। ऐसी परिस्थिति में परवर्ती प्राकृतों को अपने विकास के लिए नया ढंग अपनाना पड़ा। संज्ञा की लुप्त विभक्तियों के स्थान पर अर्थबोध के लिए स्वतंत्र शब्द जोड़े जाने लगे। यह रीति द्राविड भाषाओं और उनसे प्रभावित बोलियों में प्रचलित थी। इस प्रणाली का प्रयोग म० भा० आ० भाषा काल में आरंभ हुआ। संज्ञा की षष्ठी विभक्ति वाला रूप जो अवशिष्ट रह गया था, उसके साथ भिन्न-भिन्न कारकों के अर्थों में नये स्वतंत्र शब्द जोडे जाने लगे। यह ढंग पहले सर्वनामों और फिर संज्ञाओं के साथ अपनाया गया। क्रिया में भी पहले के तिङ् रूपों की जगह कृदंत शब्दों से नये प्रकार की काल-रचना होने लगी। इस रीति का पूरा-पूरा अनुसरण अपभ्रंश की अंतिम दशा में दिखाई देता है। हिन्दी तथा तेॅलुगु के व्याकरणिक अंशों की तुलना से यह साम्य स्पष्ट हो जाता है।

३८. नीचे का एक उदाहरण लीजिए :

संस्कृत में 'देव' शब्द अकारांत पुंल्लिग है। द्वितीया विभक्ति के एक वचन में इस का रूप 'देवम्' और बहुवचन में 'देवान्' बनता है। इन दोनों रूपों का विश्लेषण इस प्रकार हो सकता है :

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१. देव् + अ + अम् = देवम्

('देव्' = मूल + 'अ' = पुल्लिग प्रत्यय + 'अम्' = द्वितीया–एकवचन प्रत्यय)

२. देव् + अ + अन् = देवान्

('देव्' = मूल + 'अ' = पुल्लिग प्रत्यय + 'अन्' = द्वितीया बहुवचन प्रत्यय)

इस उदाहरण से स्पष्ट है कि संस्कृत संज्ञा के मूल में पहले लिंग द्योतक प्रत्यय लगता है, फिर वचन का प्रत्यय जो एक साथ विभक्ति का भी बोध कराता है, एक वचन में 'अम्' और बहुवचन में 'अन्'। वचन के भेद से विभक्ति प्रत्यय में भी परिवर्तन होता है। इसी 'देव्' शब्द के कर्मकारक रूप तेॅलुगु में इस प्रकार बनते हैं :—

१. देव + उंडु + नि = देवुँडिनि > देवुण्णि > देवुनि

'देव्' = मूल + 'उंडु' = पुल्लिग एकवचन प्रत्यय + नि–कर्मकारक प्रत्यय)

२. देव् + उलु + नि(नु) = देवुलनु

'देव्' = मूल + उलु = पुल्लिग बहुवचन प्रत्यय + नि (नु = कर्मकारक प्रत्यय)

तेॅलुगु रूपों के विश्लेषण से यह मालूम होता है कि संज्ञा के मूल में सर्वप्रथम पुल्लिग और एक वचन सूचित करने वाला प्रत्यय जुडा है, फिर उस पर कारक का प्रत्यय। 'उंडु' पुल्लिग एकवचन को तथा 'उलु' पुल्लिग बहुवचन को सूचित करने वाले प्रत्यय हैं। नि या नु कर्म कारक परसर्ग है, एकवचन तथा बहुवचन दोनों में यह कर्मकारक परसर्ग समान रहा। परन्तु संस्कृत में 'अम्' कर्मकारक एकवचन को सूचित करता है तो 'अन्' बहुवचन को। इस प्रकार संस्कृत के शब्दों में वचन के भिन्न होने पर विभक्ति प्रत्यय भी भिन्न हो गया। तेॅलुगु में कारक प्रत्यय वचन के साथ संबद्ध नहीं हैं। एकवचन द्योतक प्रत्यय के साथ दूसरे प्रत्यय के जुडने से बहुवचन बन गया है।[१] संस्कृत में लिंग द्योतक प्रत्यय वचन के साथ संबद्ध नहीं है, परंतु तेॅलुगु में वचन और लिंग संबद्ध हैं। कारक का वचन और लिंग से कोई सबंध नहीं है। एक वचन तथा बहुवचन दोनों में कारक प्रत्यय एक सा रहता है।

हिन्दी में यह उदाहरण इस तरह व्यक्त किया जा सकता है—

१. देव् + अ + को = देव को

---

१. 'डु' (पुं. लिं., एक व. व.) + लु (ब.) = डुलु > ड्लु > ळ्ळु > लु (यह 'लु' सभी लिंगों में कर्तृकारक बहुवचन को सूचित करता है।)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

('देव्' = मूल + 'अ' पुं लिं० एक व प्रत्यय + 'को' = कर्म कारक परसर्ग)

२. 'देव्' + ओं (अन) + को = देवों को (देवन को)

('देव्' = मूल + 'ओं' (अन) पुं० लिं० ब० प्रत्यय + 'को' = कर्म कारक परसर्ग)

हिन्दी के मूल शब्द में लिंग और वचन सूचित करने वाला प्रत्यय पहले जुडा है, उसके बाद कारक का परसर्ग। पुं० लिं० एक वचन प्रत्यय 'अ' है तथा बहुवचन द्योतक प्रत्यय 'ओं' है। 'को' कर्मकारक परसर्ग है जो एकवचन और बहुवचन दोनों में एक समान है।

हिन्दी और तेलुगु के उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि संज्ञा की कारक रचना दोनों भाषाओं में एक समान रीति पर हुई है, जो संस्कृत की रीति से भिन्न है।

लिंग

३९. हिन्दी के प्राणिवाचक शब्दों का लिंग उनके अर्थ से व्यक्त होता है, अर्थात् पुरुष-प्राणि द्योतक शब्द पुंलिंग में और स्त्री-प्राणि द्योतक शब्द स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं। जिन प्राणियों के लिए स्त्री-पुरुष सूचक भिन्न शब्द नहीं हैं उनके लिए **'नर'** और **'मादा'** अथवा **'स्त्री'** और **'पुरुष'** शब्दों के योग से लिंग भेद प्रकट किया जाता है। जैसे— **'नर पक्षी'**, **'मादा पक्षी'**। 'कौआ' जैसे कुछ प्राणिवाचक शब्द नित्य पुल्लिग हैं।

प्रा० भा० आ० भाषा में, स्त्री, पुरुष और नपुंसक का भेद है, किन्तु हिन्दी में नपुंसक लिंग न होने के कारण अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग के सम्बन्ध में कठिनाई होती है। ऐसे शब्दों का लिंग प्रायः रूप के अनुसार होता है, जैसे— आकारांत शब्द प्रायः पुल्लिग होते हैं, ईकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, आव, पन, आपा प्रत्यय वाले शब्द पुल्लिग होते हैं, तकारांत, और वट, हट प्रत्ययांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं इ०। इन नियमों के अपवाद भी कई हैं। **आत्मा, चर्चा, विजय, समाज, तरंग, उमंग, पवन, वायु, सामर्थ्य** आदि कितने ही शब्दों का व्यवहार दोनों लिंगों में होता है। कर्तृकारक बहुवचन का रूप शद्व के लिंग पर आधारित रहता है। अतः इस प्रकार की संज्ञाओं का लिंग जाने बिना बहुवचन बनाया नहीं जा सकता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महत्–अमहत् :

तेॅलुगु में लिंग के विषय में कोई कठिनाई नहीं है। अर्थ के अनुसार लिंग निर्धारित होता है। इस भाषा में **महत्** और **अमहत्** के नाम से लिंग के दो ही भेद पाये जाते हैं। मनुष्यवाची शब्दों में केवल पुरुष द्योतक शब्दों का महत् लिंग होता है। मनुष्यों में स्त्रीवाची, चेतन पशुपक्षी, अचेतन पदार्थ तथा वस्तुओं का अमहत् लिंग माना जाता है। तेॅलुगु के व्याकरण में संस्कृत के अनुकरण पर मनुष्यों में स्त्री वाची शब्दों के लिए **'महती'** लिंग का निर्देश मिलता है, किन्तु इस 'महती' के लिए तेॅलुगु की क्रिया में कोई स्थान नहीं है, महत् क्रिया और अमहत् क्रिया—दो ही रूप मिलते हैं। मनुष्य–स्त्रीवाची कर्ता के लिए एकवचन में अमहत् क्रिया, तथा वहुवचन में महत् क्रिया का विधान पाया जाता हैं। सर्वनामों में यह भेद केवल अन्य पुरुष तक ही सीमित है। अप्राणिवाचक शब्दों में, हिन्दी के जैसे, स्त्रीलिंग और पुल्लिग का भेद करना तेॅलुगु तथा अन्य द्राविड भाषाओं की प्रकृति के विरुद्ध है। मत्स्य, गज, अश्व, आदि संस्कृत के पुल्लिग शब्द भी तेॅलुगु में अमहत् ही माने जाते हैं।

चेतन-अचेतन के आधार पर द्राविड़ भाषाओं में किये गये महत्-अमहत् लिंग-विधान का प्रभाव मध्यकालीन संस्कृत पर भी दिखाई देता है, जिसके कारण वैदिक भाषा के बहुत से शब्द पुल्लिग से नपुंसक में बदल गये हैं। जैसे : नीडः—**नीडम्; आकाशः—आकाशम्; पुस्तकः—पुस्तकम्; मस्तकः—मस्तकम्; गृहः—गृहम्।**

तेॅलुगु में, साधारणतः प्राणिवाचकों में स्त्रीत्व बोधक शब्द स्वतंत्र रूप में ही पाये जाते हैं, जैसे—తండ్రి × తల్లి **तंड्रि** (पिता) × **तल्लि** (माता), అన్న × అక్క **अन्न** (वड़ा भाई) × **अक्क** (वड़ी वहिन), రాజు × రాణి **राजु** (राजा) × **राणि** (रानी), ఎద్దు × ఆవు **ऍद्दु** (वैल) × **आवु** (गाय), ఎనుము × గేదె **ऍनुमु** (भैंसा) × **गेंदेॅ** (भैंस), కోడె × పెయ్య **कोडेॅ** (वछड़ा) × **पेॅय्य** (वछड़ी) పుంజు × పెట్ట **पुंजु** (मुर्गा) × **पेॅट्ट** (मुर्गी) आदि० जहाँ इस प्रकार के अलग-अलग शब्द नहीं हैं वहाँ మగ × ఆడ **मग** (नर) × **आड** (मादा) आदि शब्दों से लिंग सूचित किया जाता है; जैसे—మగగుఱ్ఱము × ఆడగుఱ్ఱము **मगगुऱ्ऱमु** (घोड़ा) × **आडगुऱ्ऱमु** (घोड़ी), మనుమడు × మనుమరాలు **मनुमडु** (पोता या नाती), × **मनुमरालु** (पोती या नतिनी), అందగాడు × అందగత్తె **अंदगाडु** (सुन्दर पुरुष) × **अंदगत्तेॅ** (सुन्दर स्त्री), చాకలి × చాకిత **चाकलि** (धोवी) × **चाकित** (धोबिन) आदि०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४०. हिन्दी में वचन का विधान बहुत सरल है, जिन पुल्लिग वाची शव्दों के अंत में, अ, इ, ई, उ, अथवा ऊ आता है उनके, कर्तृकारक में, ने प्रत्यय के न आने पर, बहुवचन का रूप एकवचन के समान ही रहता हैं, जैसे—एक मकान—दो मकान, एक आदमी—दस आदमी, एक गुरु—दस गुरु। तेॅलुगु में साधारणतया बिना प्रत्यय के कोई शब्द बहुवचन में प्रयुक्त नहीं होता। किन्तु कभी-कभी, समूहार्थ में एक वचन से ही बहुत्व का भी बोध होता है। जैसे—ఈ యేడు చింతకాయ విరగకాసినది **ई येडु चिंतकाय विरग कासिनदि** (इस वर्ष इमली बहुत अधिक फली) ఈ ఊళ్లో మూడువందల గడప ఉన్నది ई ऊळ्ळो मूडुवंदल गडप उन्नदि (इस गाँव में तीनसौ चौखट (घर) हैं।)

कारक

४१. संबोधन को छोड़ कर तेॅलुगु में सात कारक हैं। हिन्दी में संबोधन तथा संबंध कारक नहीं गिने जाते हैं। पहले कहा जा चुका है कि संस्कृत की विभक्तियाँ शव्दों से अलग नहीं की जा सकतीं, वे संश्लिष्ट रूप में शव्द का ही अंग बन कर रहती हैं। हिन्दी में कारक रचना तेॅलुगु के समान योगात्मक होती है। को, में, से, पर आदि परसर्ग किसी भी संज्ञा के साथ लगाये जा सकते हैं, शव्द के लिंग और वचन से इनका कोई सम्बन्ध नहीं होता।

४२. **विकारी रूप :** तेॅलुगु की विभक्तियाँ मूल में स्वतंत्र शव्द ही थे, संज्ञा के साथ वे संबंध बोधक विकरण की सहायता से जोड़े जाते हैं। अधिकांश संज्ञाओं का एक विकारी रूप (Oblique Form) बन जाता है जिससे संबंध का भी बोध होता है[1], जैसे—ఇల్లు–ఇంటి **इल्लु** (घर)—**इंटि** (घर-का) చేయి–చేతి **चेयि** (हाथ)–**चेति** (हाथ का), మన్ను–మంటి **मन्नु** (मिट्टी)—मंटि (मिट्टी का)। इस विकारी रूप का प्रयोग संबंध के अर्थ में आज भी होता है, जैसे—ఇంటిపాలు **इंटि पालु** (घर का दूध), చేతిపని **चेतिपनि** (हाथ का काम), మంటిగోడ **मंटिगोड** (मिट्टी की दीवार), ఇండ్ల వరుస **इंड्ल वरुस**

---

१. इस विकारी (Oblique) रूप से संबंधार्थ के अतिरिक्त अधिकरणार्थ तथा विशेषण का भी बोध होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(घरों की कतार), పండ్లరుచి **पंड्ल रुचि** (फलों का स्वाद) इ० । संज्ञा के इसी विकारी रूप के साथ अन्य कारकों के परसर्ग जोड़े जाते हैं, जैसे—इंटि + नि = इंटिनि (घर को), चेति + पैं = चेतिपैं (हाथ पर), मंटि + तो = मंटितो (मिट्टी से) इंड्ल + लो = इंड्ललो (घरों में), चेतुल + तो = चेतुलतो (हाथों से) आदि०

४३. **कारक शब्द** :—जैसे पहले कहा गया हैं, तेॅलुगु के वर्तमान कारक प्रत्यय मूल में स्वतंत्र अर्थ वाले शब्द थे। **करण कारक प्रत्यय** చే, చేత—చేయి **चे**, चेत—'**चेयि**' (हाथ) शब्द से, తో, తోడ—తోడు तो, तोड–'**तोडु**' (साथी) शब्द से, सम्प्रदान कारक प्रत्यय కొఱకు—కొఱ कोॅरकु–'**कोऱ**' (प्रयोजन) शब्द से, अपादान कारक प्रत्यय వలన—వల్ల वलन–'**वल्ल**' (शक्ति) शब्द से, కన్న, కంటె—కను **कन्न, कंटे**–'**कनु**' (देख) धातु से, तथा अधिकरण कारक प्रत्यय లో. లోన—లోన लो, लोन्–**लोन** (अंतर्भाग) शब्द से बने मालूम होते हैं। इन शब्दों में से कुछ का प्रयोग आज भी स्वतंत्र रूप में दिखाई देता है; उदा० వాడే నాకు తోడు **वाडे नाकु तोडु** (वही मेरा साथी है अथवा उसी का साथ मुझे प्राप्त है), కొఱగాని కొడుకు **कोॅरगानि कोॅडुकु** (प्रयोजन विहीन पुत्र), వల్ల గాని పని **वल्लगानि पनि** (शक्ति के बाहर का काम)

४४. प्रा० भा० आ० की विभक्तियाँ प्राकृतों में पहुँचते-पहुँचते लुप्त होने लगीं, आखिर में 'हं' एक वचन में तथा 'न्ह' बहुवचन में प्रायः सब कारकों के लिए प्रयुक्त होते थे। इसी कारण उन लुप्त विभक्तियों के अर्थ में दूसरे स्वतंत्र शब्द काम आने लगे। जैसे–'गृह मध्य' (सप्तमी विभक्ति के अर्थ में) इसी '**मध्य**' शब्द से वर्तमान खड़ी बोली का 'में' परसर्ग निष्पन्न हुआ। (**मध्य > मज्झ > मधि > महिं > में**) इसी तरह जो शब्द प्राचीन विभक्तियों के स्थान पर प्रचलित हुए उनमे वर्तमान—**को, से, का, के, की, पर** आदि परसर्ग विकसित हुए। इन शब्दों से विकसित परसर्ग संज्ञा के उस विकारी रूप के साथ जुड़ते हैं जो प्रा० भा० आ० भाषा की षष्ठी विभक्ति का अवशेष[1] माना जाता है।

---

१. दे० A Grammar of the Hindi Language—(Chapter V on the Declension of High Hindi)—S. K. Kellog (Second Edition 1893).

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपभ्रंश के कारक परसर्ग :

अपभ्रंश में प्रयुक्त कारक परसर्गों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :

करण--सहुँ, तणेण, तण—

"पवसन्ते सहुँ" = (प्रवासी के साथ)

"दुजन सउँ" = (दुर्जन से)

"केहि तणेण" = (किससे)

संप्रदान—रेसि, केहिं, तणइ--

"अन्नहिं रेसि" = (अन्न के लिए)

"आपणु केहँ" = (अपने को)

"तासु तणइ" = (उसको)

अपादान--होन्तउ, होन्त, हुँत--

"तुम्हं होंतउ" = (तुमसे)

"तहां होंतउ" = (उससे, उसके पास से)

संबंध—केरअ, केर, केरा--

"तसु केरअ" = (उसका)

अधिकरण—थिउ, मज्झि, माँझ, उप्परि--

"हिअअ थिउ" = (हृदय में)

"कुसुमहो मज्झि" = (कुसुमों में)

"एँन्ह मांझ" = (इनमें)

"जीविहिं मज्झे" = (जीव में)

"सायरु उप्परि" = (सागर पर)

ऊपर दिये गये उदाहरणों के संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों में जुड़े हुए हँ, हिं, हुं हो या उ—प्रत्यय संबंधकारक का अर्थ सूचित करते हैं, उनके साथ कारक परसर्ग जुड़े हुए मिलते हैं। खड़ी बोली की संज्ञा में पुरानी षष्ठी विभक्ति का अवशेष 'हं' दिखाई नहीं देता, परन्तु, 'घोड़े को' में, 'आ' का 'ए हो जाना, तथा 'घोड़ों को' में, 'ओं' (न्ह) का अस्तित्व पुरानी षष्ठी विभक्ति का अवशिष्ट परिणाम कहा जा सकता है। अर्थात् इस 'ए' और 'ओं' में पुरानी षष्ठी विभक्ति का संस्कार बाकी रह गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४५. हिन्दी में 'से' करण तथा अपादान दोनों में आता है, इसी तरह 'को' कर्म और संप्रदान दोनों का काम देता है, परन्तु वर्तमान तेॅलुगु में एक परसर्ग दो भिन्न कारकों में प्रयुक्त नहीं होता।

४६. **कर्तृकारक:**

हिन्दी में कोई कर्तृकारक परसर्ग नहीं है, पर कर्मणि प्रयोग वाली विशेष रचना में कर्ता के साथ 'ने' जुड़ता है। जैसे—राम ने रोटी खायी। इस 'ने' के जुड़ने से अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न नहीं होती। ऊपर कहा गया है कि परसर्गों के जुड़ने के पहले संज्ञाएँ विकारी रूप ग्रहण करती हैं। आकारांत पुलिंग शब्दों के अंत्य 'आ' को 'ए' में बदल देने से एक वचन वाला विकारी रूप बनता है, उसके साथ, का, से, में पर आदि विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं। इसी तरह 'ओं' जोड़ने से बहुवचन का विकारी रूप बनता है, जिसके साथ परसर्ग जोड़े जा सकते हैं। जैसे—एकवचन में—लड़के ने, लड़के को, लड़के का; बहुवचन में—लड़कों ने, लड़कों को, लड़कों का इ०

'ने' परसर्ग :

'ने' को कर्तृकारक परसर्ग बतलाना व्यावहरिक दृष्टि से ठीक हो सकता है, किन्तु शास्त्रीय दृष्टि से ठीक नहीं। यह करण का परसर्ग है और संस्कृत की तृतीया विभक्ति 'एण' से इसका उद्भव माना जाता है। 'ने' वाली रचना के वाक्य में क्रिया कृदंतीय विशेषण के समान कर्म के लिंग और वचन के अनुकूल बदलती है। कुछ लेखकों ने इसे कर्मणि प्रयोग कहा है। व्यवहार में करण कारक 'से' के साथ स्वतंत्र रूप से कर्मवाच्य बनता है। जैसे—राम से फल खाया गया। यह 'ने' विभक्ति पश्चिमी हिन्दी की अपनी विशेषता है। पूर्वी हिन्दी तथा मागधी भाषाओं में इसका अभाव है।[१] ब्रज में खड़ी बोली के समान इसका प्रयोग विधायक नहीं है। अवधी में, कहीं कहीं दिखाई देने वाला इस विभक्ति का प्रयोग पश्चिमी हिन्दी का प्रभाव माना जाता है। तेॅलुगु में 'ने' से मिलती जुलती विभक्ति नहीं है।

---

१. खड़ी बोली की प्रारंभिक कविता तथा दखिनी हिन्दी में भी 'ने' के प्रयोग का अभाव ही पाया जाता है। उदा०

"हम ना तुम को दिल दिया तुम दिल लिया, औ दुख दिया।
तुम यह किया, हम वह किया, यह भी जगत की रीति है।" सादी ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४७. డు. ము, వు, లు डु, मु, वु, लु :

तेॅलुगु में कर्तृकारक का कोई प्रत्यय नहीं है। రాముడు रामुडु (राम) పాము पामु (साँप), గోవు गोवु (गाय), బాలురు, బాలులు बालुरु, बालुलु (लड़के), పూలు पूलु (फूल) आदि शब्दों के अंत्याक्षर डु, मु, वु, लु को कर्तकारक के प्रत्यय बताया जाता है। किन्तु वे असल में लिंग और वचन को व्यक्त करने वाले परसर्ग हैं। डु या (ण्डु) महद्वाचक एकवचन का द्योतक है, इसीलिए, राम भीम आदि तत्सम संज्ञाओं को अपनाते समय महत् होने के कारण उनके साथ 'डु' परसर्ग जोड़ा जाता है।[1] मु और वु भाववाचक और अमहत् संज्ञाओं के साथ जुड़ते हैं। संस्कृत के ज्ञानम्, पुस्तकम् आदि नपुंसकलिंगवाची शब्दों का अनुस्वार तेॅलुगु में 'मु' हो जाता है। लु और रु बहुवचन द्योतक प्रत्यय हैं। इनमें रु महत् लिंग के लिए और लु महत् और अहमत् दोनों के लिए प्रयुक्त होते हैं।

४८. संबोधन :

'ओ' तेॅलुगु में संबोधन का सामान्य उपसर्ग है, जैसे—ఓరామా! ఓగురూ! ओ रामा! ओ गुरू! इ०। संबोधन में संज्ञाओं का अंत्य ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है। पालि में भी—हे बुद्धा, हे गुरू! आदि दीर्घ रूप ही संबोधन में प्रयुक्त होते हैं। साहित्यिक शैली में రా, రో रोॅ, रो भी स्त्रीवाचक शब्दों के साथ संबोधन में प्रयुक्त होते थे। जैसे : అక్కరో, अक्करो (हे अक्का) రమణిరో रमणिरो (हे रमणी) इ०

४९ कर्मकारक :

हिन्दी में कर्मकारक प्रत्यय 'को' है, तथा तेॅलुगु में ని, ను नि, नु हैं। मूल द्राविड में कर्मकारक रूप तथा कर्तृकारक रूप एकसा रहता था। बाद को ని, ను नि, नु का प्रयोग केवल महत् संज्ञा के साथ ही प्रचलित हुआ। अमहत् के साथ नि, नु लुप्त रहते हैं। हिन्दी में भी अप्राणिवाचक संज्ञा के साथ प्रायः 'को' प्रयुक्त नहीं होता।

---

१. తండ్రి तंड्रि (बाप), అన్న अन्न (भाई), మామ (मामा), కొడుకు कोॅडुकु (पुत्र), బావ बाव (बहनोई) जैसे देशी शब्द महत् होने पर भी డు डु प्रत्यय नहीं लेते। बहुत कम देशी शब्द डुकारांत हैं। इस भाषा में डु द्वितीय परिणाम (Secondary Development) है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५० करण कारक :

तॅलुगु में చేత, తోడ **'चेत'** **'तोड'** तथा हिन्दी में **'से'** करण कारक के प्रत्यय हैं। हिन्दी में पूछ, कह आदि कुछ क्रियाओं के साथ कर्म के अर्थ में करण कारक का प्रयोग होता है। यथा—मैं तुम से पूछता हूँ, तुम से कहता हूँ। तॅलुगु के **चेत** और **'चे'** अंग्रेजी के By के अर्थ में तथा 'तोड', **'तो'** With के अर्थ के प्रयुक्त होते हैं : నేను స్నేహితునితో బజారుకు వెళ్ళితిని **'नेनु स्नेहितुनितो बजारुकु वॅळ्ळितिनि'**—इस वाक्य में 'तो' का अर्थ 'साथ' है, परंतु हिन्दी में इसके लिए **'मैं मित्र से बाज़ार गया'** कहना ठीक न होगा। वहाँ संबंध बोधक **'के साथ'** या **'के संग'** का प्रयोग ही शुद्ध होगा। पर अपभ्रंश का यह प्रयोग ध्यान देने योग्य है—**"जउ पवसन्ते सहुं न गयऊ'** (यदि प्रिय के प्रवास के समय मैं साथ न गयी) इसमें 'के साथ' की जगह 'से' का प्रयोग हुआ है।

५१ संप्रदान कारक :

हिन्दी में **को, के लिए** तथा तॅलुगु में కి, కు, కై, కొఱకు **कि, कु, कै, कोॅरकु**—संप्रदान के परसर्ग हैं। कुछ भाषा-शास्त्रज्ञ हिन्दी के **'को'** की उत्पत्ति द्राविड भाषाओं के 'कु' से बतलाते हैं, (दे० **"मेरा मन सुमिरै राम कूं"** —कबीर) तॅलुगु में कि और कु से तथा हिन्दी में को से अंग्रेजी के To, का अर्थ निकलता है, और कै, **कोॅरकु** तथा **'के लिए'** से 'For' का अर्थ-भेद सूचित होता है। सब परसर्गों का प्रयोग एक ही अर्थ सूचित करने में नहीं होता। हिन्दी में **'को'** के स्थान में **'के लिए'** तथा तॅलुगु में **'कु'** के स्थान में **'कोरकु'** प्रयुक्त नहीं हो सकते।

కి, కు 'कि' और **'कु'** तॅलुगु **में** संबंध कारक के अर्थ में भी प्रयुक्त होते है। **जैसे** : దశరథునికి నలుగురు పుత్రులుండిరి **दशरथुनिकि नलुगुरु पुत्रुलुंडिरि** (दशरथ के चार पुत्र थे) इस संबंधार्थ में 'को' का प्रयोग हिन्दी में भी कहीं-कहीं दिखाई देता है। पश्चिमी हिन्दी में ऐसा प्रयोग कम होता है।

५२. अपादान कारक :

तॅलुगु में వలన, వల్ల, కంటె, కన్న, ఉండి, పట్టి **वलन, वल्ल, कंटॅ, कन्न, उंडि, पट्टि** ये प्रत्यय अपादान के भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। **यथा—(१)** నా వలన ఈ తప్పు జరిగినది **ना वलन ई तप्पु जरिगिनदि** (मुझ से यह भूल हुई) (२) రాముని కన్న లక్ష్మణుడు చిన్నవాడు **रामुनि कन्न लक्ष्मणुडु**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चिन्नवाडु (राम से लक्ष्मण छोटा है) (३) ఈ బండి మద్రాసు నుండి బయలు దేరినది ई बंडि मद्रासु नुंडि बयलुदेरिनदि (यह गाड़ी मद्रास से रवाना हुई) (४) చంద్రునిలోని ఛాయను బట్టి భూమి గుండ్రముగా నున్నదని తెలియుచున్నది. चंद्रुनिलोनि छायनुबट्टि भूमि गुंड्रमुगा नुन्नदनि ते॑लियुचुन्नदि (चंद्रमा में की छाया से मालूम हो रहा है कि पृथ्वी गोल है।)

उपर्युक्त सभी अर्थों में हिन्दी में एकमात्र 'से' का प्रयोग होता है। द्वारा, अपेक्षा, आदि अन्य शब्द भी काम में आते हैं।

५३. संबंध कारक :

हिन्दी की संज्ञाओं में का, के, की (तथा सर्वनामों में एरा, एरे, एरी और ना, ने, नी) संबंध कारक के प्रत्यय हैं। ते॑लुगु में संज्ञा के विकारी रूप के अतिरिक्त 'यो॑क्क' परसर्ग भी संबंध को सूचित करता है। संबंध कारक का प्रयोग हिन्दी में ते॑लुगु की अपेक्षा कठिन और पेचीदा है। 'राम की टोपी" में टोपी शब्द के लिंग से 'की' संबंधित रहती है। संबंधित शब्द के लिंग और वचन का विचार करके ही 'का' 'के' 'की' का प्रयोग किया जा सकता है। ते॑लुगु में—రాముని యొక్క టోపి 'रामुनि यो॑क्क टोपि' में यह कठिनाई नहीं है। राम या टोपी के लिंग वचन जानने की आवश्यकता नहीं है।

का, के, की-के विकास के संबंध में भाषा शास्त्रज्ञों ने कई सुझाव प्रस्तुत किये हैं। संस्कृत के तद्धित प्रत्यय 'इक' से, जो संबंध को सूचित करने वाला विशेषण है, का, के, की का विकास अनुमानित है। विशेष्य के लिंग वचन के अनुसार यह 'इक" बदलता रहता है। जैसे : दैविकम् बलम्, लौकिकी भाषा इ०।

हिन्दी में लिखना, पढ़ना आदि क्रियार्थक संज्ञाओं का भी संबंध दूसरे शब्द के साथ 'का' परसर्ग के द्वारा जोड़ा जाता है। जैसे—"मुझे इस संकट में छोड़ कर आपका जाना ठीक नहीं।" "गाडी के आने में अभी देर है।" इनके ते॑लुगु वाक्यों में संबंध कारक का प्रयोग नहीं होता। जैसे : నన్ను ఈ విపత్తులో వదలి మీరు వెళ్ళిపోవుట బాగుగా లేదు. "नन्नु ई विपत्तुलो वदलि मीरु वेळ्ळि पोवुट बागुगा लेदु।" బండి వచ్చుటకు ఇంకను ఆలస్యమున్నది. "बंडि वच्चुटकु इंकनु आलस्यमुन्नदि"। 'मीरु पोवुट' 'बंडि वच्चुट' इन प्रयोगों में संबंध कारक परसर्ग नहीं है। यदि పోవుట 'पोवुट' के स्थान पर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
పోకడ **'पोकड'** तथा వచ్చుట 'वच्चु.ट' के स्थान पर రాకడ 'राकड' का प्रयोग किया जाए तो हिन्दी के समान ही संबंध कारक प्रत्यय की आवश्यकता होती है। जैसे —మీ పోకడ **'मी पोकड'** (आपका गमन), బండి రాకడ **'बंडि राकड'** (गाड़ी का आगमन) इ०। **पोवुट, वच्चु.ट** क्रियार्थक संज्ञाएँ हैं, **पोकड** और **राकड** भाववाचक संज्ञाएँ हैं। तॆलुगु में इन दो का प्रयोग एकसा नहीं होता।

५४. अधिकरण कारक :

तॆलुगु में లో, లోపల, పై, పైన, అందు, మీద **लो, लोपल, पै, पैन, अंदु, मीद** अधिकरण कारक के परसर्ग हैं।[1] हिन्दी में-में और पर अधिकरण के परसर्ग हैं। संस्कृत के 'उपरि' से 'पर', तथा 'मध्य' से 'में' व्युत्पन्न हैं। हिन्दी का पै तथा तॆलुगु का पैन् एकसे लगते हैं। "मासानाम् मार्गशीर्षोहम्" में सप्तम्यर्थ में षष्ठी का जो प्रयोग है वह हिन्दी में दिखाई नहीं देता। किन्तु 'हिमालय पर्वतों का राजा है'; 'अलीबाबा चोरों का सरदार था'—ऐसे वाक्यों में 'का' अधिकरण की अपेक्षा संबंध का ही बोध अधिक कराता है। तॆलुगु के హిమాలయము పర్వతములకు రాజు, అలీ బాబా దొంగలకు నాయకుడు—"हिमालयमु पर्वतमुलकु राजु"; **"अलीबाबा दॊंगलकु नायकुडु"** इन वाक्यों में संप्रदान कारक परसर्ग का प्रयोग है। "मासानाम् मार्गशीर्षोहम्' का ठीक समानार्थक प्रयोग हिन्दी तथा तॆलुगु दोनों में अधिकरण परसर्ग को ले कर किया जाता है। जैसे—'मासों में मैं मार्गशीर्ष हूँ', మాసములలో నేను మార్గశీర్షమను **मासमुललो नेनु मार्गशीर्षमनु**' इ०

'पिता जी इस समय घर पर नहीं हैं'—इस वाक्य में **'पर'** का विशिष्ट प्रयोग है। इसके तॆलुगु वाक्य में **'पर'** की जगह 'में' का ही प्रयोग हो सकता है।

---

१. तॆलुगु के व्याकरण में संप्रदान के परसर्ग कि, कु तथा अधिकरण के परसर्ग **लो, लोपल**—इन सबको संबंध कारक परसर्ग ही माना गया है। इसका कारण यह है कि संस्कृत में षष्ठी विभक्ति चतुर्थी और सप्तमी का भी अर्थ देती है, जैसे: "दशरथस्य चत्वारः पुत्राः अभवन्" (दशरथ के चार पुत्र हुए); "मासानाम् मार्गशीर्षोहम्" (मासों में मैं मार्गशीर्ष हूँ) इ०। तॆलुगु के वैयाकरणों ने संस्कृत का प्रयोग मुख्य माना है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५५. जिस प्रकार हिन्दी में भिन्न-भिन्न कारक परसर्गों की जगह— सेती, तईं, प्रति, संग, अर्थ, वास्ते, अपेक्षा, द्वारा, संबंधी, अंतर्गत आदि शब्दों का प्रयोग होता है उसी प्रकार तेॅलुगु में भी గురించి, తోడుత, పొంటె, మెయి, కోసరము, ద్వారా गुरिंचि, तोडुत, पोॅटेॅ, कोसरमु, द्वारा आदि शब्दों का प्रयोग पाया जाता है।

५६. **दो-दो परसर्ग :**

हिन्दी तथा तेॅलुगु दोनों में कभी कभी दो-दो परसर्गों का प्रयोग भी एक साथ होता है। जैसे—में का, में से, पर से, पर का। उदा०—(१) इनमें की कोई वस्तु उपयोगी नहीं है। వీటిలోని ఏవస్తువు కూడ పనికిరాదు **(वीटि लोनि ए वस्तुवु कूड पनिकिरादु)** (२) घर पर के मोह के कारण वह झंझट में पड़ गया। ఇంటిపైని మోహము వల్ల వాడు చిక్కులో పడిపోయినాడు **(इंटिपैनि मोहमुवल्ल वाडु चिक्कुलो पडि पोयिनाडु)** इ०। इनमें लोनि, पैनि दो दो प्रत्ययों के सम्मिलित रूप हैं। (लोनि = में का, पैनि = पर का) లోన్ + ఇ = లోని लोन् + इ = लोनि तथा పైన్ + ఇ = పైని पैन् + इ = पैनि होता है।

इन शब्दों का ఇ 'इ' संबंध सूचित करने वाला औपविभक्तिक प्रत्यय है, जिससे शब्दों का विकारी रूप बनता है।

सर्वनाम

५७. **पुरुष वाचक :**

हिन्दी के सर्वनाम शब्दों में लिंग भेद नहीं है। संस्कृत में केवल अन्य पुरुष के रूपों में पुंलिग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंगों का भेद है। जैसे—सः (पुं. लि), सा (स्त्री. लि.) तत् (न. पुं. लि) तेॅलुगु में भी केवल अन्य पुरुष के सर्वनामों में ही लिंग भेद पाया जाता है। जैसे—వాడు **वाडु** (महद्-वाचक एकवचन), ఆమె **आमेॅ** (महती वाचक एक वचन) అది **अदि** (अमहत् एक वचन) बहुवचन में तो महत् और महती दोनों के लिए వారు **वारु** है, और केवल अमहत् के लिए అవి **अवि** प्रयुक्त होता है।

हिन्दी तथा तेॅलुगु के सर्वनामों की तालिकाः

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष :	मैं = నేను नेनु	हम = మేము मेमु = మనము मनमु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

	एकवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष :	तू = నీవు नीवु	तुम = మీరు मीरु
		आप = తమరు तमरु (आदरार्थक)
अन्य पुरुष :	वह = వాడు वाड़ु (पुं० लिं०)	वे = వారు वारु (पुंलिग)
	= ఆమె आमें (स्त्री० लिं०)	वे = వారు वारु (स्त्री० लिं०)
	= అది अदि (नपुं० लिंग०)	वे = అవి अवि (नपुं० लिं०)
समीपवर्ती	यह = వీడు वीड़ु (पुं० लिं०)	ये = వీరు (पुं० लिं०)
	यह = ఈమె ईमें (स्त्री० लिं०)	ये = వీరు वीरु (स्त्री० लिं०)
	यह = ఇది इदि (नपुं० लिं०)	ये = ఇవి इवि (नपुं० लिं०)

५८. प्रश्नवाचक :

	एकवचन	बहुवचन
	कौन = ఎవడు ऍवड़ु (पुं० लिं०)	कौन = ఎవరు ऍवरु (पुं० लिं०)
	कौन = ఎవతె ऍवतें (स्त्री० लिं०)	कौन = ఎవరు ऍवरु (स्त्री० लिं०)
	क्या = ఏది, ఏమి एदि, एमि (नपु० लिं०)	क्या = ఏవి एवि (नपुं० लिं०)

५९. संकेत वाचक :

यह, वह, कौन-हिन्दी में संकेत वाचक विशेषणों का भी काम देते हैं; जैसे : यह पुस्तक, वे गाँव, कौन पुरुष आदि। इन बिशेषणों के विशेष्य शब्द जब कारक परसर्ग सहित प्रयुक्त होते हैं तब क्रमशः एकवचन में—इस उस किस तथा बहुवचन में—इन, उन, किन में बदलते हैं। यथा— इस गाँव में, उस पुस्तक में, किस पुरुष को, उन देशों में—इ०।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६०. प्रातिपदिक निर्देशक धातुएँ :

तेॅलुगु तथा अन्य द्राविड भाषाओं में అ, ఇ, ఎ, अ, इ, ए, मूलभूत निर्देशक प्रातिपादिक शब्द हैं। इनमें 'अ' दूरवर्ती, 'इ' निकटवर्ती तथा 'एँ' अज्ञात अथवा प्रश्नार्थक निर्देश को सूचित करते हैं। इन्हीं धातुओं के आधार पर इन भाषाओं में अन्य पुरुष के सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया–विशेषण आदि अनेक शब्द भेद बनते हैं। जैसे :–

'अ' मूलक–सर्वनाम– వాడు, వారు, ఆమె, అది, అవి
वाड्डु, वारु, आमेॅ, अदि, अवि।
,, ,, विशेषण–– ఆ, అట్టి, అన్ని, అంత आ, अट्टि, अन्नि, अंत।
,, ,, क्रिया विशेषण– అప్పుడు, అక్కడ, అటు, అందు, అట్లు
अप्पुडु, अक्कड, अटु, अंदु, अट्लु।
'इ' मूलक—सर्वनाम— వీడు, వీరు, ఈమె, ఇది, ఇవి
वीड्डु, वीरु, ईमेॅ, इदि, इवि।
,, ,, विशेषण— ఈ, ఇట్టి, ఇన్ని, ఇంత ई, इट्टि, इन्नि, इंत।
,, ,, क्रिया विशेषण— ఇప్పుడు, ఇక్కడ, ఇటు, ఇందు, ఇట్లు
इप्पुड्डु, इक्कड, इट्टु, इंदु| इट्लु।
'एँ' मूलक—सर्वनाम–– ఎవడు, ఎవరు, ఎవతె, ఏది, ఏవి
ऍवड्डु, ऍवरु ऍवतेॅ, एदि, एवि।
,, ,, विशेषण— ఏ, ఎట్టి, ఎన్ని, ఎంత ए, ऍट्टि, ऍन्नि, एॅत
,, ,, क्रिया विशेषण—ఎప్పుడు, ఎక్కడ, ఎటు, ఎందు, ఎట్లు
ऍप्पुडु ऍक्कड, ऍटु, एंदु, ऍट्लु।

६१. हिन्दी में वह, यह, कौन संकेत वाचक विशेषण भी बनते हैं, किन्तु तेॅलुगु में, वाड्डु, वीड्डु, एवड्डु के स्थान में ఆ, ఈ, ఏ आ, ई, ए, निर्देशक विशेषणों का काम देते हैं। जैसे ఆ మనిషి आ मनिषि (वह मनुष्य), ఈ గోడ ई गोड (यह दीवार), ఏ దేశము ए देशमु (कौन देश) इ०

विशेष्य के साथ कारक परसर्ग होने पर हिन्दी के वह, यह, कौन में जैसा परिवर्तन होता है वैसा परिवर्तन तेॅलुगु में नहीं होता; जैसे :

वह मनुष्य—उस मनुष्य को। ఆ మనిషి आ मनिषि––ఆ మనిషికి आ मनिषिकि
यह दीवार––इस दीवार पर। ఈ గోడ ई गोड—ఈ గోడమీద ई गोड मीद
कौन देश—किस देश में। ఏ దేశము ए देशमु––ఏ దేశములో ए देशमुलो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रजभाषा के संकेतवाचक सर्वनामों में भी परिवर्तन नहीं होता—जैसे : वा को (उसको) या को (इसको), का को (किसको)।

६२. तेॅलुगु का विशेष सर्वनाम :

जहाँ हिन्दी में उत्तम पुरुष सर्वनाम के बहुवचन का केवल एक रूप 'हम' प्रचलित है वहाँ, तेॅलुगु में మేము 'मेमु' और మనము 'मनमु' दो रूप हैं। पहला वक्ता के लिए ही प्रयुक्त होता है, किन्तु మనము मनमु का प्रयोग वक्ता तथा श्रोता दोनों के लिए होता है। बोलचाल की दखिनी में इसे 'अपन' से सूचित किया जाता है। यह उत्तम तथा मध्यम पुरुषों का सम्मिलित सर्वनाम द्राविड भाषाओं की एक विशेषता माना जाता है। तेॅलुगु की तद्धर्मकालिक क्रिया में इस सर्वनाम के लिए अलग रूप मिलता है। जैसे—మేము తిందుము **मेमु तिंदुमु** (हम खाएँगे), మనము తిందము **मनमु तिंदमु** (हम अपन खाएँगे) इ०

६३. संबंध वाचक :

संस्कृत के सदृश हिन्दी में संबंध वाचक सर्वनाम 'जो' प्रचलित है, परन्तु तेॅलुगु तथा अन्य किसी भी द्राविड भाषा में इसका अस्तित्व नहीं है। इन भाषाओं में प्रश्नवाचक सर्वनाम से ही संबंध वाचक का अर्थ लिया जाता है। जैसे—ఎవడు పాపము చేయునో వాడు దాని ఫలము ననుభవించును **एवडु पापमु चेयुनो वाडु दानि फलमु ननुभविंचु.नु।** (जो पाप करेगा वह उसका फल भोगेगा), ఎవడు జ్ఞానము కలిగి యుండునో వాడు తరించును **एवडु ज्ञानमु कलिगि युंडुनो वाडु तरिंचु.नु** (जो ज्ञानवान् होगा वह तर जाएगा), ఎవని కర్మము వాడే అనుభవించును **एवनि कर्ममु वाडे अनुभविंचु.नु** (जिसका कर्म वही भोग लेगा) इ०। परन्तु ऐसे वाक्य तेॅलुगु की साधारण प्रकृति के विरुद्ध हैं।

संबंध वाचक सर्वनाम के अभाव के कारण तेॅलुगु आदि द्राविड भाषाओं की वाक्य रचना हिन्दी से कुछ भिन्न हो जाती है। 'जो' के प्रयोग से हिन्दी में जिस प्रकार के उपवाक्य बनते हैं, तेॅलुगु में नहीं बन सकते।

६४. निज वाचक :

हिन्दी में आदरवाचक सर्वनाम 'आप' निजवाचक सर्वनाम का भी काम देता है। इसकी उत्पत्ति 'आत्मा' से हुई है। कर्तृकारक को छोड़ अन्य कारकों में निजवाचक 'आप' के विकारी रूप, आदरवाचक 'आप' के रूपों से भिन्न होते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हैं। निजवाचक 'आप' से—अपने को, अपने से, अपने लिए, अपना, अपने में—आदि रूप बनते हैं। आदरवाचक 'आप' का कोई विकारी रूप नहीं है।

ते॑लुगु में निजवाचक सर्वनाम के लिए एक वचन में తను, తాను तनु तानु और बहुवचन में తాము तामु प्रचलित हैं। इनके विकारी रूप एकवचन में తన तन, और बहुवचन में తమ तम, हैं। इस निजवाचक सर्वनाम का उपयोग ते॑लुगु में आजकल केवल अन्य पुरुष तक ही सीमित है। पर प्राचीन ते॑लुगु में हिन्दी के समान ही, उत्तम और मध्यम पुरुषों में भी इसका प्रयोग होता था। पालकुरिकि सोमनाथ के बसवपुराण का यह उदाहरण द्रष्टव्य है—"తల్లి సచ్చిన గాదె తాను డస్సితిని, తానెట్లు బోవుదు నానందమూర్తి" तल्लि सच्चिनगादे तानु डस्सितिनि, ताने॑ट्लु पोवुदुनानंद मूर्ति।"

६५. अनिश्चयवाचक :

हिन्दी के अनिश्चयवाचक सर्वनामों में 'कोई' के लिए ते॑लुगु में पर्याय नहीं है। కొందరు, కొన్ని, కొంత को॑दरु, को॑न्नि, को॑त—'कुछ' के पर्यायवाची सर्वनाम हैं। इनमें से కొందరు 'को॑दरु' महत् बहुवचन, కొన్ని 'कोन्नि' अमहत् बहुवचन तथा కొంత 'को॑त' परिमाण को सूचित करते हैं। 'सब' के पर्यायवाचियों में అందరు अंदरु (महत्), అన్ని अन्नि (अमहत्) तथा అంత अंत—परिमाण द्योतक हैं। 'कई' के लिए అనేకులు 'अनेकुलु' महद्-वाचक है, तथा అనేకము 'अनेकमु' अमहद्वाचक है।

'कोई' मूल में अलग सर्वनाम नहीं है। प्रश्नवाचक का ही रूपांतर है; संस्कृत के कः+अपि='कोपि' से हिन्दी का 'कोई' निष्पन्न हुआ है। ते॑लुगु में इसके लिए प्रश्नवाचक का ही उपयोग होता है। ఎవడు, ఎవతె, ఏది ऍवडु, ऍवतॆ, एदि के अंत में ఓ 'ओ' स्वर जोड़ कर अनिश्चितता का भाव सूचित किया जाता है, जैसे—आ పొదలో ఏవడో దాగియున్నాడు आ पो॑दलो ऍवडो दागियुन्नाडु—(उस झाड़ी में कोई आदमी छिपा बैठा है), నీ మనస్సులో ఏదో సందేహము కలిగినది नी मनस्सुलो एदो संदेहमु कलिगिनदि (तुम्हारे मन में कोई संदेह उत्पन्न हुआ है) इ०

६६. संख्यावाचक

तेलुगु व्याकरण में, संस्कृत के समान संख्यावाचक शब्दों की गिनती सर्वनामों में की गयी है। इन संख्यावचकों की यह विशेषता है, कि प्रत्येक संख्या

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के साथ महत् या अमहत् का परसर्ग लगा रहता है। इसलिए वे शब्द संख्या बोधक सर्वनाम बन जाते हैं। जैसे—ఒకడు ओॅकडु । इसके मूल संख्या-वाचक शब्द ఒక ओॅक के साथ महद्वाचक, एकवचन परसर्ग 'डु' लगा हुआ है, अत: ఒకడు ओॅकडु का अर्थ होगा—एक पुरुष। ఒకతె, ఒకతి ओॅकतॅ या ओॅकति में स्त्रीद्योतक प्रत्यय के रहने के कारण इसका अर्थ 'एक स्त्री' होगा। इसी प्रकार ఒకటి ओॅकटि से एक अमहत् प्राणि अथवा वस्तु का बोध होता है। రెండు, మూడు, నాలుగు रॅंडु, मूडु, नालुगु आदि से अमहत् वस्तुओं का बोध होता है। ఇద్దరు इद्दरु में 'रु' प्रत्यय एक से अधिक महत् या महती प्राणियों का सूचक है। अत: 'र' के योग से ముగ్గురు मुग्गुरु (तीन मनुष्य) నలుగురు नलुगुरु (चार मनुष्य), ఐదుగురు ऐदुगुरु (पांच मनुष्य) आदि शब्द बनते हैं। నలుగురు 'नलुगुरु' में నాలుగు 'नालुगु' संख्या बोधक शब्द है, 'रु' महत् लिंग का बहुवचन सूचक प्रत्यय है। किन्तु इसमें से గురు 'गुरु' को अलग विभाजित कर उसके सादृश्य Anology पर ఐదుగురు, ఆరుగురు, ఏడుగురు ऐदुगुरु, आरुगुरु, एडुगुरु आदि शब्द बनाये गये हैं। ముగ్గురు मुग्गुरु का 'गुरु' भी, नलुगुरु के सादृश्य पर ही परवर्ती काल में बना हुआ मालूम होता है, क्योंकि इसका पूर्वरूप మూవురు 'मुवुरु' है। जैसे पहले कहा गया है 'रु' महद्वाचक ब. व. प्रत्यय है, अत: 'दो कुत्ते' के अर्थ में ఇద్దరు కుక్కలు 'इद्दरु कुक्कलु' कहना गलत होगा, రెండు కుక్కలు रॅंडु कुक्कलु' कहना ठीक होगा।

क्रमवाचक :

क्रमवाचकों में మొదటి मोॅदटि का अर्थ है–पहला; दो से ले कर हर संख्या शब्द के साथ అవ 'अव' जुड़ता जाता है; जैसे–రెండవ रॅंडव (दूसरा) మూడవ मूडव (तीसरा), నాలుగవ नालुगव (चौथा), ఐదవ (पाँचवाँ) आदि। इस 'अव' से लिंग का बोध नहीं होता। अत: 'दसवाँ पुरुष' के लिए, పదియవవాడు पदियववाडु और 'दसवीं वस्तु' के लिए పదియవది 'पदियवदि' कहना पड़ेगा।

तॅलुगु के प्राचीन ग्रंथों में इस అవ 'अव' की जगह అగు 'अगु'–क्रिया विशेषण का प्रयोग है। जैसे— పదమూడగునేండు पदमूडगुनेंडु (आज का तेरहवाँ दिन)। यह अगु क्रमश: अव में बदल गया है। మూడగు> మూడవు> మూడవ मूडगु> मूडवु> मूडव। हिन्दी में संख्यावाची शब्दों के साथ पुल्लिग में वाँ तथा स्त्री लिंग में वीं जोड़ कर क्रमसूचक शब्द बनाये जाते हैं। जैसे–

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
दसवां दिन, चौदहवीं रात। हिन्दी का यह 'वां' संस्कृत के दशम, पंचम आदि शब्दों के 'म' से विकसित हुआ है।

आवृत्ति सूचक :

आवृत्ति सूचित करने के लिए हिन्दी में 'गुना' का प्रयोग होता है, जैसे–दुगुना, तिगुना, चौगुना आदि। तेॅलुगु में 'दुगुना' के लिए రెట్టింపు **'रेॅट्टिंपु'** 'तिगुना, के लिए మూడురెట్లు **मूडु रेॅट्लु**, चौगुना के लिए నాలుగురెట్లు **नालुगु रेॅट्लु** इसी ढ़ंग पर రెట్లు **रेॅट्लु'** के प्रयोग से आवृत्तिवाचक शब्द बनते हैं। రెట్లు 'रेॅट्लु' में రెట్టు **रेॅट्टु'** का मूल अर्थ दुगुना है जो రెండు **रेॅंडु** (दो) शब्द से बना है। अत: ఆరురెట్లు **'आरु रेॅट्लु'** का शाब्दिक अर्थ होना चाहिए 'छे दुगुना' परंतु రెట్టు **'रेॅट्टु' गुना** के अर्थ में रूढ हो गया है, इस कारण ఆరురెట్లు **'आरु रेॅट्लु'** का अर्थ 'छ: गुना' ही होता है।

दोनों, तीनों, चारों–आदि समुदायवाचक शब्दों के लिए तेॅलुगु में ను नु समुच्चय सूचक शब्द का उपयोग होता है। यथा—**दोनों =** ఇద్దరును **इद्दरुनु** (महत् लिंग), రెండును **रेॅंडुनु** (अमहत् लिंग), **तीनों =** ముగ్గురును **मुग्गुरुनु** अथवा మూడును **मूडुनु** इ०

६७. सर्वनामों की रूप-रचना :

भाषाशास्त्रज्ञों का कथन है कि प्राकृतों के विकास के उत्तरार्थ में प्रा० भा० आ० भाषा के संश्लिष्ट रूपों के नष्ट होने से, अर्थबोध के लिए स्वतंत्र शब्दों को जोड़ कर योगात्मक रीति से नये कारक-रूप बनाने की रीति चल पड़ी थी और उसका आरंभ सर्वनाम को ले कर हुआ। क्योंकि भाषा में सर्वनामों का अधिकाधिक उपयोग होता है। जैसे पहले कहा गया है वर्तमान समय के कारक-परसर्ग मूल में स्वतंत्र शब्द थे। प्राचीन भाषा के संश्लिष्ट शब्दों में जो संबंधार्थक रूप बचे हुए थे, उनके साथ नये कारक शब्दों को जोड़ कर रूप-रचना की जाने लगी। **'मह्यं'** के प्राकृत रूप–**'मुज्झं'** या **'मज्झ'** के साथ नये कारक शब्द और परसर्ग जुड़ कर वर्तमान समय के–मुझको, मुझसे, मुझमें आदि रूप निष्पन्न हुए हैं। **'मुझ'** और **'तुझ'** के संबंधार्थक प्रयोगों के उदाहरण प्राचीन बोलियों में यत्रतत्र मिल जाते हैं।[१] इसी प्रकार अन्य

---

१. मुहम्मद कुली कुतुबशाह की यह कविता ध्यान देने योग्य है।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वनामों के संबंध में भी यह कहा जा सकता है कि उनकी रूप-रचना परवर्ती काल में उपर्युक्त योगात्मक रीति पर होती आयी है। तेलुगु तथा अन्य देशी भाषाओं में इस रचना का साम्य दिखाई देता है। विकास के मध्यवर्ती रूपों का निर्धारण ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर संभव हो सकता है।

६८. सर्वनामों के विकारी रूप :

सर्वनाम		विकारी रूप	
నేను	नेनु (मैं)	నా	ना (मुझ)
నీవు	नीवु (तू)	నీ	नी (तुझ)
వాడు	वाडु (वह)	వాని	वानि (उस)
వీడు	वीडु (यह)	వీని	वीनि (इस)
ఎవడు	ऍवडु (कौन)	ఎవని	ऍवनि (किस)
ఆమె	आमें (वह–स्त्री० लिं०)	ఆమె	आमें (उस–स्त्री० लिं०)
ఈమె	ईमें (यह–स्त्री० लिं०)	ఈమె	ईमें (इस–स्त्री० लिं०)
ఎవతె	एवतें (कौन-स्त्री० लिं०)	ఎవతి	ऍवति (किस–स्त्री० लिं०)
అది	अदि (वह नपुं० लिं०)	దాని	दानि (उस–नपुं० लिं०)
ఇది	इदि (यह–नपुं० लिं०)	దీని	दीनि (इस–नपुं० लिं०)
ఏది	एदि (कौन–नपुं० लिं०)	దేని	देनि (किस–नपुं० लिं०)
మేము	मेमु (हम)	మా	मा (हम)

"तुम बिनु रहा न जावे, अन्न नीर कुज न भावे,
विरहा किता सतावे, मन सेति मन मिला दो ।।

उनींदी हैं मुज नयन, तुज याद सेती,
कहो तुम नयन में है काँ की खुमारी ।।

संपूरन है तुम जोत सों सब जगत,
नहीं खाली है, नूर थें कोई शै।"

—हिन्दी की गद्य-शैली का विकास पृ. ७

२. दोहा: सुनहु महीपति मुकुटमणि **तुजसम** धन्य न कोइ।

तुलसीरामायण: बालकाण्ड

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

మనము	मनमु (हम–अपन)	మన	मन (हम–अपन)
మీరు	मीरु (तुम)	మీ	मी (तुम्ह)
తమరు	तमरु (आप)	తమ	तम (आप)
వారు	वारु (वे)	వారి	वारि (उन)
వీరు	वीरु (ये)	వీరి	वीरि (इन)
ఎవరు	ऍवरु (कौन–महत्-ब. व)	ఎవరి	ऍवरि (किन–महत् ब० व०)
అందరు	अंदरु (सब–महत्-ब व)	అందరి	अंदरि (सब–महत् ब. व)
ఇందరు	इंदरु (ये सब–,, ,,)	ఇందరి	इंदरि (इन सब– ,,)
ఎందరు	ऍंदरु (कितने ,, ,,)	ఎందరి	ऍंदरि (कितनों ,, ,,)
కొందరు	कॊंदरु (कुछ– ,, ,,)	కొందరి	कोंदरि (कुछ ,, ,,)
అవి	अवि (वे–नपुं० ब. व)	వాని	वानि (उन–नपुं० ब. व)
ఇవి	इवि (ये– ,, ,,)	వీని	वीनि (इन–नपुं० ब. व)
ఏవి	एवि (कौन–नपुं ब. व)	వేని	वेनि (किन–नपुं० ब. व)
అన్ని	अन्नि (उतने–नपुं ब. व)	అన్నిటి	अन्निटि (उतनों–,, ,,)
ఇన్ని	इॅन्नि (इतने– ,, ,,)	ఇన్నిటి	इन्निटि (इतनों–,, ,,)
ఎన్ని	ऍन्नि (कितने– ,, ,,)	ఎన్నిటి	ऍन्निटि (कितनों–,, ,,)
కొన్ని	कॊन्नि (कुछ– ,, ,,)	కొన్నిటి	कॊन्निटि (कुछ– ,, ,,)

నా, నీ, మీ, మా **ना, नी, मी, मा,** आदि सार्वनामिक विकारी रूपों का प्रयोग तेलुगु में, संबंधकारक के अर्थ में आज भी होता है, यद्यपि हिन्दी में मुझ तुझ, उन्ह, इन्ह आदि का संबंधार्थक प्रयोग वर्तमान समय में नहीं रहा। उदा०— నా పని **ना पनि** (मेरा काम), నీ పేరు **नी पेरु** (तेरा नाम), మీ ఇల్లు, **मी इल्लु** (तुम्हारा घर), మా దేశము **मा देशमु** (हमारा देश), आदि। अन्य कारक परसर्ग इन्हीं विकारी रूपों के साथ जुड़ते हैं। यथा— నాతో **नातो** (मेरे साथ), నీ కొఱకు **नी कॊरकु** (तेरे लिए), మీ వలన **मी वलन** (तुम से), మాపై **मापै** (हम पर) इ०।

६९. सार्वनामिक विकरण (Pronominal Themes)

तॆलुगु में सर्वनामों के अंत्याक्षर विकरणों (परसर्गों) के रूप में काम आते हैं, जो अन्य शब्दों में जुड़कर भिन्न-भिन्न शब्दावली की रचना करते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्तम पुरुष एक वचन : सर्वनाम—	నేను नेनु —	विकरण	ను नु
,, ,, ब० व० ,,	మేము मेमु	,,	ము मु
मध्यम पुरुष एक वचन ,,	నీవు नीवु	,,	వు वु
,, ,, ब० व० ,,	మీరు मीरु	,,	రు रु
अन्य पुरुष ए० व० पुं० लिं० ,,	వాడు वाडु	,,	డు डु
,, ,, ब० व० ,, ,,	వారు वारु	,,	రు रु
,, ,, ए० व० स्त्री लिं० ,,	అది अदि	,,	ది दि
,, ,, ब० व० ,, ,,	వారు वारु	,,	రు रु
,, ,, एव न० पुं० लिं० ,,	అది अदि	,,	ది दि
,, ,, ब० व० ,, ,,	అవి अवि	,,	వి वि

७०. सार्वनामिक विकरणों से विशेष रचना :

तेॅलुगु और अन्य द्राविड भाषाओं की यह विशेषता है कि इन सार्वनामिक प्रत्ययों के योग से विशेष प्रकार के, संज्ञा, विशेषण, क्रिया तथा क्रिया विशेषण आदि शब्दों की रचना होती है जो पूर्ण अर्थ–द्योतक वाक्यों के समान प्रयुक्त होते हैं। कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

(अ) संज्ञा के साथः

ఇంటి + ది = ఇంటిది इंटि + दि = **इंटिदि** (घर की कोई वस्तु अथवा स्त्री)
ఇంటివాడు + ను = ఇంటివాడను इंटिवाडु + नु = **इंटिवाडनु** (घर वाला हूँ मैं),
పనివారు + ము = పనివారము पनिवारु + मु = **पनिवारमु** (काम वाले हैं हम);
'इंटिवाडु' अर्थ की दृष्टि से 'घर का स्वामी पुरुष' है, यह विशेषण बन जाता है, साथ-साथ—"मैं इस घर का आदमी हूँ" इस अर्थ का पूर्ण वाक्य भी बनता है। इसी प्रकार—ఇంటివారము इंटिवारमु (हम घर के स्वामी हैं); కవిని कविनि (मैं कवि हूँ); తండ్రివి तंड्रिवि (तुम पिता हो) पूर्ण-अर्थ-द्योतक शब्दों की रचना होती है।

हिन्दी में 'घरवाला', 'गाड़ीवाला, 'लकड़हारा' आदि शब्दों का वाला या हारा तेॅलुगु के వాడు वाडु के समान संबंध द्योतक प्रत्यय है। किन्तु इसकी उत्पत्ति सर्वनाम से नहीं हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(आ) **विशेषणों के साथ :**

మంచి + వి = మంచివి **मंचि + वि = मंचिवि** (अच्छी वस्तुएँ हैं); చెడువాడు + వు = చెడువాడవు चें`डुवाडु + वु = चें`डुवाडवु (बुरे आदमी हो तुम), ఇంతవాడను **इंतवाडनु** (इतना इस परिमाण का आदमी हूँ मैं)।

(इ) **क्रिया के साथ :**

ఉండు + ను = ఉందును उंदु + नु = उंदुनु (रहूँगा); తినెదము **तिनें`दमु** (हम खायेंगे), చేసినాడు **चेसिनाडु** (किया हुआ वह या उसने किया); చూతు + వు = చూతువు चू.तु + वु = चू.तुवु (देखोगे तुम)। तें`लुगु के प्रायः सभी क्रिया पदों के अंत में सार्वनामिक विकरण या प्रत्यय दिखाई देते हैं।

(ई) **क्रिया विशेषण के साथ :**

ఎప్పటివాడు + వు . ఎప్పటి వాడవు ऍप्पटिवाडु + वु = **ऍप्पटिवाडवु** (कब के आदमी हो तुम); లోపలి వాడను **लोपलि वाडनु** (अन्दर का आदमी हूँ मैं); అట్టివి **अट्टिवि** (**वैसी हैं वस्तुएँ**)।

महद्वाचक सार्वनामिक विकरण या प्रत्यय—ను, ము, వు, రు, డు, संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया–विशेषण शब्दों के साथ వాడు **वाडु** या వారు **वारु** की सहायता से ही जोड़े जा सकते हैं; बिना वाडु या वारु के इनका योग नहीं होता।[१]

७१. हिन्दी के 'ऐसा', 'वैसा', 'कैसा' आदि सार्वनामिक विशेषण उनसे संबंधित विशेष्य के अनुसार बदलते हैं, जैसे—कैसा आदमी, कैसी बात कैसे मकान में। तें`लुगु में ऐसा परिवर्तन नहीं होता। यथा—ఎట్టి మనిషి, ఎట్టి మాట, ఎట్టి ఇంటిలో **ऍट्टि मनिषि, ऍट्टि माट, ऍट्टि इंटिलो**।

---

१. परंतु 'डु' से युक्त थोड़े से गुणवाचक विशेषणों के उदाहरण प्राचीन भाषा में मिलते हैं। उदा० అట్టిండు **अट्टिंडु** (वैसा पुरुष), ఎట్టిండు **ऍट्टिंडु** (कैसा पुरुष, संभवतः इन शब्दों में వాండు 'वांड्' लुप्त हो गया है, जैसे—అట్టి + వాండు = అట్టిండు **अट्टि + वांडु = अट्टिवांडु > अट्टिंडु**, ఎట్టి వాండు > ఎట్టిండు **एट्टिवांडु > ऍट्टिंडु इ०**

ఆంధ్రభాషానుశాసనము. పే, 68. **आन्ध्रं भाषानुशासनमु पृ. ६८**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७२. उतना, इतना, कितना–हिन्दी के परिमाण वाचक विशेषण हैं। तेॅलुगु में इनके पर्याय हैं–అంత, ఇంత, ఎంత अंत, इंत, ऍंत। विशेष्य के लिंग और वचन के कारण हिन्दी के शब्दों में जो परिवर्तन होता है वह तेॅलुगु में नहीं होता। उदा० इतना समय = ఇంత సమయము **इंत समयमु**; इतनी मेहनत = ఇంతశ్రమ **इंतश्रम**; इतने समय में = ఇంత సమయములో **इंत समयमुलो**।

७३. इतने, उतने, कितने—के तेॅलुगु पर्यायों में महत् और अमहत् के विचार से पृथक-पृथक रूप पाये जाते हैं; जैसे—

उतने = అందరు अंदरु (महत्)—అన్ని अन्नि (अमहत्)
इतने = ఇందరు इंदरु (,,)—ఇన్ని इन्नि (,,)
कितने = ఎందరు ऍंदरु (,,)–ఎన్ని ऍन्नि (,,)
इतने आदमी = ఇందరు మనుష్యులు **इंदरु मनुष्युलु**
इतने गाँव = ఇన్ని ఊళ్ళు **इन्नि ऊळ्ळु**
उतने लड़के = అందరు బాలురు **अंदरु बालुरु**
उतने दिन = అన్ని దినములు **अन्नि दिनमुलु**
कितने सैनिक = ఎందరు సైనికులు **ऍंदरु सैनिकुलु**
कितने घोड़े = ఎన్ని గుఱ్ఱములు **ऍन्नि गुर्रमुलु**

७४. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'सब', तथा परिमाण और संख्यावाचक विशेषणों के तेॅलुगु पर्याय एक ही रूप में दिखाई देते हैं। जैसे :

अनिश्चयवाचक सर्वनाम	**परिमाण और संख्यावाचक विशेषण**
सब = అంత अंत (अमहत् पदार्थ)	उतना = అంత अंत (अमहत् पदार्थ)
सब = అన్ని, అన్నియు अन्नि, अन्नियु (अमहत्-संख्या)	उतने = అన్ని (अमहत् वस्तुएँ)
सब = అందరు, అందరును अंदरु, अंदरुनु (महत्-महती)	उतने = అందరు अंदरु (महत्-महती संख्या)

७४. तत्सम सर्वनाम :

संस्कृत के सर्वनाम–सर्व, उभय, इतर और अन्य का प्रयोग तेॅलुगु में भी होता है। लिंग और वचन के अनुसार उनके रूप नीचे दिये जाते हैं :—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

సర్వము **सर्वमु** = सब कुछ (अमहत् ए० व०)

ఉభయులు **उभयुलु** = दोनों (महत् ब० व०)

ఇతరుడు **इतरुडु** = दूसरा मनुष्य (महत् ए० व०)

ఇతరులు **इतरुलु** = दूसरे मनुष्य (महत् ब० व०)

ఇతరము **इतरमु** = दूसरा कुछ (अमहत् ए० व०)

అన్యుడు **अन्युडु** = पराया मनुष्य (महत् ए० व०)

అన్యులు **अन्युलु** = दूसरे मनुष्य (महत् ब० व०)

అన్యము **अन्यमु** = दूसरा कुछ (अमहत् ए० व०)

विशेषण

७६. हिन्दी के आकारांत विशेषणों में विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तन होता है; जैसे—अच्छा मकान, अच्छी दीवार, अच्छे कमरे। संस्कृत के सभी विशेषण, विशेष्य के लिंग वचन और कारक में प्रयुक्त होते हैं। तेलुगु के मूल विशेषणों में लिंग नहीं है, अतः उनमें परिवर्तन नहीं होता। उदा० మంచిబాలుడు **मंचि बालुडु** (अच्छा लडका) మంచిబాలిక **मंचि बालिक** (अच्छी लड़की), మంచి ఇంటిలో **मंचि इंटिलो** (अच्छे मकान में), తియ్యని పండ్లు **तिय्यनि पंड्लु** (मीठे फल)। तत्सम विशेषणों में कम परिवर्तन देखा जाता है, जैसे—ప్రియుడైన సఖుడు **प्रियुडैन सखुडु** (प्रिय सखा), ప్రియురాలైన ఆడది **प्रियुरालैन आडदि** (प्रिय स्त्री), ప్రియమైన మాట **प्रियमैन माट**) (प्रिय वचन) इ०

७७. विधेय विशेषण :

हिन्दी के समान तेॅलुगु में भी विधेय विशेषणों का प्रयोग होता है। जैसे--బాలుడు చిన్నవాడు **बालुडु चिन्नवाडु** (बालक छोटा है), నేను మంచివాడను **नेनु मंचिवाडनु** (मैं अच्छा आदमी हूँ), ఈ పండు తియ్యనిది **ई पंडु तिय्यनिदि**। (यह फल मोठा है)। परन्तु तेॅलुगु के इन विधेय विशेषणों के साथ सार्वनामिक प्रत्यय अवश्य जुड़ता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७८ विशेषणों की रचना--

दया, भय, क्रोध और करुणा—जैसी तत्सम संज्ञाओं में కల **कल** या గల **गल** प्रत्यय जोड़ कर तथा कठिन, सुलभ, जैसे तत्सम विशेषणों में ऐन అగు **ऐन**, अगु जोड़ कर विशेषण बनाये जाते हैं। जैसे— దయగల మనిషి **दयगल मनिषि** (दयालु मनुष्य), కఠినమైన పని **कठिनमैन पनि** (कठिन कार्य), సులభమైన పద్యము **सुलभमैन पद्यमु** (सुलभ पद्य) इ.

गुण के अभाव को भी सूचित करने वाला सामर्थ्य ते॑लुगु के विशेषणों में पाया जाता है। जैसे—భయములేని బాలుడు **भयमुलेनि बालुडु** (भय रहित बालक) చేతగాని పని **चेतगानि पनि** (अशक्य कार्य), కొఱగాని కొడుకు **को॑रगानि को॑डुकु** (प्रयोजन विहीन पुत्र)

७९. हिन्दी की कुछ संज्ञाओं में--एरा, आलू, आड़ी, ऊ, ऐला, ईला—आदि प्रत्ययों के जोड़ने से विशेषण बनते हैं। यथा–मामा-ममेरा, झगड़ा-झगडालू, खेल-खिलाड़ी, बाजार-बाजारू, वन-वनैला, रस-रसीला इ०

८०. ते॑लुगु में संबंध कारक का बोध कराने वाला, संज्ञा का विकारी रूप विशेषण के समान भी प्रयुक्त होता है, जैसे—రాతి గోడ **राति गोड** (पथरीली दीवार), ఇనుప తలుపు **इनुप तलुपु** (लोहे की किवाड़) इ०

८१. ते॑लुगु में बहुत से शब्द एक साथ संज्ञा तथा विशेषण दोनों का काम देते हैं। जैसे--

शब्द	संज्ञा के रूप में	विशेषण के रूप में
తడి तडि (गीला)	బట్టతడి **बट्ट तडि** (कपड़े का गीलापन)	తడిబట్ట **तडिबट्ट** (गीला कपड़ा)
చేదు चेदु (कड़ुआ)	నోటిచేదు **नोटि चेदु** (मुँह का कड़ुवापन)	చేదుకాయ **चेदुकाय** (कडुआ फल)
పొడుగు पो॑डुगु (लंबा)	మనిషి పొడుగు **मनिषि पोडुगु** (आदम कद)	పొడుగు మనిషి **पो॑डुगु मनिषि** (लंबा आदमी)
తీపి तीपि (मीठा)	చెఱకు తీపి **चे॑र्कुतीपि** (गन्ने की मिठास)	తీపి చెఱకు **तीपि चे॑र्कु** (मीठा गन्ना)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

బరువు बरुवु (भार) గాడిద బరువు गाडिद बरुवु బరువు పెట్టె
(गधे का बोझा) (भारी पेटी)

८२· तरतम भाव

हिन्दी तथा तॆलुगु के विशेषणों में संस्कृत के विपरीत तारतम्य सूचक प्रत्यय नहीं लगते। दोनों ही भाषाओं में तुलना के लिए अपादान कारक की सहायता ली जाती है। इस प्रकार के प्रयोग से केवल तर का भाव व्यक्त होता है। जैसे—राम से लक्ष्मण छोटा था రాముని కన్న లక్ష్మణుడు చిన్నవాడు (रामुनि कन्न लक्ष्मणुडु चिन्नवाडु)। परन्तु तम भाव (सर्वाधिक्य) के लिए 'सब से' का सहारा लेना पड़ता है। जैसे—हिमालय सबसे ऊँचा पर्वत है హిమాలయము అన్నిటి కన్న ఎత్తైన పర్వతము (हिमालयमु अन्निटिकन्न ऍत्तैन पर्वतमु)

८३. संख्या शब्दः

हिन्दी में संख्यावाचक शब्द विशेषण माने जाते हैं। पाँच से ले कर ऊपर की संख्याओं में, वाँ, वें, वीं जोड़ने से क्रम-सूचक विशेषण बनते हैं। जैसे—पाँचवाँ, दसवाँ इ०। हिन्दी की गिनती तॆलुगु से बिककुल भिन्न है। तॆलुगु की अपेक्षा वह क्लिष्ट है। दस से ऊपर की संख्याओं में पहला स्थान इकाई सूचक शब्द का होता है, फिर दहाई का शब्द आता है, जैसे—चौबीस। इसमें 'चौ' से इकाई का और 'बीस' से दहाई का बोध होता है। इसी तरह 'अड़तीस' का अर्थ होता है, तीन दस की पूर्ण संख्या और आठ। तॆलुगु के संख्यावाचक शब्दों की रचना इससे भिन्न है। उसमें दहाई सूचक शब्द पहले आता है, उसके बाद इकाई सूचक शब्द। जैसे—ఇరవైయైదు इरवैयैदु। इसमें ఇరవై इरवै—बीस है और ఐదు ऐदु—पाँच है। अर्थात्—बीस पर पाँच। किंतु ఇరువది इरुवदि (बीस) ముప్పది मुप्पदि (तीस) आदि में, तथा संस्कृत के विंशति, त्रिंशति, आदि में इकाईवाला शब्द पहले आता है बाद को दहाईवाला, फिर भी हिन्दी के उन्नीस, उन्तीस, पौने पाँच, सवा, डेढ़, ढ़ाई आदि में जो घुमाव हैं वह तॆलुगु में नहीं है।

क्रिया

८४. : रूप रचना :

हिन्दी क्रिया के विभिन्न कालों का विकास संस्कृत से भिन्न हो गया है और प्राकृतों की अपेक्षा अधिक नवीनता लिए हुए है। वैदिक भाषा में लट्

लिट्, लङ्, लिङ् आदि दस प्रकार का काल भेद पाया जाता है। एक एक लकार के छे प्रयोग, तीन वचन और तीन पुरुषों में अलग-अलग रूप बनते हैं। फिर प्रत्येक धातु के भिन्न-भिन्न रूप समान रीति से बनते भी नहीं। विकरणों के आधार पर समस्त धातुओं को दस गणों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक गण की रचना अलग प्रक्रिया से की जाती है। संस्कृत क्रिया की यह क्लिष्ट रचना आर्येतर भाषा-भाषी जनता के संपर्क के प्रभाव से क्रमशः सरल बनती गयी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राकृत दशा में द्विवचन, बहुवचन में मिल गया। गणों का भेद मिट कर सभी गणों में भ्वादि गण के समान रूप चलने लगे। आत्मनेपद और परस्मैपद का अंतर दूर हो गया। कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, तथा प्रेरणार्थक तीन ही प्रयोग शेष रहे। कालों की संख्या भी घट गयी। केवल वर्तमान, भविष्य, प्रार्थना और विधि---ये चार काल ही बच गये। इस प्रकार क्रिया-रूपों में कमी होने से विविध अर्थों को व्यक्त करने में गड़बड़ी होने लगी। ऐसी दशा में कृदंतों की सहायता से नये ढंग की काल-रचना चल पड़ी। यह नयी रीति अपभ्रंशों में विकसित हुई। प्रा० भा० आ० भाषा की क्रिया संश्लिष्ट थी, परन्तु अपभ्रंश में जो नयी रीति प्रचलित हुई वह बहुत अंश तक योगात्मक (Agglutinative) कही जा सकती है। वर्तमान हिन्दी के पंद्रह कालों में से केवल तीन में प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के (तिङ) रूपों का विकास मिलता है।[१]

कृदंत रीति का अवलंबन :

प्रा० भा० आ० भाषा के भूतकाल में **'गम्'** धातु से--- **अगच्छत्** (लङ्) **जगाम** (लिट्) तथा **अगमत्** (लुङ्)—तीन रूप बनते हैं। प्राकृत में इनकी जगह भूतकालिक कृदंत—"गतः" का प्रयोग प्रचलित हुआ। इसमें द्राविड-क्रिया की रूप रचना की अनुकृति दिखाई देती है। द्राविड परिवार की समस्त भाषाओं में क्रियापद कृदंतों से बनते हैं। 'स गतः' का तेलुगु में पर्याय పోయినాడు, **'पोयिनाडु'**

---

१. (i) आज्ञार्थक :---तू चल, तुम चलो, वह चले आदि। (ii) संभाव्य भविष्यत्—मैं चलूं, हम चलें आदि। (iii) सामान्य भविष्यत्—मैं चलूंगा, तू चलेगा आदि।

—धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का विकास पृष्ठ २८०, ३०३

है, जिसमें CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. [illegible] 'वाडु'—
''वह'' का सार्वनामिक रूप है, పోయినవాడు > పోయినాడు (पोयिनवाडु > पोयिनाडु)। 'पोयिनाडु' और 'स गतः' दोनों, 'अगच्छत्', 'जगाम' और 'अगमत्' के समान भूतार्थ द्योतक प्रयोग हैं।[1] इसी प्रकार वर्तमानकाल के लिए भी, तिङ् रूपों के बदले वर्तमान कालिक कृदंत वाली रचना चलने लगी। इस क्रम का आरम्भ संस्कृत में हो चुका था, किन्तु प्राकृत और अपभ्रंश में इसका प्रयोग विस्तृत हुआ। 'किं यूयं कृतवन्तः ?'—(तुम क्या करने वाले बनते हो ?) 'किं यूयं पक्ववन्तः?' (तुम क्या पकाने वाले बनते हो अर्थात् तुम क्या पकाते हो ?) 'कुर्वन् आसीत्' (करता हुआ बन गया अर्थात् करता था) इत्यादि अनेक प्रयोग जो संस्कृत में मिलते हैं वे इस नयी कृदंत-रचना के द्योतक हैं। तेलुगु में वर्तमान काल भी उपर्युक्त 'कुर्वन्तः' के सदृश कृदन्त-रचना है, చేయుచున్న + వారు > చేయుచున్నారు चेयुचु.न्न + वारु > चेयुचु. न्नारु। इस 'चेयुचुन्नवारु' में चेयुचु. न्न वर्तनाम कालिक कृदन्त है ఆరు 'आरु' या వారు 'वारु' वे का सार्वनामिक प्रत्यय है। ''गतः'', ''चलितः'', ''कृतवान्'', ''पक्त्रवन्तः'' आदि शब्द क्रियाजन्य विशेषण जैसे हैं, इसलिए पूर्णक्रिया का बोध कराने के लिए, ''अस्'' या ''भू'' धातुएँ भी सहायक के रूप में जोड़ी जाने लगीं। इस प्रकार की कृदन्त-रचना के अतिरिक्त, प्राकृतों तथा परवर्ती संस्कृत में, संयुक्त क्रिया, ध्वन्यनुकरणात्मक क्रिया तथा स्वतंत्र देशी क्रियापद के नवीन अंश दृष्टिगोचर होते हैं।

८५. तेलुगु क्रिया से साम्य :

प्राकृत और अपभ्रंश की अपेक्षा हिन्दी के क्रियापद तेलुगु से अधिक साम्य रखते हैं। उदा० जा + ता + हूँ = పోవు + చు + ఉన్నాను पोवु + चु. + उन्नानु जा + ता + था = పోవు + చు + ఉంటిని पोवु + चु. + उंटिनि; गया + हूँ =

---

(१) दे० (i) "One is, therefore, justified in suspecting that certain details of the Grammar and the style of Indo-Aryan, even ancient, are due to the Dravidian influence; that appears to be evident, for example, in the case of the absolutive."

--Jules Bloch : "The Grammatical structure of Dravidian Languages"--p. 126.

(ii) "Linguistic Survey of India"

--G. A. Grierson, Vol. IV. P, 289-283.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

పోయి + ఉన్నాను पोयि + उन्नानु; जा + ता + हूँगा = పోవు + చు + ఉండును पोवु + चु. + उंडुनु। दोनों भाषाओं के इन क्रियापदों की रचना कृदन्तों से हुई है।[1]

हिन्दी के निम्नलिखित सात कालों में से, प्रथम तीन में वर्तमान कालिक तथा शेष चार में भूत कालिक कृदन्तों का उपयोग हुआ है। तेलुगु के साथ इन रूपों की समानता ध्यान देने योग्य है।

(१) सामान्य वर्तमान (हिं०) चल + ता + है = चलता है।
(तें०) పోవు + చు + ఉన్నాడు = పోవుచున్నాడు
पोवु + चु. + उन्नाडु = पोवुचु.न्नाडु

(२) अपूर्ण भूत (हिं०) चल + ता + था = चलता था
(तें०) పోవు + చు + ఉండెను = పోవుచుండెను
पोवु + चु. + उंडेॅनु = पोवुचं.डे नु

(३) संदिग्ध वर्तमान (हिं०) चल + ता + होगा = चलता होगा
(तें०) పోవు + చు + ఉండును = పోవుచుండును
पोवु + चु. + उंडुनु = पोवुचुंडुनु

(४) सामान्य भूत (हिं०) चलि + आ = चल्या > चला।
(तें०) పోయిన + వాడు = పోయినాడు
पोयिन + वाडु = पोयिनाडु

(५) आसन्न भूत (हिं०) चलि + आ + है = चला है
(तें०) పోయి + ఉన్న + వాడు = పోయిఉన్నాడు
पोयि + उन्न + वाडु = पोयि उन्नाडु

(६) पूर्णभूत (हिं०) चलि + आ + था = चला था

---

१. तेॅलुगु के क्रियापदों में भिन्न भिन्न पुरुष और वचनों के सर्वनामपद सम्मिलित हुए रहते हैं। खड़ी बोली क्रिया में यह बात नहीं है। मागधी अपभ्रंश से विकसित भोजपुरी, मैथिली, बंगला आदि में द्राविड भाषा के समान ही क्रियापद सार्वनामिक प्रत्यय लिये हुए होते हैं। उदा: मारिल + आम = मारिलाम (मारा + मैंने)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(तें०) పోయి + ఉండిన + వాడు = పోయిఉండినాడు;
(పోయిఉంటేను)

पोयि + उंडिन + वाडु = पोयि उंडिनाडु;
(पोयि उंडे`न्)

(७) संदिग्ध भूत (हिं०) चलि + आ + होगा = चला होगा
(तें०) పోయి + ఉండును = పోయిఉండును
पोयि + उंडुनु = पोयिउंडुनु

इनके अलावा पाँच काल और खड़ी बोली में प्रयुक्त होते हैं। उनकी भी रचना कृदन्तों से ही होती है, किन्तु तें`लुगु में उनकी गणना काल के रूप में नहीं होती। अव्यय आदि शब्दों की सहायता से उनका अर्थभेद व्यक्त किया जाता है। जैसे—

(८) हेतु हेतुमद् भूत	(यदि)	मैं चलता, हम चलते, तू चलता।
(९) पूर्ण हेतुहेतुमद् भूत	(यदि)	मैं चला होता, हम चले होते।
(१०) हेतुहेतुमद् वर्तमान	(यदि)	मैं चलता होता, हम चलते होते।
(११) संभाव्य वर्तमान		मैं चलता होऊँ, हम चलते हों।
(१२) संभाव्य भूत		मैं चला होऊँ, हम चले हों।
(१३) संभाव्य भविष्यत्		मैं चलूँ, हम चलें।

८६. नामधातु :

संस्कृत, अरबी, फ़ारसी आदि भाषाओं की संज्ञाओं में, कर, दे, ले, आदि धातुओं को जोड़कर हिन्दी में नाम धातुएँ बनायी जाती हैं। जैसे – पूजा करना, मान देना, जवाब देना इ०। ये संज्ञाएँ क्रिया का अंश बनकर पूर्ण-क्रिया के रूप में प्रयुक्त नहीं होतीं, अर्थात् ये शब्द धातुओं का रूप ग्रहण नहीं करते। जैसे—मैं देवता की पूजा करता हूँ, तुम्हारी बात का जवाब उसने नहीं दिया, बड़ों का आदर करो—इन वाक्यों में संज्ञाएँ संबंधकारक की सहायता से अन्य शब्दों के साथ जुड़ी हुई हैं। परन्तु तें`लुगु में, तत्सम संज्ञा, विशेषण आदि शब्द ఇంచు इंचु. या ఇల్లు इल्लु से जुड़कर पूर्ण क्रिया के रूप में बदल जाते हैं। ఇల్లు इल्लु केवल अकर्मक क्रियाओं में लगता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उदा०— गौरव	గౌరవించు	गौरविंचु.
पूजा	పూజించు	पूजिंचु.
चिंता	చింతిల్లు, చింతించు	चिंतिल्लु, चिंतिंचु.
शप	శపించు	शपिंचु.
स्वतंत्र	స్వతంత్రించు	स्वतंत्रिंचु.
भास	భాసిల్లు	भासिल्लु
शोभ	శోభిల్లు	शोभिल्लु
विलस	విలసిల్లు	विलसिल्लु

इन प्रयोगों में सकर्मक क्रियाओं का संबंध सीधे कर्म शब्द से होता है, **जैसे**—నేను దేవుని పూజించుచున్నాను नेनु देवुनि पूजिंचुचुन्नानु (मैं देव को पूजा करता हूँ) పెద్దలను గౌరవించుము पेद्दलनु गौरविंचुमु (बड़ों को आदर करो)

६०। अवधी ब्रज आदि बोलियों में दर्शाना, पूजना, स्वीकारना, धिक्कारना आदि तत्सम क्रियाएँ बड़ी संख्यामें प्रयुक्त होती थी, किन्तु खड़ी बोली में यह रचना-रीति रुक-सी गयी। उपर्युक्त क्रियापदों के स्थान में दर्शन कराना, पूजा करना, स्वीकार करना, धिक्कार करना—आदि रूप ही प्रचलित हो गये। गरमाना, शर्माना, आलापना, दुखाना, गाँठना, झगड़ना हथियाना, बतियाना, लतियाना आदि कुछ तद्भव नामधातुएँ भी हिन्दी में प्रचलित हैं।

८७. तत्सम क्रिया धातुएँ :

संस्कृत तथा प्राकृतों से जो सैकड़ों धातुएँ तेलुगु में आयी हैं वे अधिकांश में तत्सम रूप में ही प्रयुक्त होती हैं, उनमें केवल इंचु. या इल्लु का योग होता है। वैयाकरणों ने संस्कृत से नये नये शब्द उधार लेने की प्रवृत्ति पर प्रतिबंध लगा दिया है। उनके अनुसार पूर्वकवि-प्रयुक्त शब्द ही साहित्य में साधु माने जाएँगे।

संस्कृत की संज्ञा, क्रिया तथा विशेषण आदि से बनी, तेलुगु में प्रचलित कुछ क्रियाओं की सूची नीचे दी जाती है। ये क्रियाएँ पूर्ण-क्रिया पदों के रूप में ही प्रयुक्त होती हैं :—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(अ) संज्ञाओं से :

स्तुति	స్తుతించు स्तुतिचु.	संतोष	సంతోషించు संतोषिचु.
नुति	నుతించు नुतिचु.	अनुमान	అనుమానించు अनुमानिचु.
सुख	సుఖించు सुखिचु.	पुलक	పులకించు पुलकिचु.
दु:ख	దుఃఖించు दु:खिचु.	परीक्षा	పరీక్షించు परीक्षिचु.
सेवा	సేవించు सेविचु.	प्रेम	ప్రేమించు प्रेमिचु.
ध्यान	ధ్యానించు ध्यानिचु	द्वेष	ద్వేషించు द्वेषिचु.
कोप	కోపించు कोपिचु.	प्रयोग	ప్రయోగించు प्रयोगिचु.
श्रृंगार	శృంగారించు श्रृंगारिचु.	निद्रा	నిద్రించు निद्रिचु.
विक्रय	విక్రయించు विक्रयिचु.	मरण	మరణించు मरणिचु.
गर्व	గర్వించు गर्विचु.	प्रसाद	ప్రసాదించు प्रसादिचु.
कष्ट	కష్టించు कष्टिचु.	शिक्षा	శిక్షించు शिक्षिचु.
शयन	శయనించు शयनिचु.	संदेह	సందేహించు संदेहिचु.
विरोध	విరోధించు विरोधिचु.	ध्वनि	ధ్వనించు ध्वनिचु.
प्रसंग	ప్రసంగించు प्रसंगिचु.	पुष्प	పుష్పించు पुष्पिचु.

(आ) धातुओं से :

त्यज्	త్యజించు त्यजिचु.	गण्	గణించు गणिचु.
नश्	నశించు नशिचु.	गुण्	గుణించు गुणिचु.
तप्	తపించు तपिचु.	वस्	వసించు वसिचु.
जय	జయించు जयिचु.	घट्	ఘటిల్లు घटिल्लु
वर्ध्	వర్ధిల్లు वर्धिल्लु	हर	హరించు हरिचु.
शोभ्	శోభిల్లు शोभिल्लु	स्मर्	స్మరించు स्मरिचु.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भ्रम्	భ్రమించు भ्रमिचु	धर्	ధరించు धरिंचु.
भज्	భజించు भजिंचु.	संचर्	సంచరించు संचरिंचु.
रच्	రచించు रचिंचु.	वर्	వరించు वरिंचु.
लिख्	లిఖించు लिखिंचु.	तर्	తరించు तरिंचु.
पठ्	పఠించు पठिंचु.	जन्	జనించు जनिंचु.
नट्	నటించు नटिंचु.	भर्	భరించు भरिंचु.

(इ) विशेषणों से :

गत	గతించు गतिंचु.	शुष्क	శుష్కించు शुष्किंचु.
मूर्ख	మూర్ఖించు मूर्खिंचु.	दीर्घ	దీర్ఘించు दीर्घिंचु.
समीप	సమీపించు समीपिंचु.	क्षीण	క్షీణించు क्षीणिंचु.

कुछ तत्सम क्रियाओं में इंचु. या इल्लु के पहले इय, ग, र का आगम विकल्प से होता है। जैसे—

భుజ్ भुज — భుజించు भुजिंचु. — భుజియించు भुजियिंचु.

గుణ్ गुण — గుణించు गुणिंचु. — గుణియించు गुणियिंचु.

కుప్ कुप — కోపించు कोपिंचु. — కోపగించు कोपगिंचु.

ప్రజ్వల్ प्रज्वल — ప్రజ్వలించు प्रज्वलिंचु. — ప్రజ్వరిల్లు प्रज्वरिल्लु

८८ तद्भव क्रिया धातुएँ :

पाली, प्राकृत और अपभ्रंश से गृहीत अनेक धातुएँ ఇంచు इंचु., ఇల్లు इल्लु प्रत्ययों के योग से तेलुगु में प्रयुक्त होती हैं। उदा०

ओसर (<सं. अपसर) ఒసరిల్లు ओसरिल्लु = हटना, अलग होना

उप्पइ (<सं. उत्पद्यते) ఉప్పతిల్లు उप्पतिल्लु = उत्पन्न होना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निव्वर (<सं. निर्भर) నిబ్బరించు निव्वरिंचु. = अधिक होना

उम्ह (<सं. ऊष्म) ఉమ్మగిల్లు उम्मगिल्लु = भाप से पकना

उंभ (<सं. ऊष्म) ఉబ్బతిల్లు उब्बतिल्लु = उफन आना

वड्ढेइ (<सं. वृध) వడ్డించు वड्डिंचु. = भोजन परोसना

परामरिस (<सं. परामृश) పరామరిసించు परामरिसिंचु. = सान्त्वना देना

वक्काग (<सं. व्याख्या) వక్కాణించు वक्काणिंचु. = बखानना

सढिल (<सं. श्लथिर) సడలు सडलु = शिथिल या कमज़ोर होना

पयन (<सं. प्रयाण) పయనించు पयनिंचु. = प्रयाण करना

संतोस (<सं. संतुष) సంతసించు संतसिंचु. = खुश होना

मड़ (<सं. मृत) మడయు मडयु = मरना

मण्ण (<सं. मन्यते) మన్నించు मन्निंचु. = आदर करना

आरोग्गिय (<सं.) ఆరగించు आरगिंचु. = खाना पीना, आरगना।

८९ हिन्दी क्रिया-धातुएँ:

कई हिन्दी क्रियायें भी बिना परिवर्तन के, तेलुगु में प्रचलित हो गई हैं। यथा :

दबा – దబాయించు दबायिंचु. जोड़ – జోడించు जोडिंचु.

समझा – సమదాయించు समदायिंचु. कतर – కత్తిరించు कत्तिरिंचु.

बजा – బజాయించు बजायिंचु. अड़ – అడ్డగించు अड्डगिंचु.

फिर – ఫిరాయించు फिरायिंचु. अटका – అటకాయించు अटकायिंचु.

पछता – పస్తాయించు पस्तायिंचु. उड़ा – ఉడాయించు उडायिंचु.

निभा – నిభాయించు निभायिंचु.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी में क्रिया सकर्मक है या अकर्मक–इस की जानकारी वक्ता तथा लेखक को अच्छी तरह रखनी पड़ती है। क्यों कि कुछ भूतकालों के भेदों में दोनों की रूपरचना एकसमान नहीं होती। परंतु तॆलुगु में यह् जटिलता नहीं है; सकर्मक और अकर्मक धातुओं से क्रिया की रूपरचना एक ही प्रक्रिया से होती है। जैसे: రాముడు వచ్చెను रामुडु वच्चॆनु (राम आया) రాముడు చదివెను रामुडु चदिवॆनु (राम ने पढ़ा, पढ़े, पढ़ी)

अकर्मक धातुओं के अंत में या मध्य में आ जोड़ने से सामान्यतया हिन्दी में सकर्मक रूप बनते हैं। जैसे: मर–मार। कट–काट। उखड़–उखाड़। निकल–निकाल। उड़–उड़ा। गिर-गिरा। चल–चला। इ०

तॆलुगु में अधिकांश अकर्मक धातुओं के सकर्मक रूप नहीं बनते। कुछ धातुओं के अंत्यवर्ण को పు पु में बदल देने से सकर्मक रूप निष्पन्न होते हैं। उदा०

నడచు नडचु. (चल)	—	నడపు नडपु (चला)
లేచు लेचु. (उठ)	—	లేపు लेपु (उठा)
కలియు कलियु (मिल)	--	కలుపు कलुपु (मिला)
తడియు तडियु (भीग)	--	తడుపు तडुपु (भिगा)
ఆగు आगु (ठहर)	--	ఆపు आपु (ठहरा, रोक)
ఆరు आरु (बुझ)	--	ఆర్పు आर्पु (बुझा)

चु. के योग से भी कुछ अकर्मक धातुएँ सकर्मक बन जाती हैं। जैसे:

కారు कारु (बह-चू)	—	కార్చు कार्चु. (बहा–चुवा)
కూలు कूलु (ढह)	—	కూల్చు कूल्चु (ढहा)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

చేరు चेरु (पहुँच) — చేర్చు चेर्चु. (पहुँचा)

విరుగు विरुगु (टूट) — విరుచు विरुचु.

వంగు वंगु (झुक) — వంచు वंचु. (झुका)

९१. प्रेरणार्थक

हिन्दी की सकर्मक धातुओं के अंत में आ बढ़ाने से उनके प्रथम प्रेरणार्थक तथा वा बढ़ाने से द्वितीय प्रेरणार्थक रूप प्रायः बन जाते हैं। जैसे:

पढ़	—	पढ़ा	—	पढ़वा
लिख	—	लिखा	—	लिखवा
दे	—	दिला	—	दिलवा
कर	—	करा	—	करवा
पी	—	पिला	—	पिलवा
भेज	—	भिजा	—	भिजवा
बोल	—	बुला	—	बुलवा

ते॑लुगु की सकर्मक धातुओं में ఇంచు इंचु. या పించు पिंचु. जोड़ने से प्रेरणार्थक रूप बनते हैं। बहुत थोड़ी सी क्रियाओं में ఇంపించు इंपिंचु. से द्वितीय प्रेरणार्थक भी बनते हैं, पर उनका प्रचलन बहुत कम है। उदा०

చదువు चदुवु (पढ़)—చదివించు चदिविंचु (पढ़ा)—చదివింపించు चंदिविंपिंचु (पढ़वा)

చేయు चेयु (कर) —చేయించు (करा)—చేయింపించు चेयिंपिंचु. (करवा)

వ్రాయు व्रायु (लिख)—వ్రాయించు (लिखा)—వ్రాయింపించు व्रायिंपिंचु. (लिखवा)

చెప్పు चे॑प्पु (कह) — చెప్పించు चे॑प्पिंचु. (कहला)

కొట్టు को॑ट्टु (पीट) — కొట్టించు को॑ट्टिंचु. (पिटवा)

చంపు चं.पु (मार) — చంపించు चंपिंचु. (मरवा)

పెట్టు पे॑ट्टु (रख) — పెట్టించు पे॑ट्टिंचु. (रखवा)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

చూచు चूचु. (देख) — చూపించు चूपिंचु. (दिखा)

తిను तिनु (खा) — తినిపించు तिनिपिंचु. (खिला)

కొను कों नु (खरीद) — కొనిపించు कोंनिपिंचु. (खरीदवा)

కూలు कूल्चु. (गिरा) — కూల్పించు कूल्पिंचु. (गिरवा)

अकर्मक को सकर्मक या प्रेरणार्थक में अथवा द्विप्रेरणार्थक में बदलने के लिए हिन्दी और तेलुगु भाषाओं में जो रीतियाँ प्रचलित हैं उनमें प्रत्ययों की समानता पायी नहीं जाती ।

९२. प्रार्थना या विधि :

हिन्दी की धातुएँ बिना किसी प्रत्यय के मध्यम पुरुष एक वचन 'तू' के लिए विधि क्रिया बनती हैं; बहुवचन में 'तुम' के लिए 'ओ' तथा आदरसूचक 'आप' के लिए 'इये' जोड़ने पर विध्यर्थक रूप सिद्ध होते हैं । जैसे—तू उठ, तुम उठो, आप उठिए ।

द्राविड भाषाओं में धातुएँ अपने मूल रूप में साधारणतः एक वचन में आज्ञार्थक का काम देती हैं ।[1] तेंलुगु में भी यही नियम पाया जाता है । उदा० నీవు తిను **नीवु तिनु**, (तू खा), నీవు చదువు **नीवु चदुवु** (तू पढ़) आदि । परंतु साहित्यिक भाषा में एक वचन में 'मु' और बहुवचन में 'डु' के जोड़ने से आज्ञार्थक रूप बनते हैं; जैसे—నీవు తినుము **नीवु तिनुमु** (तू खा), మీరు తినుడు **मीरु तिनुडु** (तुम खाओ) इ० । हिन्दी में आदर सूचक 'कीजिए', 'लीजिए', 'आइये', 'बैठिए'—आदि रूप बहुवचन के 'ओ' वाले रूपों से भिन्न हैं । तेंलुगु, में आदरार्थ में अलग रूप नहीं हैं, बहुवचन का रूप ही आदर के लिए भी प्रयुक्त होता है । जैसे—మీరు తినుడు **मीरु तिनुडु** (तुम खाओ), తమరు తినుడు तमरु तिनुडु (आप खाइये) इ०

తినుడు, చేయుడు तिनुडु, **चेयडु** के स्थान में, विकल्प से वर्तमान शैली में తినండి, చేయండి **'तिनंडि'**, **'चेयंडि'** रूप प्रचलित हो रहे हैं । తినుడు **तिनुडु**, में డు 'डु' का पूर्व रूप ండు 'ण्डु' है, जैसे—తినుండు, చేయుండు **तिनुंडु**, **चेयंडु** । इस

---

१. दे० Comparative Grammar of the Tamil Language p. 195.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

डु से बनने वाले ా रा (आ): పో **पो** (जा) धातुओं के रूप రండు, పొండు **रंडु पोँडु** होते हैं। प्राचीन शैली में संबोधन में आ और ई के योग से రండా, రండీ **रंडा, रंडी**; పొండా, పొండీ **पोँडा, पोँडी** रूप प्रचलित हो गये। (రండు + ఆ = రండా रंडु + आ = रंडा, రండు + ఈ = రండీ **रंडु + ई = रंडी**) यह अनुस्वार युक्त 'डि' रूप ही आज सब धातुओं में जुड़ कर తినండి, చేయండి **तिनंडि, चेयंडि** का आधार बन गया है। इस అండీ **'अंडी'** को गौरव सूचक संबोधन समझ कर लोग, ఏమి, ఎక్కడ, ఎప్పుడు एमि, ऍक्कड, ऍप्पुडु जैसे शब्दों के साथ भी इसे जोड़ने लगे हैं। जैसे—ఏమండి **एमंडी** (क्यों जी), ఎక్కడండీ **ऍक्कडंडी** (कहाँ जी), ఎప్పుడండీ **ऍप्पुडंडी** (कब जी) आदि।

हिन्दी में निषेधार्थक 'मत' शब्द क्रिया से पृथक आता है, जैसे—**'मत जाओ'**। परन्तु तेॅलुगु में निषेधार्थक प्रत्यय क्रिया का अंग बन कर प्रयुक्त होता है।

जैसे—నీవు తినుము नीवु तिनुमु (तू खा)—నీవు తినకుము **नीवु तिनकुमु**—(तू मत खा)
మీరు తినుడు मीरु तिनुडु (तुम खाओ)—మీరు తినకుడు मीरु **तिनकुडु** (तुम मत खाओ)
తమరు చేయుడు तमरु चेयुडु(आप कीजिए)తమరు చేయకుడు **तमरु चेयकुडु** (आप मत कीजिए)

सभी आज्ञार्थक रूपों के निषेध में, इन दिनों—తినవలదు, తినవద్దు-చేయవలదు, చేయవద్దు **तिनवलदु, तिनवद्दु, चेयवलदु, चेयवद्दु** आदि रूपों का प्रयोग होता है। मूल में यह వలదు **वलदु** या వద్దు **वद्दु 'नहीं चाहिए'** का पर्याय है। 'सहायक क्रिया' के संदर्भ में इस पर विचार किया जाएगा।

९३. तद्धर्म काल :

हिन्दी तथा तेॅलुगु में, **भूत, भविष्य** और **वर्तमान** इन तीन मुख्य कालों के अतिरिक्त, इन के कई सूक्ष्म भेद भी पाये जाते हैं। तेॅलुगु में **तद्धर्म** के नाम से एक विशेष काल दिखाई देता है, जिस के प्राचीन प्रयोगों में तीनों कालों का बोध होता था।[१] मूल द्राविड में इसके अस्तित्व का उल्लेख तमिळ

---

१. 'बाल सरस्वतीयं' का यह सूत्र द्रष्टव्य है—"क्रिया त्रयीगोचरार्थस्तद्धर्म इति कथ्यते।" క్రియా త్రయీగోచరార్థస్తద్ధర్మ ఇతి కథ్యతే"

—బాలసరస్వతీయం.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तथा कन्नड भाषा शास्त्रज्ञों ने भी किया है । परंतु आधुनिक तेॅलुगु में तद्धर्म का प्रयोग सीमित हो गया है । यथा—(१) वस्तुओं का अथवा प्राणियों का सहज और सर्वकालीन स्वभाव व्यक्त करने में तथा (२) सामान्य भविष्यार्थ सूचित करने में इस काल का प्रयोग होता है । उदा० సూర్యుడు తూర్పున ఉదయించును 'सूर्युडु तूर्पुन उदयिंचुनु' (सूर्य पूरब में उदित होता है) కాకి నల్లగా ఉండును 'काकि नल्लगा नुंडुनु' (कौआ काला होता है) इ० । हिन्दी में 'होता है' के प्रयोग से तद्धर्म का यह विशेषार्थ सूचित होता है । तद्धर्म का दूसरा प्रयोग भविष्य के अर्थ में है, जैसे—'నేను చెప్పుదును' 'नेनु चेॅप्पुदुनु' तथा నేను చెప్పెదను 'नेनु चेॅप्पेॅदनु' (मैं कहूँगा) इ०

९४. हिन्दी में अतिरिक्त काल भेद :

तेॅलुगु में, वर्तमान, भूत, भविष्य तथा प्रार्थना या आज्ञा के नाम से केवल चार काल प्रचलित हैं । हिन्दी भाषा के संभाव्य भविष्यत्, संभाव्य वर्तमान, संभाव्य भूत, हेतुहेतुमद्भूत, पूर्ण हेतुहेतुमद्भूत, संदिग्ध वर्तमान, संदिग्धभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत आदि आधुनिक काल विभाग तेॅलुगु के व्याकरणों में दिखाई नहीं देता । पर, कृदंत, अव्यय, प्रत्यय आदि शब्दों की सहायता से उपर्युक्त कालों का अर्थ-भेद व्यक्त किया जाता है । कहीं कहीं हिन्दी के प्रयोगों का सूक्ष्म-भाव तेॅलुगु में स्पष्ट नहीं होता । जैसे—**'मैं जाता था'** और **'मैं जा रहा था'**, **'मैं जाता हूँ'** और **'मैं जा रहा हूँ'** इन द्वंद्वों के लिए भिन्न-भिन्न रूप तेॅलुगु में नहीं हैं । 'संभावना' के लिए प्रायः గాక 'गाक', हेतुहेतुमत् के लिए—ఎడల, చో, ఏని **ऍडल, चो. ऐन**, तथा संदिग्ध के लिए ఉండును, వచ్చును **उंडुनु वच्चुनु** आदि शब्दों का प्रयोग होता है । उदाहरण के लिए नीचे थोड़े से हिन्दी क्रिया के प्रयोग तेॅलुगु पर्यायों के साथ दिये जा रहे हैं :

तात्कालिक वर्तमान—गाड़ी जा रही है = బండి పోవుచు ఉన్నది
बंडि पोवुचु. उन्नदि ।

तात्कालिन अपूर्ण भूत—गाड़ी जा रही थी = బండి పోవుచు ఉండెను
बंडि पोवुचु. उंडेनु ।

संदिग्ध वर्तमान—वह जाता होगा = వాడు పోవుచుండును, పోవుచుండ వచ్చును
वाडु पोवुचुं.डुनु, पोवुचु.ड वच्चु.नु ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संदिग्ध भूत—वह गया होगा = వాడు పోయియుండును, పోయియుండవచ్చును
वाडु पोयियुंडुनु, पोयियुंड वच्चु.नु ।

हेतुहेतुमद् भूत–यदि वह आता तो मैं जाता = వాడు వచ్చినచో నేను పోయియుండును
वाडु वच्चिनचो. नेनु पोयियुंदुनु ।

अपूर्ण हेतुहेतुमद्भूत—यदि बीच बीच में आप आते होते तो सारा काम ठीक चलता होता = మధ్య మధ్యన మీరు వచ్చుచు ఉండి-నట్లయిన పని చక్కగా జరిగి పోవు చుండెడిది
मध्य मध्यन मीरु वच्चु.चु. उंडिनट्लैन पनि चक्कगा जरिगि पोवुचुं.डे ँडिदि ।

पूर्ण हेतुहेतुमद्भूत—मैं गया होता तो यह काम न हुआ होता =
నేను వెళ్లి యుండిన యెడల ఈ పని జరిగియుండెడిది కాదు
नेनु वे ँळ्ळि युंडिन ये ँडल ई पनि जरिगि युंडे ँडिदि कादु ।

संभाव्य भविष्यत्—

(१) चाहे आसमान टूट पड़े, मैं हिलने का नहीं = ఆకాశము విరిగిపడు గాక, నేను కదలను आकाशमु विरिगि पडुगाक, नेनु कदलनु ।

(२) यह काम ऐसा ही होवे = ఈ పని ఇటులనే యగుగాక
ई पनि इटुलने यगुगाक ।

(३) भगवान तुम्हें दीर्घायु दे = భగవంతుడు మీకు దీర్ఘాయువు నిచ్చుగాక
भगवंतुडु मीकु दीर्घायुवु निच्चु. गाक ।

(४) मैं घर चला जाऊँ ? = నేను ఇంటికి పోనా ? नेनु इंटिकि पोना ?

(५) वह तुरंत आ जाए तो काम बनेगा = వాడు వెంటనే వచ్చెనేని పని జరుగగలదు वाडु वे ँटने वच्चे ँनेनि पनि जरुगगलदु ।

(६) पैसे की आप चिंता न करें = డబ్బుకు మీరు విచారపడవద్దు डब्बुकु मीरु विचार पडवद्दु ।

(७) न जाने यह घर कब छोड़ना पड़े ! = ఈ యిల్లు ఎప్పుడు విడువ వలసిన యుండునో తెలియదు ई यिल्लु ऍप्पुडु विडुव वलसियुंडुनो तेलियदु ।

संभाव्य वर्तमान—मानो तुम सब जानते होओ = నీవు అంతయు ఎఱిగి నట్లున్నది
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
नीवु अंतयु एऱिगिनट्लुन्नदि ।

संभाव्य भूत—वे लोग चले गये हों तो मैं नहीं जानता = వారు వెళ్లి పోయినారేమో నాకు తెలియదు वारु वॆ ळ्ळिपोयिनारेमो नाकु तॆ लियदु ।

९५. क्रिया में लिंग भेद :

हिन्दी में क्रिया के विध्यर्थक और संभाव्य भविष्यत् को छोड़ कर अन्य कालों के रूपों में लिंग का भेद व्यक्त रहता है। हिन्दी क्रिया की रचना कृदंत विशेषणों से होती है, इसीलिए उसमें लिंग भेद है। साधारणत: 'आ' पुल्लिग को, 'ए' पुं० लिं० बहुवचन को तथा 'ई' स्त्रीलिंग को सूचित करते हैं। तॆ लुगु की क्रिया में, केवल अन्य पुरुष के रूपों में महत् अमहत् लिंग का भेद पाया जाता है। महती के लिए अलग क्रिया रूप नहीं है। अन्य पुरुष की क्रिया में महत् अथवा अमहत् लिंग द्योतक सार्वनामिक प्रत्यय लगे रहते हैं। किन्तु చూచెను, పోయెను चूःचॆ नु, पोयॆ नु आदि भूतार्थक अन्य पुरुष की क्रिया में तथा చూచును, పోవును चू.चु.नु, पोवुनु आदि तद्धर्म कालिक क्रिया में लिग भेद सूचित नहीं होता।

९६. वाच्य :

हिन्दी में कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य-तीन वाच्यभेद पाये जाते हैं। अकर्मक धातुओं से हिन्दी में जो भाववाच्य का रूप बनता है वह तॆ लुगु में नहीं है। उदा० : "इस धूप में मुझ से चला नहीं जायगा।" तॆ लुगु में यह वाक्य कर्तृवाच्य में ही बन सकता है, जैसे—ఈ ఎండలో నేను నడువజాలను ई एँडलो नेनु नडुव जालनु (इस धूप में मैं चल नहीं सकूंगा); किन्तु प्राचीन भाषा में कुछ भाववाच्य के प्रयोगों के उदाहरण इधर उधर मिलते हैं। हिन्दी का कर्मवाच्य तॆ लुगु तथा अन्य द्राविड़ भाषाओं के समान 'संयुक्त क्रिया' का रूप धारण करता है। संस्कृत की तरह मूलरूप में प्रयुक्त नहीं होता। पहली धातु के भूतकालिक (कृदंत) रूप के साथ 'जा' धातु के योग से कर्मवाच्य बनता है। यथा : दे—**दिया जाना, दिये जाना** अथवा **दी जाना**। पुस्तक दी जाती है, काम दिया जाता है, रुपये दिये जाते हैं, आदि।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'पड़' का साम्य :

तेॅलुगु तथा अन्य द्राविड़ भाषाओं में పడు **'पडु'** धातु को, मुख्य धातु के అన్ अन् अंत वाले (भाव वाचक) रूप के साथ जोड़ कर कर्म वाच्य बनाया जाता है । जैसे—తిను + అన్ + పడు = తినంబడు <తినబడు **तिनु + अन् + पडु = तिनंबडु <तिनबडु** (खाया जाना), చదువు + అన్ + పడు = చదువంబడు > చదువబడు **चदुवु + अन् + पडु = चदुवंबडु > चदुवबडु** (पढ़ा जाना) इ० तेॅलुगु में పడు 'पडु' स्वतंत्र क्रिया भी है । गिरने के अर्थ में इसका प्रयोग होता है । जैसे—కూలబడు **कूलबडु** (बैठ जाना), నిలువబడు **निलुवबडु** (खड़ा होना), విరుగబడు **विरुगबडु** (टूट पड़ना) इ० । ये सब कर्तृवाच्य के प्रयोग हैं । **दीख पड़ना** या **दिखाई पड़ना, सुन पड़ना** या **सुनाई पड़ना, समझ पड़ना, जान पड़ना** आदि हिन्दी के प्रयोगों में कर्मणि का अर्थ नजर आता है, पर रचना की दृष्टि से ये कर्मवाच्य की क्रियाएँ नहीं ठहरतीं ।

बंगला, उड़िया तथा असामी भाषाओं में **'पड़'** से कर्मवाच्य बनाने की रीति द्राविड भाषाओं के प्रभाव को सूचित करती हैं ।[१] उदा : आमि देखा पड़ि = मैं देखा पड़ता हूँ । इ० हिन्दी तथा अन्य आ० भा० आ० भाषाओं में 'पड़' से बनने वाली ऐसी सैकड़ों संयुक्त क्रियाएँ मिलती हैं जो प्राय: उन्हीं रूपों तथा अर्थों में तेॅलुगु आदि द्राविड भाषाओं में प्रयुक्त होती हैं । स्वतंत्र क्रिया के रूप में भी (गिरना, लेटना के अर्थ में) 'पड' हिन्दी में विद्यमान है । संस्कृत का **'पत्'** तथा आ० भा० आ० भाषाओं का **'पड़'** एक ही माना जाता है ।[२]

९७. कृदन्त :

क्रिया के मूलरूप में प्रत्यय जोड़ने से जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त कहते हैं । जैसे 'कर' धातु से—करना, करनी, करने वाला, करता, क्रिया, करते करते—इ० । तेॅलुगु और अन्य द्राविड भाषाओं की शब्द-रचना में

---

१. दे०—Verbal Composition in Indo-Aryan—p. 281.

२. जूल्स ब्लाख का कहना है कि प्राचीन भारोयोपीय तथा अवेस्ता में 'पत्' का अर्थ 'उड़ना' या 'फेंकना' था । पहली बार अथर्ववेद में इसका प्रयोग गिरने के अर्थ में मिलता है । यह द्राविड भाषाओं के प्रभाव का परिणाम होगा ।

—भारतीय आर्य भाषा—पृ. ६१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कृदन्तों का बहुत महत्त्व है। पहले कहा जा चुका है कि इन भाषाओं में प्राय: समूची क्रिया-रचना कृदन्तों से होती है। भारतीय आर्य भाषाओं के अध्ययन तथा अनुसंधान से यह स्पष्ट हुआ कि हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं ने कृदन्तों की सहायना से क्रिया रूपों की रचना करके नवीन मार्ग का अनुसरण किया।[1] द्राविड भाषाओं का थोड़ा बहुत प्रभाव मध्यकालीन संस्कृत पर भी स्पष्ट रूप से लक्षित होता है। फिर इसमें तो संदेह नहीं कि हिन्दी क्रिया की अधिकांश कालरचना तेॅलुगु के समान कृदन्तों से हुई है।

९८. तेॅ० में संबंधवाचकों का अभाव :

तेॅलुगु तथा अन्य द्राविड भाषाओं में संबंधवाचक सर्वनाम, विशेषण, तथा क्रिया-विशेषण का अभाव है। अर्थात् **जो, जब, जहाँ, जैसा, जितना**— आदि शब्द इन भाषाओं में नहीं हैं। इनके स्थान पर निम्नलिखित रीति से कृदन्त शब्दों का प्रयोग होता है। यथा—

(१) जिसने यह पेड़ लगाया हो — ఈ చెట్టు నాటినవాడు
ई चेॅट्टु नाटिनवाडु

(२) जो कथा तुम पढ़ते हो — నీవు చదువుచున్న కథ
नीवु चदुवुचु.न्न कथ

(३) जब सूर्योदय होगा — సూర్యోదయము అగునప్పుడు
सूर्योदयमु अगुनप्पुडु

(४) जहाँ गंगा नदी वहती है — గంగా నది ప్రవహించు చోట
गंगा नदि प्रवहिंचु. चोट

(५) जैसा राग तुम गा रहे हो — నీవు పాడుచున్నట్టి రాగము
नीवु पाडुचु. न्नट्टि रागमु

(६) वच्चे जैसे रोते हैं — పిల్లలు ఏడ్చుచున్నట్లుగా
पिल्ललु एड्चु.चु.न्नट्लुगा

---

१. इस बात की विस्तृत विवेचना जि ए. ग्रियर्सन कृत 'लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया' के खंड ४ में की गयी है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(७) भारत में जितनी भाषाएँ बोली जाती हैं భారత దేశములో మాటలాడబడు
చున్నన్ని భాషలు
भारत देशमुलो माटलाडबड्चु. न्नन्निभाषलु

(८) वह जितना खेलता है — వాడు ఆడుచున్నంతగా
वाड् आड् चु.न्नंतगा

इन कृदन्त शब्दों के प्रयोग के कारण तेॅलुगु के वाक्य हिन्दी की अपेक्षा छोटे और सरल बनते हैं।

९९. कृदन्त विशेषण तथा अव्ययः

वर्तमान कालिक तथा भूतकालिक कृदन्तों से हिन्दी तथा तेॅलुगु दोनों में प्रायः एक ही प्रकार के विशेषण तथा क्रिया-विशेषण वाक्यांश (Phrases) बनते हैं। उदा०

(१) बहता हुआ पानी — పారుచున్న నీరు पारुचु.न्न नीरु (विशेषण)
(२) खाया हुआ अन्न — తినిన అన్నము तिनिन अन्नमु (,,)

(३) रोते-रोते बच्ची सो गयी — ఏడ్చుచు ఏడ్చుచు పిల్ల నిద్రపోయినది
एड्चु.चु. एड्चु.चु. पिल्ल निद्र पोयिनदि
(क्रिया-विशेषण)

(४) बैठे-बैठे वह थक गया — వాడు కూర్చొని కూర్చొని అలసి పోయినాడు
वाड् कूर्चो.नि कूर्चो.नि अलसि पोयिनाड्
(क्रिया-विशेषण)

ऊपर के हिन्दी वाक्यांशों में, 'बहता हुआ पानी' के बाद 'में', 'पर' आदि कारक प्रत्यय जोड़ने पर उसका रूप बदल कर 'बहते हुए पानी' हो जाता है; पर, तेॅलुगु में यह परिवर्तन नहीं होता। 'पढ़ी हुई पुस्तक' का संबंध 'मैं' के साथ कर दिया जाय तो 'मेरी पढ़ी हुई पुस्तक' बनता है। परन्तु, आधुनिक तेॅलुगु में నేను చదివిన పుస్తకము 'नेनु च.दिविन पुस्तकमु' मैं (पढ़ी हुई पुस्तक) सही प्रयोग माना जाता है। प्राचीन ग्रंथों में 'मेरी पढ़ी हुई पुस्तक' के समान ही నా చదివిన పుస్తకము 'ना च.दिविन पुस्तकमु', హింస చేసినవారల యేగు గతికి 'हिंस चेसिनवारल येगु गतिकि' (हिंसा करने वालों के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाने की गति को) నీచేసిన యుపకారంబునకు नी चेसिन युपकारुंबुनकु (तुम्हारे किये उपकार के लिए) : చోళమహారాజుల ఏలంగా चोळमहाराजुल एलंगा (चोळ महाराजा के शासन करते हुए) इत्यादि प्रयोग संस्कृत शैली के प्रभाव से प्राचीन तेॅलुगु में होते थे।

१००. भविष्यत् कालीन कृदन्त

तेॅलुगु क्रिया का भावार्थक रूप (Infinitive) भविष्य कालिक कृदन्त बनता है। जैसे—చేయు + వాడు = చేయువాడు चेयु+वाडु = चेयुवाडु (करने वाला वह), పోవు + బండి = పోవుబండి पोवु+बंडि = **पोवुबंडि** (जाने वाली गाड़ी), పరుగెత్తు + అది = పరుగెత్తునది परुगेॅत्तु+अदि = **परुगेॅत्तुनदि** (दौड़ने वाला वह—अमहत्) इ०। इन उदाहरणों के చేయువాడు 'चेयुवाडु', 'पोवुबंडि' आदि कृदन्त रूप तद्धर्मार्थक माने जाते हैं, जो वर्तमान, भूत और भविष्यत् तीनों कालों का बोध कराते हैं। इसके अलावा, ఎడు, ఎడి ऍडु या ऍडि प्रत्यय से केवल भविष्यकालीन कृदन्त रूप बनते हैं, जैसे—చేయు + ఎడు + వాడు = చేసెడువాడు चेयु+ऍडु+वाडु = **चेसेॅडुवाडु** (वह व्यक्ति जो करेगा), పోవు + ఎడు + బండి = పోయెడు బండి पोवु+ऍडु + बंडि = **पोयेॅडुबंडि** (गाड़ी जो जाएगी), పరుగెత్తు + ఎడి + గుఱ్ఱము = పరుగెత్తెడి గుఱ్ఱము परुगेॅत्तु+ऍडि+गुर्रमु = **परुगेॅत्तेॅडि गुर्रमु** (घोड़ा जो दौड़ेगा) इ०

हिन्दी में जिस प्रकार 'वहती गंगा' और 'सुनी बात' में वर्तमानकालिक तथा भूतकालिक कृदन्तों का विधान है, वैसा भविष्य काल के लिए कोई रूप नहीं है। साधारण व्यवहार में 'आने वाला', 'करने वाला' जैसे प्रयोगों में भविष्यत् का भी अर्थ लोग निकालते हैं, परन्तु 'वाला' या 'हारा' कार अथवा कर्ता को सूचित करता है, क्रिया के काल के साथ उसका संबंध नहीं है।

संस्कृत के **'कर्तव्यं'**, **'द्रष्टव्यं'**, आदि 'तव्यत्' प्रत्यय वाले कृदन्तों से पालि तथा प्राकृतों में भविष्य काल का अर्थ लिया जाता था, किन्तु ये शब्द पूर्वी हिन्दी तथा मागधी में, **'करतवो'**, **'करतब'**, **'देखिबो'**, **'देखब'** आदि रूपों में बदल गये और **'करना'**, 'देखना'—आदि क्रियार्थक-संज्ञा के समान प्रयुक्त-होने लगे।

१०१ पूर्वकालिक क्रिया:

तेॅलुगु की क्रिया-धातु में ఇ 'इ' प्रत्यय जोड़ने से पूर्व-कालिक क्रिया बनती है, जैसे—చూచు + ఇ = చూచి चू.चु.+इ = **चू.चि** (देख कर), ఉను + ఇ =

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

తిని तिनु — तिनि (खा कर)। हिन्दी की ब्रज, अवधी आदि बोलियों में भी 'इ' प्रत्यय से पूर्वकालिक क्रिया बनती है। जैसे, देख—**देखि**, चल–**चलि**, पढ़—**पढ़ि** आदि। संस्कृत के **'य'** (ल्यप्) प्रत्यय से इस 'इ' का विकास माना जाता है। एक दशा में सभी धातुओं में समान रूप से यह 'इ' प्रत्यय लगता था। किन्तु व्यवहार में क्रमशः 'इ' के लुप्त हो जाने पर केवल धातु से ही पूर्वकालिक का बोध होने लगा। इसलिए खड़ी बोली में **'सुन'**, **'लिख'**, **'पढ़'** आदि का अर्थ--सुनि, लिखि, पढ़ि--भी हो गया है। फिर भी धातु और पूर्वकालिक में भेद स्पष्ट करने के लिए **'कर'** **'के'** और **'करके'** जोड़े जाने लगे। जैसे—देख कर, दे के, नमस्कार कर के, आदि। 'इ' वाली पूर्वकालिक क्रिया को आधार बना कर तेॅलुगु तथा हिन्दी में भिन्न-भिन्न भूतकालिक रूपों तथा संयुक्त क्रियाओं की रचना हुई है।

నిన్ను చూచి నాలుగు రోజులు గడచినవి **निन्नु चू.चि नालुगु रोजुलु गड-चिनवि**–వాడు పుట్టి ఎంత కాలమైనది **वाडु पुट्टि एँतकालमैनदि**? इस प्रकार-के तेॅलुगु के वाक्यों में पूर्वकालिक क्रिया का प्रयोग है, इनके हिन्दी पर्याय वाक्यों में भूतकालिक कृदन्त अव्यय का **प्रयोग** पाया जाता है, जैसे: "तुम्हें देखे चार दिन हो गये हैं", "उसको **पैदा हुए** कितना समय बीता?" परन्तु बोलचाल में, विशेप रूप से, दखिनी में तेॅलुगु के समान ही 'तुम्हें देख कर चार दिन हुए,' 'उसको **पैदा हो कर** कितने दिन हुए?'—बोला जाता है।

१०२. तेॅलुगु में पूर्वकालिक क्रिया का व्यतिरेकार्थक रूप भी मिलता है, जैसे—తిని तिनि (खा कर)--తినక **तिनक** (न खा कर); పోయి पोयि (जा कर)--పోక **पोक** (न जा कर) इ०। **'अ'** स्वर ज़ोड़ कर क्रिया का नकारार्थक रूप बनाना द्राविड भाषाओं की विशेषता है।

१०३. क्रियार्थक संज्ञा :

धातु में **ना** जोड़ कर खड़ी बोली में क्रियार्थक संज्ञा बनायी जाती है, जैसे—देख–**देखना**, पढ़–**पढ़ना** आदि। संस्कृत के 'करणम्', 'पठनम्' आदि रूपों से 'करना', 'पढ़ना' का विकास माना जाता है। पूर्वी बोलियों में कृत्-प्रत्यय 'तव्यत्' से बने 'द्रष्टव्यं', 'कर्तव्यं' से 'देखब', 'करतब' आदि क्रियार्थक संज्ञा के रूप प्रचलित हुए। इनके अलावा, **आवन**, **जावन**, **चलन**, **पढ़न** आदि "अन्" अंत वाले शब्द भी अवधी आदि बोलियों में देखे जाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेॅलुगु में అన 'अन' प्रत्यय से कुछ धातुओं की क्रियार्थक संज्ञा बनती है। जैसे—వడ్డన **वड्डन** (परोसना), **गडन** (कमाई), మన్నన **मन्नन** (सम्मान) इ० । परन्तु ये शब्द क्रिया-जन्य-विशेष्य (Verbal Nouns) हैं। आना जाना के समान इनका प्रयोग सामासिक क्रिया में नहीं होता। तेॅलुगु की प्रारंभिक दशा में धातु मात्र, क्रियार्थक संज्ञा का काम देती थी, उसमें कारक परसर्ग भी लगते थे। जैसे--తెచ్చు కొఱకు तेॅच्चु. **कोरकु**' (ला + के लिए)। दूसरे प्रकार के रूप 'अन्'' प्रत्यय के जुड़ने से बनते थे, जैसे—తిను + అన్ = తినన్ तिनु + अन् = '**तिनन्**', చేయు + అన్ = చేయన్ चेयु + अन् = '**चेयन्**' इ० । చేయన్ चेयन् का प्रयोग--'**करना** (उद्देश्य); '**करने के कारण**' (हेतु); '**करने पर**' (आनंतर्य) इन भिन्न-भिन्न अर्थों में किया जाता था। वर्तमान भाषा में इन अन्नंत शब्दों का विस्तृत प्रयोग 'तुमुन्' प्रत्यय के अर्थ में होता है। इस क्रियार्थक संज्ञा के आधार पर तेॅलुगु में संयुक्त-क्रिया का विकास हुआ। उदा०—చేయన్ + కల = చేయంగల > చేయగల चेयन् + कल = चेयंगल > **चेयगल** (कर-सकना), చేయన్ + తొడగు = చేయందొడగు > చేయదొడగు चेयन् + तोॅडगु = चेयं-दोॅडगु > **चेयदोॅडगु** (करने लगना), చేయన్ + ఇచ్చు = చేయనిచ్చు चेयन् + इच्चु. = **चेयनिच्चु**. (करने देना), చేయన్ + కోరు = చేయంగోరు > చేయగోరు चेयन् + कोरु = चेयंगोरु > **चेयगोरु** (करने को चाहना) इ०

प्राचीन हिन्दी में उपर्युक्त 'आवन', 'जावन', 'पढ़न', 'करन' आदि क्रियार्थक संज्ञाओं का प्रचलन था। तेॅलुगु के समान ही, इनके साथ, कारक परसर्ग जुड़ते थे, तथा इनके योग से 'संयुक्त-क्रिया' की रचना भी होती थी। जैसे—(i) 'गुरु गृह **गयेउ पढ़न** रघुराई', (२) '**लगे सँवारन** सकल सुर' (तुलसी), (३) 'नेह **निभावन** एकरस', (४) '**बाजन दे** बाजंतरी' (कबीर), (५) 'बड़े पेट के **भरन** में' (रहीम) आदि अनेक प्रयोग प्राचीन भाषा में मिलते हैं। '**पढ़न गयेउ**' तथा చదువన్ + పోయెను '**चदुवन् + पोयेॅनु**'--हिन्दी तथा तेॅलुगु में समानार्थक प्रयोग हैं, जिनमें 'अन्' रूपवाली क्रियार्थक संज्ञा का 'तुमुन्' अर्थ में प्रयोग एक समान पाया जाता है।

तेॅलुगु में చేయన్ చూడన్ 'चेयन्', 'चू.डन्' आदि के नकारात्मक रूप भी पाये जाते हैं। जैसे—చేయమి '**चेयमि**' (न करना) చూడమి '**चू.डमि**' (न देखना), వినమి '**विनमि**' (न सुनना आदि)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१०४. 'ट' और 'ड' प्रत्यय

अर्वाचीन तॆलुगु में धातु के साथ ట, డ 'ट' 'ड' जोड़ने पर क्रियार्थक संज्ञा बनती है। जैसे—చేయుట **चेयुट** (करना), తినుట **तिनुट** (खाना), చూచుట **चू.चु.ट** (देखना)। कभी-कभी भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय ము 'मु' भी इस ట 'ट' के साथ जोड़ा जाता है; जैसे—చేయుట + ము = చేయటము चेयुट + मु = **चेयटमु**। चेयुट और चेयटमु दोनों के अर्थ में कोई भेद नहीं है। 'ट' वाले रूपों के साथ साथ ड वाले रूप भी प्रचलित हैं, जैसे చేయడము **चेयडमु** इ०

१०५. तॆलुगु में बहुत सी ऐसी क्रिया धातुएँ हैं जो एक ही रूप में संज्ञा तथा क्रिया बन कर प्रयुक्त होती हैं। उदा० (१) నేను చొక్కా కుట్టుచున్నాను नेनु चॊक्का **कुट्टु**चु.न्नानु (मैं कुर्ता सी रहा हूँ—क्रिया), చొక్కాకు కుట్టు ఊడినది चॊक्काकु **कुट्टु** ऊडिनदि (कुड़ते का सीवन निकल गया—संज्ञा) (२) నా తల తిరుగుచున్నది ना तल **तिरुगु**चु.न्नदि (मेरा सिर घूम रहा है—क्रिया); వాని మాటకు తిరుగులేదు वानि माटकु **तिरुगु** लेदु (उसकी बात का प्रतिवाद या मुड़ना नहीं होता—संज्ञा) (३) నీవు కథ చెప్పుచున్నావు नीवु कथ **चॆप्पु**चुन्नावु (तुम कथा सुना रहे हो—क्रिया), నేను అమ్మగారి చెప్పు చేతలలో పెరిగినాను नेनु अम्मगारि **चॆप्पु** चेतललो पेरिगिनानु (मैं माताजी के कहने सुनने में—नियंत्रण में—पला हूँ—संज्ञा।)(४) నీవు చక్కగా చదువుము नीवु च.क्कगा **चदुवु**मु (तुम अच्छी तरह पढ़ो—क्रिया), నాకు ఆ చదువురాదు नाकु आ **चदुवु** रादु (मुझे वह पढ़ाई—विद्या—नहीं आती—संज्ञा)

१०६. रचना और प्रयोग :

हिन्दी तथा तॆलुगु दोनों भाषाओं में क्रियार्थक संज्ञा के साथ कारक परसर्ग जोड़ कर संज्ञा के समान उसका प्रयोग किया जाता है।[१] उदा०:—

---

१. प्राचीन समय के अभिलेखों की तॆलुगु में बिना प्रत्यय जोड़े धातु का संज्ञा के समान प्रयोग किया जाता था, जैसे—తెచ్చుకొఱకు **तॆच्चु.कॊरकु** (लाने के लिए), చెడుకంటెన్ **चॆडु कंटॆन्** (बिगड़ने से इ०)। वर्तमान भाषा में ये प्रयोग इस प्रकार होंगे :—తెచ్చుట కొఱకు **तॆच्चु.ट कॊरकु** చెడుట కంటెన్ **'चॆडुटकंटॆन्'**।

—ఆంధ్ర భాషావికాసము పే. 522. आन्ध्र भाषा विकासमु. पृ. ५२२

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करना + से = करने से   చేయుట + చే = చేయుటచే चेयुट + चे = चेयुटचे

करना + को = करने को   చేయుట + కు = చేయుటకు चेयुट + कु = चेयुटकु

करना + में = करने में   చేయుట + లో = చేయుటలో चेयुट + लो = चेयुटलो

परंतु **'आपका आना' 'उसका जाना'** आदि संबंध कारक के साथ के प्रयोगों की जगह तॆलुगु में తమరు రావటము **'तमरु रावटमु'** 'వాడు పోవటము', **'वाड़ु पोवटमु'**, आदि प्रयोग बिना संबंधकारक के ही प्रचलित हैं । 'आपके आने में देर हुई' तथा 'उसके जाने से कोई लाभ नहीं'—इनके पर्याय वाक्य तॆलुगु में क्रमशः इस प्रकार होंगे—తమరు రావటములో ఆలస్యమైనది तमरु रावटमुलो आलस्यमैनदि; వాడు పోవటము వలన ప్రయోజనము లేదు वाड़ु पोवटमुवलन प्रयोजनमु लेदु ।

'सोने का कमरा', 'समझने की बात', 'खाने का फल'—आदि हिन्दी के प्रयोगों में, तथा త్రోపుడు బండి **'त्रोपुडुबंडि'** (ठेलने की गाड़ी), చెప్పుడు మాటలు 'चॆप्पुडु माटलु' (कहने सुनने की बातें), కుట్టు కూలి 'कुट्टु कूलि' (सिलाई की मजूरी) आदि तॆलुगु प्रयोगों में अर्थबोध एक समान होता है । 'सोने का कमरा' में, कमरा सोता नहीं, पर 'वह कमरा जिसमें सोया जाता है'—यही अर्थ होगा । इसी प्रकार త్రోపుడు బండి 'त्रोपुड़ बंडि' में, गाड़ी ठेलती नहीं, बल्कि ठेली जाती है । हिन्दी की क्रियार्थक संज्ञाएँ संबंध कारक के साथ प्रयुक्त होती हैं तथा तॆलुगु की बिना संबंध कारक के ।

१०७. हिन्दी में—देखना, करना आदि क्रियार्थक संज्ञाओं का प्रयोग आज्ञा या विधि में भी होता है—जैसे : **असत्य न बोलना** (असत्य मत बोलो), ऐसा खराब काम न करना (ऐसा खराब काम मत करो) आदि । तॆलुगु में ऐसा प्रयोग नहीं होता । नीचे का प्राचीन प्रयोग, जो आज्ञा के अर्थ में होता था, ध्यान देने योग्य है : పెద్దల యాజ్ఞ పాలించునది **पॆद्दल याज्ञ पालिंचु.नदि** (बड़ों की आज्ञा का पालन करना) इ०

१०८. संयुक्त क्रिया :

'वह जाता होगा', 'हम खा रहे थे', 'वे जा सकते हैं', 'पानी गिरने लगा'—ऐसे वाक्यों में एक से अधिक धातुओं के मेल से क्रियापद का रूप बनता है । हिन्दी आदि आ० भा० आ० भाषाओं में, द्राविड भाषाओं के समान,

क्रिया प्रायः संयुक्त रूप में दिखाई देती है। प्राचीन वैदिक भाषा की क्रिया एक ही धातु से बनती थी। अर्थ विशेष को व्यक्त करने के लिए उपसर्ग और प्रत्ययों का प्रयोग होता था। मध्यकालीन संस्कृत में संयुक्त क्रिया के जो उदाहरण मिलते हैं, वे प्राकृतों या अन्य देशी भाषाओं के प्रभाव को सूचित करते हैं, जिनमें संयुक्त क्रिया प्रचलित थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साधारणतया संयुक्त क्रिया का प्रथम अंश, धातु अथवा पूर्वकालिक, भावार्थक, क्रियार्थक संज्ञा, वर्तमान, भूत या भविष्य कालिक कृदंत के रूप में पाया जाता है। दूसरे अंश की धातु, काल, वाच्य, पुरुष, लिंग और वचन संबंधी रचनात्मक प्रत्ययों से युक्त होती है।

सहायक क्रिया :

रह, हो, कर—आदि कुछ धातुएँ दूसरी धातुओं के साथ इस प्रकार आती हैं कि उन्हें अलग करने पर क्रिया की रचना बिगड़ जाती है, और पूर्णार्थ द्योतक रूप नहीं बनता। ऐसी क्रियाओं को सहायक क्रियाएँ (Auxiliary Verbs) कहते हैं। हिन्दी में—हो, रह, कर, सक, चुक, लग और चाह—मुख्य सहायक क्रियाएँ हैं।

तेॅलुगु में ఉండు उंडु (रह); అగు अगु (हो); ఇచ్చు इच्चु. (दे); కొను कोॅनु (ले); చాలు चालु, కలుగు कलुगु (सक); కోరు कोरु, తలచు तलचु. (चाह); తొడగు तोॅडगु, సాగు सागु (लग) प्रधान सहायक क्रियाएँ हैं। दोनों भाषाओं में प्रायः समान रीति से सहायक क्रियाओं का प्रयोग पाया जाता है।

'टूट पड़ा' (విరిగి పడెను विरिगि पडेॅनु), 'मर गया' (చని పోయెను चनि पोयेॅनु) 'देख आया' (చూచి వచ్చెను चू.चि वच्चेॅनु)–आदि प्रयोगों में क्रिया यद्यपि संयुक्त रूप में है, फिर भी इनका दूसरा अंश रचनात्मक दृष्टि से आवश्यक नहीं है। उसका प्रयोजन सूक्ष्मार्थ को प्रकट करना है।

१०९. संयुक्त क्रिया की रचना रीतियाँ :

रचना की दृष्टि से संयुक्त क्रियाओं के तीन मुख्य भेद किये जा सकते हैं[1] :—

---

१. केल्लाग ने पाँच विभाग किये हैं। दे० A Grammar of the Hindi Language–S. H. Kellog. P. 258.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१) प्रथम धातु की क्रियार्थक-संज्ञा के साथ जुड़ कर बनने वाली संयुक्त क्रियाएँ :—

(अ) चाह—

'चाह' धातु इच्छा या उद्देश्य सूचक है और जाना, लिखना आदि प्रथम धातु के संप्रदान कारक रूप के साथ जोड़ी जाती है। परन्तु खड़ी बोली में 'को' या 'के लिए' के बिना भी इसका प्रयोग होता हे; जैसे—'वह जाना चाहता है।' कर्म के लिंग वचन के अनुसार भी, कभी-कभी इस क्रिया में रूप परिवर्तन होता है : जैसे—'मैंने रोटी खानी चाही'। 'आया', 'देखा'—आदि भूतकालिक कृदंत रूपों के साथ इस चाह का विशेष प्रयोग होता है; जैसे—'वह आया चाहता है'। इस विशेष प्रयोग से निकट भविष्य का बोध होता है। तॆलुगु में यह विशेष प्रयोग नहीं है।

पहले कहा जा चुका है कि तॆलुगु में क्रियार्थक संज्ञा के दो रूप हैं; एक 'अन्' से, दूसरा '**ट**' से बनता है—చేయన్—చేయుట **चेयन्—चेयुट**। इनमें से చేయన్ '**चेयन्**' पूर्व रूप है और 'तुमुन्' अर्थ में इसका प्रयोग होता है। इसी 'अन्' रूप से **संयुक्त** क्रिया की रचना होती है। 'चाह' के अर्थ में, కోరు '**कोरु**' या తలఁచు '**तलचु.**' का प्रयोग होता है। अतः 'वह जाना चाहता है'—का समानार्थक तॆलुगु रूप : వాడు (పోవన్ + కోరు>) పోఁగోరుచున్నాడు '**वाडु (पोवन् + कोरु>) पोगोरुचु.न्नाडु**' अथवा వాడు (పోవన్ + తలఁచు>) పోఁదలఁచుచున్నాడు '**वाडु (पोवन् + तलचु>) पोदलचु.चु.न्नाडु** बनता है।

११०. चाहिए—

हिन्दी में 'चाह' धातु के कर्म वाच्य से '**चाहिए**' का विकास माना जाता है, जो आवश्यक के अर्थ में क्रियाविशेषण के समान प्रयुक्त होता है। उदा० 'हमें खाना चाहिए', 'हमें पुस्तक पढ़नी चाहिए'। नकारार्थक '**न**' या 'नहीं' अकसर दोनों अंशों के बीच में आता है। जैसे—'मुझे जाना नहीं चाहिए'। भूतकाल में '**चाहिए**' के साथ '**था**' जुड़ता है, यथा—'उसे एक दिन पहले ही जाना चाहिए था'। 'जाना चाहिए' से वर्तमान अथवा भविष्य सूचित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
होता है। कहीं कहीं— उसके दृश्य देखने चाहिएँ— ऐसे विकार वाले रूप भी प्रयुक्त होते हैं। किन्तु क्रिया विशेषण में यह परिवर्तन असंगत लगता है।

तॆलुगु में వలచు **'वलचु.'** धातु भी अभिलाषा को प्रगट करती है। **'चाहिए'** का समानार्थक रूप వలయును 'वलयुनु' या వలెను **'वलॆनु'** इसी వలచు **वलचु.** से बना हुआ अव्यय रूप है, और 'अन्' अंत वाली पहली धातु से जुड कर संयुक्त क्रिया बनाता है, जैसे—చేయన్ + వలయును = చేయవలయును चेयन् + वलयुनु = **चेयवलयुनु** (करना चाहिए)। परंतु, प्राचीन भाषा में చేయుట **'चेयुट'** वाले रूप के साथ भी 'वलयुनु' के प्रयोग पाये जाते हैं। जैसे, नन्नय भट्टारक के ఆంధ్ర మహాభారతము 'आन्ध्र महाभारतमु' का यह प्रयोग :— ఎవ్వరిం బాటించుట విభునకు వలయు "ऍव्वरिं **बाटिंचु.ट** विभुनकु **वलयु**", (सभी का मान रखना राजा को चाहिए।) परंतु, 'ट' वाला रूप भाषा में प्रचलित नहीं हुआ। 'पुस्तक पढ़नी चाहिए' में क्रिया के रूप में जो लिंग परिवर्तन है, अथवा 'ये दृश्य देखने चाहिएँ'— में जो वचन परिवर्तन है तॆलुगु में ये दोनों नहीं हैं।

'हमें काम करना चाहिए'—इसमें कर्ता संप्रदान कारक में है। आधुनिक तॆलुगु के इसके समानार्थक प्रयोग में कर्ता कर्तृकारक में ही रहता है, संप्रदान में नहीं। जैसे—మేము పని చేయవలెను **'मेमु (हम) पनि चेयवलॆनु'**। किन्तु प्राचीन प्रयोगों में संप्रदान कारक भी पाया जाता है। जैसे, उपर्युक्त 'आन्ध्र महाभारतमु' के प्रयोग में—విభునకు వలయు **'विभुनकु वलयु'** (राजा को चाहिए)। "పోయిరావలయుమాకు" **पोयिरावलयु माकु** (जा कर आना चाहिए हमको) ऐसे प्राचीन प्रयोग ध्यान देने योग्य हैं।

'आपको क्या चाहिए'— इसका तॆलुगु पर्यायवाक्य— మీకు ఏమి కావలయును 'मीकु एमि कावलयुनु' है : इस కావలయును **'कावलयुनु'** में— కాన్ + వలయును 'कान् + वलयुनु' का संयोग है। కాన్ **'कान्'** का अर्थ—**होना** तथा వలయును 'वलयुनु' का अर्थ **'चाहिए'** है। सिर्फ వలయును 'वलयुनु' का कोई अर्थ नहीं होता। पर हिन्दी में 'चाहिए' का स्वतंत्र प्रयोग भी पाया जाता है। बोलचाल की दखिनी में 'चाहिए' के स्थान पर 'होना' का प्रयोग होता है। जैसे—**'आपको क्या होना ?'**

'वलयुनु' का कालभेद इस प्रकार होगा :—

१. నేను చదువ వలయును नेनु चदुव वलयुनु (मुझे पढ़ना चाहिए) भविष्य या तद्धर्म।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२. నేను చదువ వలసియున్నది नेनु चदुव वलसियुन्नदि (मुझे पढ़ना चाहिए) वर्तमान।

३. నేను చదువ వలసి యుండెను नेनु चदुव वलसियुडे॑नु (मुझे पढ़ना चाहिए था) भूत

निषेधार्थक :—

निषेधार्थक—'जाना नहीं चाहिए' के लिए आधुनिक शैली में పోగూడదు **'पोगूडदु'** प्रयुक्त होता है। 'कूडदु'-'कूडु' धातु का नकारात्मक रूप है, अतः 'कूडदु', का शाब्दिक अर्थ है—'अनुचित'। इस तरह పోగూడదు 'पोगूडदु' का अर्थ 'जाना उचित नहीं'—होता है। प्राचीन भाषा में వలెను 'वले॑नु' या వలయును 'वलयुनु' का नकारात्मक रूप వలవదు **'वलवदु'** मिलता है[1], जो क्रमशः बदल कर వద్దు "वद्दु" हो गया है। వలవదు > వలదు > వద్దు **(वलवदु > वलदु > वद्दु)**। यह వద్దు "वद्दु" आधुनिक शैली में मध्यम पुरुष का निषेध विध्यर्थक "मत" का भी पर्याय है।

प्राचीन प्रयोगों में, कहीं-कहीं इस संयुक्त क्रिया के दोनों अंश एक दूसरे से अलग हो कर आये हैं; जैसे : "వలయుం దల్లక్షణంబు వరుసం దెలియన్" **"वलयुं** दल्लक्षणंबु वरुसं **दे॑लियन्** ।" (కావ్యాలంకార చూడామణి काव्यालंकार चूडामणि)। इसमें తెలియన్ వలయున్ 'ते॑लियन् वलयुन्' (समझना चाहिए) संयुक्तक्रिया है, परंतु इसके दोनों खण्ड अलग हो कर बीच में दूसरे शब्द आ गये हैं। हिन्दी में भी **"चाहिए** तुमको सच **बोलना"**—ऐसे प्रयोग कहीं कहीं पाये जाते हैं।

---

१. "కథ జగత్ ప్రసిద్ధ గావున బూర్వపర్వార్థయుక్తి నేయునట్టి యెడల
యత్నమించుకంత యైనను వలవదు వలసినట్లు సెప్పవలసి యుండు"

ఆంధ్ర మహాభారతము, విరాట్ పర్వము

"कथ जगत्प्रसिद्ध गावुन बूर्व पर्वार्थयुक्ति सेयुनट्टि ये॑डल,
यत्नमिंचु.कंतयैनन‍ु वलवदु वलसिनट्लु से॑प्पवलसियुंडु॥"

—आन्ध्र महाभारतमु, विराट् पर्वमु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१११, (आ) लग :

"लग" धातु कार्य का आरंभ सूचित करती है । क्रियार्थक संज्ञा के संप्रदान कारक रूप के साथ इसका प्रयोग होता है । जैसे—"मेरी बात सुन वह हँसने (को) लगा" । "मन महँ तर्क करै कपि लाग।"—इसका 'करै लागा' खड़ी बोली में 'करने लगा' बनता है । तेॅलुगु में इसके लिए—సాగు, తొడగు, ఆరంభించు 'सागु', 'तोॅडगु', 'आरंभिचु.'—का प्रयोग होता है । जैसे—बालक बोलने लगता है = బాలుడు మాటలాడ సాగును, మాటలాడ దొడగును, మాటలాడ నారంభించును बालुडु माटलाड सागुनु, माटलाड दोॅडगुनु, माटलाड नारंभिचु.नु ।

(इ) दे :

'दे' धातु अनुमति बोधक है । जैसे—'उसने मुझे जाने दिया' "मुझे अंदर आने दो" । तेॅलुगु में इसके लिए ఇచ్చు इच्चु. का उपयोग होता है । उदा०—వాడు నన్ను పో నిచ్చెను "वाडु नन्नु पोनिच्चेॅनु" (उसने मुझे जाने दिया) నన్ను లోనికి రానిమ్ము "नन्नु लोनिकि 'रानिम्मु' (मुझे अंदर आने दो) పోన్ + ఇచ్చెను = పోనిచ్చెను पोन् + इच्चेॅनु = पोनिच्चेॅनु (जाने को दिया) रान् + इम्मु = रानिम्मु (आने को दो) इ०

(ई) सक :

"सक" धातु शक्ति अथवा सामर्थ्य को सूचित करती है । जैसे—"मैं यह कार्य कर सकता हूँ ।" "कर सकता" में प्रथम अंश 'कर' धातु रूप में है; खड़ी बोली में केवल धातु के साथ ही "सक" का योग होता है, परंतु ब्रज, अवधी आदि बोलियों में पूर्वकालिक क्रिया के साथ इसका संयोजन होता हैं । जैसे—'मारि न सक्कै कोय', 'बोलि सकब', 'कहि सकतु है' इ० । संस्कृत में 'तुमन्" अंत शब्दों के साथ ही शक्ति द्योतक क्रिया का प्रयोग होता है । जैसे—"भोक्तुम् शक्नोति" (खाने को सकता है) । हिन्दी में भी कहीं कहीं "मैं नहीं जाने सकता हूँ"—ऐसे प्रयोग भी मिलते हैं ।[1]

---

१. दे० A Grammar of the Hindi Language—Kellog, P. 264.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेॅलुगु में 'सक' के अर्थ में కలుగు, చాలు, ఓపు 'कलुगु', 'चा़लु', 'ओपु'—का प्रयोग होता है।[1] उदा० వాడు యీ పని చేయగలుగుచున్నాడు 'वाडु यी पनि चेयगलुगुचु.न्नाडु' (वह यह काम कर सकता है), నేను చేయగలిగితిని 'नेनु चेयगलिगितिनि' (मैं कर सका), వారు చూడగలుగుదురు 'वारु चू.डगलुगुदुरु' (वे देख सकेंगे), నీవు చూడ జాలవు 'नीवु चूडजालवु' (तुम देख नहीं सकोगे) इ०

तेॅलुगु के व्याकरण में కలుగు 'कलुगु' धातु भविष्यत् काल सूचक सहायक-क्रिया कही गई है। కల 'कल' इसका कृदंत विशेषण है । इस रूप में इसका अर्थ होगा—'जो विद्यमान है ।' उदा—ఇంటిలో గల మనుష్యులు 'इंटिलो गल मनुष्युलु' (घर में विद्यमान मनुष्य), రెక్కలు+కల=రెక్కలుగల रेॅक्कलु + कल = 'रेॅक्कलुगल' (वह जिसके पंख हैं) । सार्वनामिक प्रत्ययों के मेल से इस 'कल' धातु से भिन्न-भिन्न रूप बनते हैं, जैसे—కలడు कलडु (वह विद्यमान है), కలదు कलदु (वह-अमहत्-विद्यमान है), కలవు कलवु (तुम विद्यमान हो)। इस प्रकार చేయన్ + కలడు = చేయగలడు चेयन् + कलडु = 'चेयगलडु' का अर्थ होगा—'वह करने को है अथवा वह करेगा' भविष्यत् सूचक बनता है । చేయగలడు 'चेयगलडु' के पर्याय में చేయనున్నాడు 'चेयनुन्नाडु' का भी प्रयोग प्रचलित है, इसका भी भविष्यदर्थ ही होता है। परन्तु आधुनिक तेॅलुगु में చేయగలడు 'चेयगलडु' आदि रूपों का भविष्यत् काल का अर्थ बदल कर शक्तिद्योतक अर्थ रूढ़ हो गया है । शुद्ध भविष्यत् अर्थ में—చేయును, చేయనున్నాడు, చేయబోవుచున్నాడు चेयुनु, चेयनुन्नाडु, चेयबोवुचु.न्नाडु—आदि क्रिया रूप प्रचलित हो गये हैं।

కల 'कल' धातु, अपने स्वतंत्र रूप में अन्य कई अर्थों के साथ-साथ, शक्ति अथवा सामर्थ्य को भी सूचित करती है, जैसे—కలవారు 'कलवारु'

---

१. इनमें से కలుగు 'कलुगु' का प्रचलन आधुनिक तेॅलुगु में विशेष रूप से है। ఓపు 'ओपु' पुराना पड़ गया । చాలు 'चा़लु' का यत्रतत्र प्रयोग होता है। पर निषेध या नकारार्थ में इसका प्रयोग अधिक व्याप्त है, जैसे—చేయ జాలడు 'चेयजालडु' (वह नहीं कर सकता)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
(सशक्त मनुष्य ब. व.), కలితనము कलितनमु (सामर्थ्य) इ०[1] इस प्रकार చేయగలుగుచున్నాను 'चेयगलुगुचु.न्नानु' और చేయగలను "चेयगलनु" दोनों रूप वर्तमान भाषा में शक्ति द्योतक हैं।[2]

నేను చేయగలను "नेनु चेयगलनु" (मैं कर सकता हूँ)—इसका नकारात्मक रूप నేను చేయలేను "नेनु चेयलेनु" बनेगा। अन्य क्रियाओं के भी ऐसे ही रूप बनते हैं।

हिन्दी में शक्ति द्योतक संयुक्त क्रिया की रचना में "सक" के अतिरिक्त "पा" का भी प्रयोग होता है। जैसे—"तुम जा नहीं पाओगे", अथवा "जाने नहीं पाओगे।"

"जा सकते हो" "कर सकते हो"—आदि हिन्दी के प्रयोगों में, शक्ति के अतिरिक्त, संभावना तथा अनापत्ति का भी अर्थ व्यक्त होता है। जैसे—"काम समाप्त हो चुका, अब तुम जा सकते हो" "कमजोरी के कारण आदमी बेहोश हो सकता है" तेलुगु में इस आशय के लिए, शक्ति द्योतक "कल" का

---

१. दे०—"వినుమా పనికెల్లఁబాండుపుత్రులే కలవారు." "विनुमा पनिकेल्लँ बांडुपुत्रुले कलवारु" (सुनो उस कार्य के लिए एकमात्र पाण्डुपुत्र ही समर्थ हैं।)

—ఆంధ్ర మహాభారతము, ఉద్యోగపర్వము 3-వ ఆశ్వాసము 'आन्ध्र महाभारतमु, उद्योग पर्व ३—आश्वासमु.

२ प्राचीन भाषा में यह शक्ति द्योतक सहायक-क्रिया—'कल', मुख्य क्रिया से अलग होकर भी प्रयुक्त होती थी। जैसे—'సింహ కవచంబు దొడిగిన జెనటి కుక్క, గంధగజగంధమునకును గలదె నిలువ.' 'सिंहकवचंबु दोंडिगिन जेनटि कुक्क, गंधगजगंधमुनकुनु गलदें निलुव ?' (सिंह का कवच पहना हुआ यह नीच कुत्ता, क्या मस्त हाथी का सामना कर सकेगा ?) इसमें నిలువన్ + కలదె 'निलुवन् + कलदें' उलट कर కలదె + నిలువన్ 'कलदें + निलुवन्' हो गया है। (अर्थात्—'सामना करने को + सकेगा'—उलट कर 'सकेगा + सामना करने को'—हो गया है)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रयोग नहीं होता, उसके बदले వచ్చును वच्चु.नु का प्रयोग होता है।[1] जैसे-- పని పూర్తియైనది, ఇక మీరు వెళ్ళ వచ్చును 'पनि पूर्तियैनदि, इक मीरु वे॑ळ्ळ-वच्चु.नु' यह "वच्चु.नु"--వచ్చు "वच्चु." धातु से बना तद्धर्म रूप है, जो अव्यय के समान सभी पुरुषों में प्रयुक्त होता है। వచ్చును "वच्चु.नु" का शाब्दिक अर्थ होता है--आवेगा।

११२. (२) वर्तमानकालिक तथा भूतकालिक कृदंतों से बनने वाली संयुक्त क्रियाएँ :—

१. वह गाता रहता है — వాడు పాడుచుండును वाडु पाडुचु.नुंडुनु

२. मैं पढ़ता जाऊँगा — నేను చదవుచు పోయెదను नेनु च.दुवुचु.पोये॑दनु

३. तुम तुरन्त चले जाओ — నీవు వెంటనే వెళ్ళిపొమ్ము नीवु वें॑टने वे॑ळ्ळि पो॑म्मु

४. वह आया चाहता है — వాడు రాబోవుచున్నాడు वाडु राबोवु चु.न्नाडु

५. वह दस बजे सोया करता है — వాడు పది గంటలకు నిద్ర పోవుచుండును वाडु पदि गंटलकु निद्रपोवुचुं.डुनु

ऊपर के वाक्यों में वर्तमान, भूत तथा भविष्यकालिक कृदंत रूपों से संयुक्त क्रियाओं की रचना हुई है। ते॑लुगु के तीसरे वाक्य में भूत के स्थान में पूर्व कालिक कृदंत दिखाई देता है।

---

१. हिन्दी की 'आ' धातु तथा ते॑लुगु की 'वच्चु.' धातु के शक्ति द्योतक प्रयोग, दोनों भाषाओं में जगह-जगह मिलते हैं। उदा० (१) 'अविगत गति कछु कहत न आवै' (सूर)। 'कहत न आवै' का अर्थ होगा—'कही नहीं जा सकती।' (२) "కొండలన్ని పిండిగొట్ట వచ్చు"—को॑ण्डलन्नि पिंडि गो॑ट्ट-वच्चु.-- (पहाड़ों को चूर-चूर किया जा सकता है) (३) "కఠిన చిత్తు మనసు కరిగింపగా రాదు" "कठिन जित्तुमनसु करिंगिंपगारादु" (कठोर चित्त वाले मनुष्य का मन द्रवीभूत नहीं किया जा सकता) ऊपर के उदाहरणों में 'आ', धातु 'सक' के अर्थ में प्रयुक्त हुई है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

११३. (३) पूर्वकालिक क्रिया के साथ जुड़कर बनने वाली संयुक्त क्रियाएँ :–

'वह अपना काम देख लेगा', 'तुम्हारी चिट्ठी मैंने पढ़ ली'—इन वाक्यों की संयुक्त क्रिया में पहला अंश मूल धातु के रूप में है। परन्तु प्राचीन भाषा में तथा बोलियों में, पहला अंश पूर्वकालिक रूप में पाया जाता है; जैसे—'**करि लेहु**'; '**बताथि दियो**'; '**मरि जैहैं**' इ०। खड़ी बोली में आते आते, करि, बताथि, मरि आदि रूपों से 'इ' प्रत्यय नष्ट हो गया। इसीलिए संयुक्त क्रियाओं में पहला अंश मूल धातु के रूप में दिखाई देता है। प्राकृतों में संयुक्त क्रिया के जो उदाहरण मिलते हैं, उनमें पहला अंश पूर्वकालिक रूप में ही मिलता है। जैसे—"**अट्ठि पतित्वा गतम्**" (हड्डी गिर कर गई); '**वे कर चुम्बिवि जोउं**" (द्वौ करौ चुम्बित्वा जीवम्) इ०। पूर्वकालिक क्रिया के साथ बनने वाली संयुक्त क्रियाओं के कुछ मुख्य उदाहरण दोनों भाषाओं से नीचे दिये जाते हैं :—

जा — दूध पानी में मिल गया = పాలు నీళ్ళలో కలిసి పోయినవి
पालु नीळ्ळलो कलिसि पोयिनवि

पड़ — फल हाथ से गिर पड़ा = పండు చేతినుండి జారి పడినది
पंडु चेतिनुंडि ज़ारि पडिनिदि

डाल — देर हो गई, जल्दी खा डालो = ఆలస్యమైనది, త్వరగా తిని వేయుము
आलस्यमैनदि, त्वरगा तिनिवेयुमु

आ — मैं यह संवाद उससे कह आया = నేను ఈ సంగతి వానితో చెప్పి వచ్చితిని
नेनु ई संगति वानितो चेॅप्पि वच्चितिनि।

ले — तुम यह चिट्ठी पढ़ लो = నీవు ఈ ఉత్తరము చదువుకొనుము
नीवु ई उत्तरमु चदुवुकोॅनुमु

११४. संयुक्त-क्रिया द्राविडी है :

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा—अर्थात् वैदिक भाषा में संयुक्त क्रिया के प्रारंभिक माने जाने वाले रूप बहुत ही थोड़े मिलते हैं। मध्यकालीन आर्य भाषा में यानी, संस्कृत, पालि और प्राकृतों में, तुमुन्नंत क्रिया से बनी संयुक्त क्रियाएँ अधिक दिखाई देती हैं। परंतु अपभ्रंश में संयुक्त क्रियाओं का विस्तार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पाया जाता है। हिन्दी, बंगला, असामी, उड़िया, मराठी, गुजराती और राजस्थानी आदि आ० भा० आ० भाषाओं में इनकी बहुतायत देखी जा सकती है। भाषा शास्त्रज्ञों ने बहुमत से यही व्यक्त किया है कि संयुक्त क्रिया रचना द्राविड भाषाओं की देन है। श्री सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने अपनी "Origin and Development of Bengali Language" (ओरिजिन एँड डेवेलोपमेंट आफ़ बेंगाली लैंग्वेज) में निम्नलिखित सम्मति प्रकट की है— "In this point there is a remarkable agreement with Dravidian. In the Dravidian Languages compound verbs of exactly similar formation and function occur. It is very likely that here we have another contribution of Dravidian in the formation of Modern Indo-Aryan speeches."

(इस अंश में द्राविड भाषाओं से जो समानता दिखाई देती है वह मार्के की है। ठीक एक ही रूप और अर्थ वाली संयुक्त क्रियाएँ द्राविड भाषाओं में अनेक पाई जाती हैं। संभवतः इस संयुक्त क्रिया रचना को, आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के विकास में, द्राविड भाषाओं का एक और योगदान कहा जा सकता है।)

श्री रामचन्द्र वाले ने अपने ग्रंथ—Verbal Composition in Indo-Aryan (वेर्बल काम्पोजिषन इन इंडो आर्यन) में यह दिखाने का प्रयास किया है कि आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में संयुक्त-क्रियाओं का विकास सीधे वैदिक भाषा से हुआ है। परंतु यह मत परिपुष्ट नहीं है।

११५ समान संयुक्त-क्रिया सूची :

नीचे की सूची में तेॅलुगु और हिन्दी में समान रूप से प्रयुक्त होने वाली कुछ मुख्य संयुक्त क्रियाएँ दी जाती हैं :—

आ··· वच्चु.ट వచ్చుట

कह आना	= चेॅप्पि वच्चु.ट	చెప్పి వచ్చుట
घुस आना	= दूरि वच्चु.ट	దూరి వచ్చుట
हो आना	= कावच्चु.ट, पोयि वच्चु.ट	కావచ్చుట, పోయివచ్చుట
उतर आना	= दिगि वच्चु.ट	దిగి వచ్చుట
घिर आना	= चु.ट्टि वच्चुट	చుట్టి వచ్చుట

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ले आना	= तीसिकोँनि वच्चु.ट	తీసికొని వచ్చుట
लौट आना	= तिरिगि वच्चु.ट	తిరిగి వచ్చుట
करते आना	= चेयुचु· वच्चु.ट	చేయుచు వచ్చుట
दौड़ आना	= परुगे त्ति वच्चु.ट	పరుగెత్తి వచ్చుట
गिर–आ गिरना	= वच्चि पड्डुट	వచ్చిపడుట
चल—ले चलना	= तीसिकोँनि पोवुट	తీసికొని పోవుట
जा—हो जाना	= अयि पोवुट	అయి పోవుట
घुस जाना	= दूरि पोवुट	దూరి పోవుట
उड़ जाना	= ऐँगिरि पोवुट	ఎగిరి పోవుట
काँप जाना	= वणकि पोवुट	వణకి పోవుట
खा जाना	= तिनि पोवुट	తిని పోవుట
खींच ले जाना	= ईड्चु. कोँनि पोवुट	ఈడ్చుకొని పోవుట
गल जाना	= करगि पोवुट	కరగిపోవుట
गिर जाना	= पडि पोवुट	పడి పోవుట
चुरा ले जाना	= दोँगिलिंचु.कोँनि पोवुट	దొంగిలించుకొని పోవుట
छोड़ जाना	= विड़िचि पोवुट	విడిచి పోవుట
छूट जाना	= वदलि पोवुट	వదలి పోవుట
चुक जाना	= तीरि पोवुट	తీరి పోవుట
झड़ जाना	= रालि पोवुट	రాలి పోవుట
टल जाना	= तप्पि पोवुट	తప్పిపోవుట
डूब जाना	= मुनिगि पोवुट	మునిగి పోవుట
झुक जाना	= वंगि पोवुट	వంగి పోవుట
थक जाना	= अलसि पोवुट	అలసి పోవుట
थम जाना	= निलिचि पोवुट	నిలిచి పోవుట
ठहर जाना	= आगि पोवुट	ఆగి పోవుట
धँस जाना	= क्रुंगि पोवुट	క్రుంగి పోవుట
निकल जाना	= वेँडलि पोवुट	వెడలి పోవుట
पक जाना	= पंडि पोवुट	పండి పోవుట
पलट जाना	= तिरिगि पोवुट	తిరిగి పోవుట

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फट जाना	= चिनिगि पोवुट	చినిగి పోవుట
उठा ले जाना	= ऍत्तुकॊनि पोवुट	ఎత్తుకొని పోవుట
उड़ा ले जाना	= लेव दीसिकॊनि पोवुट	లేవ దీసికొని పోవుట
,,	= ऍगुर वेसिकॊनि पोवुट	ఎగుర వేసికొని పోవుట
भाग जाना	= पारि़ पोवुट	పాఱిపోవుట
भूल जाना	= मरचि पोवुट	మఱచి పోవుట
मर जाना	= चनि पोवुट	చని పోవుట
मिट जाना	= मासि पोवुट	మాసి పోవుట
,,	= चॆरगि पोवुट	చెరగి పోవుట
मिल जाना	= दॊरकि पोवुट	దొరకి పోవుట
,,	= कलिसि पोवुट	కలిసి పోవుట
मुरझा जाना	= वाडि पोवुट	వాడి పోవుట
रह जाना	= उंडि पोवुट	ఉండి పోవుట
लग जाना	= चेरि पोवुट	చేరి పోవుట
चिपक जाना	= अतिकि पोवुट	అతికి పోవుట
सड़ जाना	= क्रुळ्ळि पोवुट	క్రుళ్లి పోవుట
सूख जाना	= ऍण्डि पोवुट	ఎండి పోవుట
फूट जाना	= पगिलि पोवुट	పగిలి పోవుట
टूट जाना	= विरिगि पोवुट	విరిగి పోవుట
हट जाना	= तॊलगि पोवुट	తొలగి పోవుట
घिस जाना	= अरिगि पोवुट	అరిగి పోవుట
दब जाना	= अणगि पोवुट	అణగి పోవుట
भटक जाना	= तप्पि पोवुट	తప్పి పోవుట
जकड़ जाना	= बिगिसि पोवुट	బిగిసి పోవుట
जल जाना	= मंडि पोवुट	మండి పోవుట
,,	= कालि पोवुट	కాలి పోవుట
झुलस जाना	= माडि पोवुट	మాడి పోవుట
पिस जाना / कुचल जाना	= नलिगि पोवुट	నలిగి పోవుట
फैल जाना	= प्राकि पोवुट	ప్రాకి పోవుట
बुझ जाना	= आरि पोवुट	ఆరి పోవుట

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जी जाना	= ब्रतिकि पोवुट	బ్రతికి పోవుట
भर जाना	= निंडि पोवुट	నిండి పోవుట
रुक जाना	= आगि पोवुट	ఆగిపోవుట
डाल– वेयुट వేయుట		
उखाड़ डालना	= पॆरिकि वेयुट	పెరికి వేయుట
कर डालना	= चेसि वेयुट	చేసి వేయుట
काट डालना	= कोसि वेयुट	కోసి వేయుట
खा डालना	= तिनि वेयुट	తిని వేయుట
तोड़ डालना	= त्रुंचि वेयुट	త్రుంచి వేయుట
दे डालना	= इच्चि वेयुट	ఇచ్చి వేయుట
धो डालना	= कडिगि वेयुट	కడిగి వేయుట
पढ़ डालना	= च़दिवि वेयुट	చదివి వేయుట
पी डालना	= त्रागि वेयुट	త్రాగి వేయుట
मार डालना	= च़ंपि वेयुट	చంపి వేయుట
जला डालना	= कालिच वेयुट	కాల్చివేయుట
मिटा डालना	= तुडिचि वेयुट	తుడిచి వేయుట
भाग– ले भागना	= तीसिकॊनि परुगॆत्तुट	తీసికొని పరుగెత్తుట
पड़– आ पड़ना	= वच्चि पडुट	వచ్చి పడుట
उछल पड़ना	= ऎगिरि पडुट	ఎగిరి పడుట
फिसल पड़ना	= ज़ारि पडुट	జారి పడుట
घुस पड़ना	= चॊर बडुट	చొర బడుట
चौंक पड़ना	= उलिकि पडुट	ఉలికి పడుట
टूट पड़ना	= विरिगि पडुट	విరిగి పడుట
देख पड़ना	= कन बडुट	కన బడుట
समझ पड़ना	= तॆलिय बडुट	తెలియ బడుట
सुन पड़ना	= विन बडुट	విన బడుట
भेज– कहला भेजना	= चॆप्पि पंपुट	చెప్పి పంపుట
बुला भेजना	= पिलुव बंपुट	పిలువ బంపుట
लिख भेजना	= व्रासि पंपुट	వ్రాసి పంపుట

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मर–	जल मरना	= कालि चच्च्. ट	కాలి చచ్చుట
	डूब मरना	= मुनिगि चच्चु.ट	మునిగి చచ్చుట
	दब मरना	= नलिगि चच्चु.ट	నలిగి చచ్చుట
मिल–	जा मिलना	= पोयि कलियुट	పోయి కలియుట
रख–	कह रखना	= चेॅप्पि युंचु.ट	చెప్పి యుంచుట
	बाँध रखना	= कट्टि युंचुट	కట్టి యుంచుట
	ढाँप रखना	= कप्पि युंचु.ट	కప్పియుంచుట
	दाब रखना	= अणचि युंचु.ट	అణచి యుంచుట
	रोक रखना	= निलिपि युंचु.ट	నిలిపి యుంచుట
	छिपा रखना	= दाचि युंचु.ट	దాచి యుంచుట
	सिखा रखना	= नेर्पि युंचु.ट	నేర్పి యుంచుట
ला–	खींच लाना	= लागि तॅच्चु.ट	లాగి తెచ్చుట
	छुड़ा लाना	= विडिपिंचि तॅच्चु.ट	విడిపించి తెచ్చుట
ले–	देख लेना	= चू.चु. कोॅनुट[1]	చూచు కొనుట
	चुन लेना	= एरु कोनुट	ఏరు కొనుట
	छीन लेना	= लागि कोनुट	లాగి కొనుట
	छू लेना	= अंटु कोॅनुट	అంటు కొనుట
	जान लेना	= तॅलिसि कोॅनुट	తెలిసి కొనుట
	पकड़ लेना	= पट्टु कोॅनुट	పట్టు కొనుట
	पहन लेना	= तोॅडिगि कोॅनुट	తొడిగి కొనుట
	मान लेना	= ओॅप्पु कोॅनुट	ఒప్పుకొనుట

---

१. చూచి + కొను चू.चि + कोॅनु—को मिला कर एक साथ उच्चारण करने में प्रथम धातु का 'चि' दूसरी धातु के 'कोॅ' के प्रभाव से बदल कर 'च्' हो जाता है। स्वर मैत्री के प्रभाव के कारण यह परिवर्तन कुछ क्रियाओं में देखा जाता है। फिर भी संयुक्त क्रिया का प्रथम भाग पूर्वकालिक रूप में ही रहता है।

[illegible]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ले-लेना = तीसि कॉनुट తీసి కొనుట

११६. निषेधार्थक या नकारार्थक क्रिया :

संस्कृत में निषेधार्थक या नकारार्थक अव्यय या तो वाक्य के आरंभ में आता है या क्रिया शब्द के पहले। उदा० "न शक्नोमि', 'नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य', 'नासतो विद्यते भावो', 'ना भावो विद्यते सतः', 'मा कुरु धन जन यौवन गर्वम्'। हिन्दी में—न, नहीं, मत आदि अव्यय शब्द, क्रिया के पूर्व अथवा पश्चात् स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होते हैं। इन शब्दों के कारण मूल क्रिया के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे :

तुम खाओ	तुम मत खाओ
वह जाता है	वह नहीं जाता (है)
वह खावे	वह न खावे
मैंने देखा	मैंने नहीं देखा

तॅलुगु में नकारार्थक शब्द रचना की दृष्टि से क्रिया का अंश बन कर प्रयुक्त होता है। द्राविड भाषाओं की यह भी एक विशेषता है कि उनमें निषेधार्थक धातुएँ स्वतंत्र रूप से बनती हैं। इनके साथ लिंग, पुरुष और काल सूचक प्रत्यय जुड़ते हैं। किन्तु इस प्रकार के संश्लिष्ट रूप केवल प्रार्थना और विधि में ही मिलते हैं। अन्य कालों में अव्यय शब्दों से नकारार्थ प्रकट किया जाता है। क्रिया के पश्चात् इन अव्यय शब्दों का प्रयोग होता है।

संश्लिष्ट नकारार्थक क्रिया के उदाहरण :

तिंदुनु	తిందును	= मैं खाऊँगा	तिननु	తినను	= नहीं खाऊँगा
तिंदुमु	తిందుము	= हम खाएँगे	तिनमु	తినము	= हम नहीं खाएँगे
तिंदुवु	తిందువు	= तू खाएगा	तिनवु	తినవు	= तू नहीं खाएगा
तिंदुरु	తిందురు	= तुम खाओगे	तिनरु	తినరు	= तुम नहीं खाओगे
तिनुनु	తినును	= वह खाएगा (महत्)	तिनडु	తినడు	= वह नहीं खाएगा
तिनुनु	తినును	= वह खाएगी (स्त्री. लिंग)	तिनदु	తినదు	= वह नहीं खाएगी
तिंदुरु	తిందురు	= वे खाएँगे (महत्)	तिनरु	తినరు	= वे नहीं खाएँगे
तिनुनु	తినును	= वह खाएगा (अमहत्)	तिनदु	తినదు	= वह नहीं खाएगा
तिनुनु	తినును	= वे खाएँगे (अमहत्)	तिनवु	తినవు	= वे नहीं खाएँगे

प्राथना : CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तिनु, तिनुमु తిను, తినుము – तू खा—तिनकु, तिनकुमु తినకు, తినకుము = तू मत खा

तिनुडु. तिनंडि తినుడు, తినండి = तुम खाओ, आप खाइये—तिनकुडु, **तिनकंडि** తినకుడు, తినకండి = तुम मत खाओ, आप मत खाइये ।

इसी प्रकार अक्षर परिवर्तन के द्वारा कृदंत रूपों में भी नकारार्थ व्यक्त किया जाता है ।

जैसे :

तिनु, तिनुचु.न्न తిను, తినుచున్న, = जो खाता हुआ हो—तिननि తినని = जो न खाता हुआ हो ।

तिनिन తిని‌న = जो खाया हुआ हो—तिननि = जो न खाया हुआ हो ।

तिनगल తినగల = जो खा सकता हो—तिनलेनि తినలేని = जो नहीं खा सकता हो ।

तिनि తిని = खा कर —तिनक తినక = न खा कर ।

तॆलिसिन తెలిసిన = जाना हुआ —तॆलियनि తెలియని = अज्ञात ।

वच्चु.चु.न्नु వచ్చుచున్న = जो आ रहा हो —रानि రాని = जो न आता हो ।

वच्चि వచ్చి = आ कर —राक రాక = न आ कर।

चा़लुनु చాలును = बस है —चा़लदु చాలదు = बस नहीं है ।

ऊंडि ఉండి = रह कर —लेक, उंडक లేక, ఉండక = न रह कर ।

अयि అయి = हो कर —काक కాక = न हो कर ।

उन्न ఉన్న = जो मौजूद है —लेनि లేని = जो मौजूद न हो ।

उण्डु CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. न रहेगा ।

११७. संबंध बोधक अव्यय :

हिन्दी—में साथ, पहले, आगे, पीछे, तरफ़, ओर—आदि शब्द संज्ञा और सर्वनामों के साथ संबंधकारक 'के' की सहायता से जोड़े जाते हैं । उदा० **गाँव के पास, पेड़ के नीचे** इ० । परन्तु इनमें—ओर, तरफ़, तरह, अपेक्षा आदि थोड़े से शब्द, 'के' के बदले 'की' के साथ आते हैं । उदा० **'मंदिर की तरफ़'**, 'तालाब की ओर' इ० तेॅलुगु में **मुंदु** ముందు; **वेॅनुक** వెనుక; **वैपु** వైపు; **क्रिंद** క్రింద; **पैन** పైన; **वलेॅ** వలె आदि संबंध बोधक शब्द संज्ञा आदि के विकारी रूपों (Oblique form) के साथ प्रयुक्त होते हैं; जैसे—**इंटि मुंदु** ఇంటి ముందు = घर के सामने; **एटि वैपु** ఏటి వైపు = नदी की तरफ़; **चेतिपैन** చేతిపైన = हाथ के ऊपर इ० । 'इल्लु' का अर्थ है—घर । 'इंटि' का अर्थ है—'घर के' । इसके पहले कहा जा चुका है कि तेॅलुगु में संज्ञा तथा सर्वनामों के विकारी रूप का प्रयोग संबंध कारक के अर्थ में होता है ।

११८. क्रिया-विशेषण :

'पास बैठो', 'आगे जाओ'—ऐसे वाक्यों में, **पास, आगे**—क्रिया विशेषण कहलाते हैं ।

इन शब्दों के साथ 'का, के, की'—की सहायता से संज्ञाएँ जोड़ी जा सकती हैं, जैसे—**'सामने की चीज़'**, 'दूर का पहाड़' इ० । तेॅलुगु में भी इस प्रकार की रचना होती है; उदा० **वेॅनुकटि गुणमु**, వెనుకటి గుణము = पहले का गुण, **'पूर्वपु दिनमुलु'** పూర్వపు దినములు = पूर्वकाल के दिन; **'क्रिंदि तलुपु'** క్రింది తలుపు = नीचे का दरवाजा इ०

सुंदरमु సుందరము, **मधुरमु** మధురము आदि विशेषण शब्द, గా **'गा'** या కాన్ 'कान्'—प्रत्यय से जुड़ कर क्रियाविशेषण में बदल जाते हैं; जैसे—(१) **'कोकिल मधुरमुगा पाडुचु.न्नदि'** కోకిల మధురముగా పాడుచున్నది, = कोयल मधुर गा रही है । (२) 'आ **वनमु सुंदरमुगा कनिपिंचु.चु.न्नदि**' ఆ వనము సుందరముగా కనిపించుచున్నది = वह वन सुंदर दिखाई दे रहा है । इ०

११९. अवधारणार्थक :

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी में 'ही' तथा तॆलुगु में ఏ ए अवधारणा में शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं। 'ही' साधारणतया शब्द से पृथक् ही रहता है, जैसे: मैं ही; जाऊँगा ही, देखते ही इ०। बहुत कम शब्दों में मिला हुआ रहता है; जैसे: तुम्हीं, वही, यहीं; कभी; इसी से; इ०। परंतु तॆलुगु में ఏ ए शब्द के अंतिम वर्ण के साथ मिला ही रहता है। जैसे: నేను + ఏ నేనే नेनु + ए = नेने (मैं ही)। అందుకు + ఏ = అందుకే अंदुकु + ए = अंदुके (इसीलिए)। నాతోనే नातोने (मुझ से ही); రాగానే रागाने (आते ही) ఇంటిమీదనే इंटिमीदने (घर पर ही) इन पिछले तीन शब्दों में शब्दांत का न् और ए मिलकर ने बना हुआ है। साहित्यिक शैली में शब्दांत इ के बाद आनेवाला ए अलग ही रहता है, जैसे: అది + ఏ = అదియే अदि + ए = अदिये (वही); చూచి + ఏ = చూచియే चूचि + ए = चूचिये (देखकर ही) इ०.

१२०. समुच्चय बोधक :

हिन्दी के—एवं, और, तथा, व—आदि संयोजक शब्दो के लिए तॆलुगु में—नु ను, यु యు మరియు मरियु, कूड కూడ—का प्रयोग होता है।[१] या, वा, अथवा—आदि वियोजकों के लिए—कानि కాని, लेक, లేక—शब्दों का उपयोग होता है। इनके अतिरिक्त, दोनों भाषाओं में, कुछ अव्यय शब्द भी प्रयोग के अनुसार समुच्य बोधकों का काम देते हैं, जैसे : ओंकवेळ ఒక వేళ, अयिन ऍंडल అయిన ఎడల = यदि, अगर; ऐननु ఐనను = तथापि, तोभी; ऐनप्पटिकि ఐనప్పటికి = यद्यपि; कनुक కనుక, अंदुचे అందుచే = अतएव, इसलिए इ०। परंतु ये शब्द तॆलुगु में हिन्दी के समान स्वतंत्र रूप से नहीं आते, अकसर क्रिया शब्द के साथ मिल कर प्रयुक्त होते हैं। जैसे : वाडु जब्बुगा नुन्नंदुन बयटिकि रावटमुलेदु వాడు జబ్బుగా నున్నందున బయటికి రావటములేదు = वह बीमार है, इसलिए बाहर नहीं आता। नीवु वच्चिनट्लैते नेनु कूड वॆंट वच्चॆदनु నీవు వచ్చినట్లయితే నేను కూడ వెంట వచ్చెదను = यदि तुम आओगे तो मैं भी साथ चलूँगा। वाडु इक्कडे उंटुन्नप्पटिकि नाकु कनिपिंच.लेदु వాడు ఇక్కడే

---

१. द्राविड में 'और' 'तथा' आदि के अर्थ में 'उम्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। उदा० अदियुं, इदियुं (वह भी, यह भी)। तॆलुगु के नु, यु में भी वही उम् प्रत्यय है। बोलचाल में इसका उ, ऊ. जैसा उच्चारण होता है। जैसे: నేనూ, నువ్వూ नेनू नुव्वू (मैं और तुम भी।) तुलना कीजिए : दोनों, तीनों, दोउ, चारिउ, एकौघर।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ఉంటున్నప్పటికీ నాకు కనిపించ లేదు = वह यहीं रहता है, तो भी, मुझे दिखाई नहीं दिया । इ०

१२१. विस्मयादि बोधक :

हिन्दी के—**रे, ओरे, अरे,**—द्राविड भाषा से संबंधित माने जाते हैं। संबोधन में, ते॑लुगु में, **ओ॑रे, ओरी,** ओयि, ఒరే, ఓరీ, ఓయి पुंलिंग में, तथा **ओसी,** ఓసీ स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं। **अय्यो** అయ్యో, **अम्मो** అమ్మో, दुख सूचक हैं, **हा हाय** के पर्याय हैं। **अहा, ओहो**—అహా, ఓహో हिन्दी तथा ते॑लुगु दोनों में आश्चर्य सूचित करते हैं। **शाबाश, वाहवाह,** और **भले**—का प्रयोग ते॑लुगु में भी होता है। శభాసు शबासु, వహ్వా वह्वा—उनके रूप हैं। शब्द के अंत में 'आ' स्वर जोड़ कर ते॑लुगु में प्रश्न सूचित किया जाता है। जैसे—**वाडु उन्नाड़ा ?** వాడున్నాడా ? = वह है क्या ? **नीवु वच्चे॑दवा** నీవు వచ్చెదవా ? = क्या तुम आओगे ? **नीवु वच्चे॑दवु कदा ?** నీవు వచ్చెదవు కదా ? = तुम आओगे न ? इस अंतिम प्रयोग के **'कदा'** కదా शब्द से संदेह की अपेक्षा निश्चय ही अधिक व्यक्त होता है।

१२२. द्विरुक्ति,

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय आदि शब्दों को दुहरा कर प्रयोग करना **'द्विरुक्ति'** कहलाता है। किसी शब्द के साथ उसके अर्थ से मिलते जुलते दूसरे शब्द को लगा कर प्रयोग करना, अथवा उसकी ध्वनि से सादृश्य रखने वाले निरर्थक शब्द को आगे या पीछे जोड़ कर प्रयोग करना **'पुनरावृत्ति'** कहलाता है। किसी वस्तु या प्राणी के द्वारा होने वाली ध्वनि के अनुकरण में प्रयुक्त शब्द **'ध्वन्यनुकरणात्मक'** कहलाते हैं। द्राविड भाषाओं में इन तीनों रीतियों की बहुतायत पायी जाती है। मध्यकालीन संस्कृत, पालि तथा हिन्दी आदि आ० भा० आ० भाषाओं में इन रीतियों का प्रचलन द्राविड भाषाओं का प्रभाव मना जाता है।

प्रसिद्ध भाषा तत्वज्ञ Jules Bloch का कहना है[१] कि संस्कृत के **'दिवेदिवे', 'सदः सदः'**—जैसे विरल प्रयोग द्विरुक्ति के अस्पष्ट चिह्न मात्र हैं। किंतु **म०** भा० आ० में **'अतिशयार्थक अभिव्यंजना'** के रूप में इस का विकास पाया जाता है। जैसा कि—**'पब्बं पब्बं', 'केसाकेसी'** इ०। इसके अलावा, सामासिक शब्दों में दूसरे शब्द के प्रथम व्यंजन को द्वित्व कर देने की प्रवृत्ति

१. दे० 'भारतीय आर्य भाषा'—पृ० १००, १७५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भी पालि में पायी जाती है, जैसे—कुर+कुर = कुक्कुर, घुरु+घुरु = घुग्घुरु, झला+झला = झज्झला। हिन्दी की बोलियों में भी यह द्वित्व प्रवृत्ति लक्षित होती हैं; जैसे—माटी–मट्टी,; माखन–मक्खन; एका–ऍक्का; कुतरा–कुत्ता; उलूक–उल्लू; लाडू–लड्डू; देहली–दिल्ली आदि।

नीचे द्विरुक्ति के थोड़े से उदाहरण जो तॅलुगु से साम्य रखते हैं, दिये जाते हैं :—

संज्ञा में—

१. वह घरघर जा कर भीख माँग रहा है—वाडु इल्लु इल्लु तिरिगि बिच्चमॅत्तुचु.न्नाडु వాడు ఇల్లు ఇల్లు తిరిగి బిచ్చమెత్తుచున్నాడు.

२. रंग रंग के फूल खिले हैं—रंगु रंगुल पूलु पूचिनवि రంగు రంగుల పూలు పూచినవి.

३. बाढ़ में गाँव के गाँव डूब गये हैं—वरदलो ऊळ्ळकु ऊळ्ळे मुनिगि पोयिनवि వరదలో ఊళ్లకు ఊళ్లే మునిగి పోయినవి.

सर्वनाम में :

१. अपना अपना सुख सभी देख लेते हैं—तम तम सुखमु अंदरु चू·चु.कोंॅदुरु తమ తమ సుఖము అందరుచూచు కొందురు.

२ जिस जिस की संतान न हो वे सब यह व्रत करें–ऍवरॅवरिकि संतानमु लेदो वारंदरु ई व्रतमु चेयुदुरुगाक ఎవరెవరికి సంతానము లేదో వారందరు ఈ వ్రతము చేయుదురు గాక.

विशेषण में :

१. वह मुझे रोज़ नयी नयी खबरें सुनाता है—वाडु नाकु नित्यमु क्रॉत्त क्रॉत्त संगतुलु चॅप्पुचुं.डुनु వాడునాకు నిత్యము క్రొత్త క్రొత్త సంగతులు చెప్పుచుండును.

२. ये सब छोटे छोटे बच्चे हैं—वीरंदरु चिन्न चिन्न पिल्ललु వీరందరు చిన్న చిన్న పిల్లలు.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्रिया में :

१. दौड़ दौड़ कर बालक थक गया—**परुगेॅत्ति परुगेॅत्ति** पिल्लवाड़ु अलसि पोयिनाड़ु పరుగెత్తి పరుగెత్తి పిల్లవాడు అలసి పోయినాడు.

२. तुम्हारा रास्ता देख देख कर मेरी आँखें फूट गयीं—**नीकोॅर्कु** ऍदुरु चू.चि चू.चि ना कन्नुलु लोॅट्ट पोयनवि నీ కొఱకు ఎదురుచూచిచూచి నా కన్నులు లొట్ట పోయినవి.

अव्यय में :

१. तुम सब पास पास बैठो—मीरंदरु **दग्गिर दग्गिरगा** कूर्चोॅनंडि మీరందరు దగ్గర దగ్గరగా కూర్చొనండి.

२. वह कहाँ कहाँ जाता है, मुझे मालूम नहीं—वाड़ु **ऍक्कडॆक्कडिकि** पोवुनो नेनु ऍरुगनु వాడు ఎక్కడెక్కడికి పోవునో నేను ఎఱుగను

३. इस पुस्तक में बीच बीच में कागज फट गये हैं—ई पुस्तकमु लो **मध्य मध्यन** कागितमुलु चिनिगि पोयिनवि ఈ పుస్తకములో మధ్య మధ్యన కాగితములు చినిగి పోయినవి.

४. तुम जल्दी जल्दी जाओ, नहीं तो गाड़ी नहीं मिलेगी—मीरु **त्वर त्वरगा** पोण्डि, लेकपोयिन बंडि अंददु మీరు త్వర త్వరగా పొండి, లేక పోయిన బండి అందదు.

१२३. पुनरावृत्ति

पुनरावृत्त शब्दों में, वर्ण-समीकरण तथा वर्णागम की भी रीति हिन्दी तथा तॆलुगु के कतिपय शब्दों में देखी जाती है। उदा०

१. **समीकरण**— (हिं०) भड़+भड़=भड़भड़ (भीड़ की गड़बड़ी)

(तॆ०) तुनुक+तुनुक=तुत्तुनुक (अनेकों खण्ड)

తునుక + తునుక = తుత్తునుక;

गोलु+गोलु=गोॅग्गोलु (तीव्र क्षोभ)

గోలు + గోలు = గొగ్గోలు

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२. 'आ' का आगम– (हिं०) धड़+धड़ = धड़ाधड़; इसी प्रकार––फटाफट, सटासट, तड़ातड़, टलाटली, चलाचली, तनातनी इ०

धक्कंधक्का, गुत्थंगुत्था––आदि में अनुस्वार का आगम है।

(तें०) सरि+सरि = सरासरि, సరాసరి

तुनक+तुनक = तुनातुनक, తునాతునక, हुटाहुटि హుటాహుటి इ०

३. व्यंजन का आगम–(हिं०) चूर + चूर = चकचूर, इसी प्रकार–चकचूम, झकझोर इ०

(तें) कड+कड = कट्टकड కడ + కడ = కట్టకడ,

तुद+तुद = तुट्टतुद, తుద + తుద = తుట్టతుద,

इसी प्रकार : बिर्ऱबिगियु బిఱ్ఱబిగియు, विर्ऱवीगु విఱ్ఱవీగు, कोकोॅल्ल కోకొల్ల

१२४. सार्थक द्वंद्व :

प्रथम शब्द के साथ, संबंधित अर्थ वाले किसी अन्य शब्द को जोड़ कर बहुत से द्वंद्व-शब्द हिन्दी तथा तेॅलुगु में बनाये जाते हैं। नीचे दिये उदाहरणों में साम्य देखा जा सकता है :

तेॅलुगु		हिन्दी
१. अदरु बेॅदरु (लेकुंडुट)	అదరు బెదరు (లేకుండుట)	टसमस (न होना)
२. इप्पुडो अप्पुडो (अनुट)	ఇప్పుడో అప్పుడో (అనుట)	अब तब (होना, करना)
३. इरुगु पोॅरुगु	ఇరుగు పొరుగు	पास पड़ोस
४. इल्लु वाकिलि	ఇల్లు వాకిలి	घर द्वार
५. उक्किरि बिक्किरि (अगुट)	ఉక్కిరి బిక్కిరి (అగుట)	हक्का बक्का (होना)
६. उब्बु तब्बुलु (अगु)	ఉబ్బు తబ్బులు (అగు)	उभ चुभ (होना)
७. ऊरु पेरु (लेकुंडुट)	ఊరు పేరు (లేకుండుట)	नाम धाम (न होना)
८. गुड्डु गोचि; बट्टपात	గుడ్డ గోచి, బట్ట పాత	कपड़ा लत्ता
९. गड्डि गादमु	గడ్డి గాదము	घास फूस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तेॅलुगु		हिन्दी
१०. गोॅड्डु गोद	గొడ్డు గోద	गाय बैल
११. चुट्टमु पक्कमु	చుట్టము పక్కము	भाई बंध
१२. चेॅट्टु चेम	చెట్టు చేమ	पेड़ पौधे
१३. चेनु चेॅलक	చేను చెలక	खेती बाड़ी
१४. चेॅत्त चेॅदारमु	చెత్త చెదారము	कूड़ा करकट
१५. टला टोली (धोखा)	టాలా టోలీ	टलाटली
१६. तोडु नीड	తోడు నీడ	साथी संगी
१७. तल तोक	తల తోక	सिर पैर
१८. तळुकु बेॅळुकु	తళుకు బెళుకు	चमक दमक
१९. दरि दापुलु	దరి దాపులు	ओर छोर
२०. पिल्ल जेॅल्ल	పిల్ల జెల్ల	बच्चा कच्चा
२१. पुरुगु बुट्र (पुट्ट — बाँबी)	పురుగు బుట్ర	कीड़े मकोड़े
२२. वेर सारमु	వేర సారము	मोल तोल
२३. बागु ओगुलु	బాగు ఓగులు	भलाई बुराई
२४. मिट्ट पल्लमु	మిట్ట పల్లము	ऊबड़ खाबड़
२५. लावा देवी	లావా దేవీ	लेन देन

१२५. निरर्थक द्वंद्व :

सार्थक शब्द की अथवा उसके अंश की ध्वनि को ले कर, उसके अनु-करण में कोई निरर्थक शब्द अथवा ध्वनि जोड़ी जाती है। इसमें मुख्य शब्द के अर्थ का विस्तार तो नहीं होता पर, 'वगैरह', 'इत्यादि' का बोध होता है। निरर्थक शब्द कभी पहले आता है तो कभी पीछे। ऐसे शब्दों के उदाहरण दोनों भाषाओं से नीचे दिये जाते हैं :

हिन्दी	तेॅलुगु	
१. दूध वूध	पालु गीलु	పాలు గీలు
२. चुडुआ उडुआ	अटुकुलु गिटुकुलु	అటుకులు గిటుకులు

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी	तॆलुगु	
३. पानी **वानी**	नीळ्ळु **गीळ्ळु**	నీళ్లు గీళ్లు
४. पैसे **वैसे**	डब्बुलु **गिब्बुलु**	డబ్బులు గిబ్బులు
५. भात **वात**	अन्नमु **गिन्नमु**	అన్నము గిన్నము
६. छूत **छात**	अंटु **सॊंटु**	అంటు సొంటు
७. टेढ़ा **सेढ़ा**	वंकर **टिंकर**	వంకర టింకర
८. सट्टा **बट्टा** (मेलजोल)	चट्टा **बट्टा**	చట్టా బట్టా
९. काम **वाम**	पनि **गिनि**	పని గిని
१०. आस **पड़ोस**	इरुगु **पॊरुगु**	ఇరుగు పొరుగు
११. तितर **बितर**	चॆल्ला **चॆदरु**	చెల్లా చెదరు

ऊपर के उदाहरणों में मोटे अक्षर वाले शब्द निरर्थक हैं।

१२६. ध्वन्यनुकरण :

संज्ञा, विशेषण तथा क्रियाओं में ध्वन्यनुकरणात्मक शब्द दोनों भाषाओं में काफ़ी पाये जाते हैं। पर, एक ही प्राकृतिक ध्वनि के अनुकरण में इन भाषाओं में प्राय: अलग-अलग शब्द प्रचलित हो गये हैं। फिर भी थोड़े से ऐसे शब्द भी मिलते हैं जो हिन्दी तथा तॆलुगु दोनों में क़रीब-क़रीब एक ही रूप में दिखाई देते हैं; जैसे—

हिन्दी	तॆलुगु	
गटगट (पी जाना)	गुटगुट (त्रागुट)	గుటగుట (త్రాగుట)
धड़ धड़ (आवाज करना)	दडदड (कॊट्टुकॊनुट)	దడదడ (కొట్టుకొనుట)
गिड़गिड़ाना	गडगड (वणकुट)	గడగడ (వణకుట)
चिटपट (जलने की ध्वनि)	चिटपट (मंडुट)	చిటపట (మండుట)
छल-छल (आँसू गिरना)	ज़लज़ल (कन्नीरु कारुट)	జలజల (కన్నీరు కారుట)
चरमर	किर्रु मुर्रु	కిర్రు ముర్రు
बढ़ बढ़ (कर जाना, बोलना)	(बुडबुड पोवुट)	బుడబుడ (పోవుట)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी	तॆलुगु	
झिलमिल	मिलमिल (प्रकाशिंचु.ट)	మిలమిల (ప్రకాశించుట)
चिड़चिड़ाना	चिऱ्चिऱ्लाडुट	చిఱచిఱలాడుట
घिर घिर (आना)	गिरगिर (तिरुगुट)	గిరగిర తిరుగుట
घुरघुराना	गुरगुरलाडुट	గురగురలాడుట
(प्रयोग : 'घुरघुरात हय आरव पाये')		
तड़तड़ (बिजली का चमकना)	तळतळ (मॆऱयुट)	తళతళ (మెఱయుట)
चिहुँक उठना	चिवुक्कुन (लेचु.ट)	(చివుక్కున లేచుట)
चुटकी (बजाना)	चिटुक (वेयुट)	చిటుక (వేయుట)
फुर से (उड़ जाना)	बुर्रुन (ऍगिरि पोवुट)	బుఱ్ఱున (ఎగిరి పోవుట)
गुटकना	गुटक (वेयुट)	గుటక (వేయుట)

१२७. तॆलुगु क्रिया के कुछ विशेष प्रयोगों में अनुप्रास के द्वारा ध्वनि साम्य दिखाया जाता है—यथा—

పీల్చి పిప్పి చేయుట	पील्चि पिप्पि चेयुट	=	चूस चूस कर सीठी बनाना
చిక్కి శల్యమగుట	चिक्कि शल्य मगुट	=	सूख सूख कर काँटा होना
పెంచి పెద్ద చేయుట	पॆंचि पॆद्द चेयुट	=	पाल पोस कर बड़ा करना
విసికి వేసారుట	विसिकि वेसारुट	=	थक थक कर बिसूरना
త్రాగి తందనాలాడుట	त्रागि तंदनालाडुट	=	नशा पी कर उछलकूद मचाना इ०

१२८. कृत् प्रत्यय (विशेष) :

क्रिया के प्रकरण में हम देख चुके हैं कि तॆलुगु में—చు 'चु.' वर्तमान कालिक प्रत्यय है : తినుచు (तिनुचु.); ఉ 'उ' तथा ఎడు 'ऍडु' भविष्यत् काल के प्रत्यय हैं : తిను, తినెడు (तिनु, तिनॆडु); ఇ 'इ' भूत असमापिका (पूर्वकालिक) प्रत्यय है : తిని (तिनि); న 'न' विशेषणात्मक प्रत्यय हैं : తినుచున్న, తినిన (तिनुचु.न्न, तिनिन) तथा అన 'अन' और ట 'ट' भाववाचक प्रत्यय हैं। उसी प्रकार हिन्दी में—'ता' वर्तमान कालिक प्रत्यय है : (चलता); 'इ' पूर्व-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कालिक प्रत्यय है : (चलि); 'आ' भूतकालिक है : (चलि + आ > चला) और 'अन' तथा 'ना' भाववाचक प्रत्यय हैं। इन उपर्युक्त प्रत्ययों के अतिरिक्त और भी कई कृत् प्रत्यय दोनों भाषाओं में प्रचलित हैं।

संस्कृत में—**शुष्क, नाविक, शोक. पाक, स्मारक, पावक,** आदि शब्दों में ककार युक्त प्रत्यय विद्यमान हैं। इनमें से कुछ का विकास हिन्दी में भी हुआ है। तेॅलुगु तथा कुछ अन्य द्राविड भाषाओं में क, इक, अकं, कॅ, के, जैसे ककारांत प्रत्ययों की बहुतायत पायी जाती हैं। रचना प्रक्रिया की यह समानता ध्यान देने योग्य है।

निम्न लिखित कृत् प्रत्यय प्रायः एक ही रूप में हिन्दी तथा तेॅलुगु दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होते दिखाई दे रहे हैं :

१. क, का, की, कू, अक

(हिं) टूट—**टूक**। झूम—**झूमक**। घाल—**घालक**। चाल—**चालक**। चाह—**चाहक**। बैठ—**बैठक**। लड़—**लड़ाका**। धमक—**धमाका**। डूब—**डुबकी**। तैर—**तैराक्**। उचक—**उचक्का** इ०

(तेॅ) నడచు नडचु (चल) — నడక **नडक** (चाल)
మునుగు मुनुगु (डूब) — మునక **मुनक** (डुबकी)
పోవు पोवु (जा) — పోక **पोक** (गमन)
దంపు दंपु (कूट) — దంపకం **दंपकं** (कुटाई)
అద్దు अद्दु (छाप) — అద్దకం **अद्दकं** (छपाई)

२. त

(हि) बच—**बचत**। खप—**खपत**। लग—**लगत, लागत**। चाह—**चाहत**।

(तेॅ) మేయు मेयु (चर) — మేత **मेत** (चारा, चराई)
కోయు कोयु (काट) — కోత **कोत** (कटाई, काट)
వ్రాయు व्रायु (लिख) — వ్రాత **व्रात** (लिखाई, लिखावट)

३. न, अन्

(हिं) चल—**चलन**। जल—**जलन**। सी—**सीवन**। बिछा—**बिछावन**। मिल—**मिलन**।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(ते) గడించు गडिंचु. (कमा) — గడన गडन (कमाई)

దీవించు दीविंचु. (आशीर्वाद दे) — దీవన दीवन (आशीर्वाद)

మన్నించు मन्निंचु. (मान) — మన్నన मन्नन (सम्मान)

४. अव, उव, आव

(हिं) चढ़—चढ़ाव। बन—बनाव। लग—लगाव। घूम—घुमाव।

(तें) అణగు अणगु (दब) — అణకువ अणकुव (नम्रता)

లోగు लोगु (झुक) — లోకువ लोकुव (अधीनता, परतंत्रता)

చచ్చు चच्चु. (मर) — చావు चावु (मरण)

కొలుచు कोॅलुचु. (सेवा कर) — కొలువు कोॅलुवु (सेवकाई, नौकरी)

నగు नगु (हँस) — నగవు नगवु (हँसी)

५. प, आप

(हिं) मिल—मिलाप। जुल—जुलाप। तड़—तड़प

(तें) వలచు वलचु. (चाह) — వలపు वलपु (चाह, अभिलाषा, प्रेम)

తలచు तलचु. (सोच) — తలపు तलपु (सोच, विचार)

చూచు चू.चु (देख) — చూపు चू.पु. (दृष्टि)

६. ट, टा, टु, ड, डु

हिन्दी में मिलावट, सजावट, घबड़ाहट आदि शब्दों के 'वट', 'हट' प्रत्ययों का मूल स्रोत स्पष्ट नहीं है[१]। इनके अतिरिक्त अनेक टकारांत शब्द प्रचलित दिखाई देते हैं जिनमें कई तो प्रा० भा० आ० भाषा के 'ल्त' और 'र्त' से विकसित हुए हैं : उदा०

(हि०) चिप—चिपटा, झँप—झपटा; लप—लपट, चिल्ला—चिल्लाहट, थप—थप्पड, बुला—बुलाहट।

(तें) తేట तेट (छन) — తేట तेट (छना हुआ द्रव)

ఊరు ऊरु (सरसना) — ఊట ऊट (स्रोत)

---

१. जूल्स ब्लाख संस्कृत की घट धातु (दन्तघात) से हट प्रत्यय की संभावना देखते हैं।

—भारतीय आर्य भाषा-पृ. १७८

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

పొడుచు पोड़ुचु. (भोंक)	పోటు पोटु (भोंक, मार)
పడు पडु (गिर)	పాటు पाटु (पतन, धक्का)
దిగు दिगु (उतर)	దిగుడు दिगुडु (उतार)
వండు वंडु (पका)	వండుడు वंडुडु (पाचन)
పెట్టు पॅट्टु (रख)	పెట్టుడు पॅट्टुडु (रखने की क्रिया)

७. इल्ल :

प्राकृतों में, 'इल्ल' प्रत्यय से भूतकालिक कृदंत विशेषण बनते हैं; जैसे--'पुच्छल्ल' (जो पूछा गया), 'लोहिल्ल' (जो लुभाया गया) इ० । मागधी भाषाओं तथा महाराष्ट्री में भूतार्थ में इसी के 'ल' प्रत्यय युक्त क्रिया रूप मिलते हैं। तॅलुगु में, तत्सम संज्ञाओं तथा विशेषणों से क्रिया-पद सिद्ध करने में, विकल्प से ఇల్లు 'इल्ल' प्रत्यय का भी प्रयोग पाया जाता है। यद्यपि दोनों में कोई संबंध नहीं दीखता, फिर भी यह विचारणीय है कि 'शोभित होना' के अर्थ में तॅलुगु में 'शोभिल्लु' का विकास तो नहीं हुआ ? 'इल्लु' ठेठ तॅलुगु क्रियाओं में भी प्रयुक्त होता है।

उदा० शोभा--शोभिल्लु,	(शोभित होना)	శోభా–శోభిల్లు
शोष--शोषिल्लु	(शुष्क होना)	శోష–శోషిల్లు
संधि--संधिल्लु	(मिल जाना)	సంధి–సంధిల్లు
मत्त--मत्तिल्लु	(मस्त होना)	మత్త–మత్తిల్లు

१२९. तद्धित प्रत्यय :

संज्ञा तथा विशेषणों में प्रत्यय के लगाने से जो शब्दभेद बनते हैं उन्हें तद्धितांत कहते हैं। जैसे--घर--घरेलू, जुआ--जुआरी, लाल--ललाई इ० हिन्दी तथा तॅलुगु में सादृश्य रखने वाले थोड़े से तद्धित प्रत्ययों का परिचय नीचे दिया जाता है।

(१) पनं, तनं

संस्कृत में 'त्वम्' अथवा 'त्वनम्' अवस्था या स्थिति सूचक भाववाचक प्रत्यय है। जैसे—वृद्ध--वृद्धत्वम्, वृद्धत्वनम्। प्राकृतों में 'त्वम्' और 'त्वनम्'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
से--'पनं' और 'तणं' रूप बन गये। जैसे--वृद्धत्वम्> वड्ढप्पणं[1], वृद्धत्वनम्> वड्ढत्तणं। हिन्दी में 'पण' वाले रूप तथा तॆलुगु में 'तण' वाले रूप प्रचलित हो गये हैं।[2]

उदा० (हिं०)--बड़ा-बडप्पन बच्चा-बचपन, पागल-पागलपन,

(तॆ०)—कन्नॆ-कन्नॆतनमु (बदारीपन) కన్నె-కన్నెతనము, चिन्न—चिन्नतनमु (छुटपन) చిన్న-తన్నము, पसि-पसितनमु (शिशुता) పసి-పసితనము.

यह 'तनमु' प्रत्यय तद्भव है, अत: संस्कृत शब्दों के साथ यह जोड़ा नहीं जा सकता। कन्नड भाषा के व्याकर्ता केशिराज ने अपने 'शब्दमणिदर्पण' में कहा : సంస్కృతదొళ్ ఇదు సల్లదు, ఆరోహకతనం ఎంబుదు అసద్ధం"—अर्थात् संस्कृत में यह चल नहीं सकता, 'आरोहकतनम्' कहना असंगत होगा। परंतु तॆलुगु में లోభితనం लोभितनं जैसे कुछ प्रयोग अपवाद के रूप में प्रचलित हो गये हैं। द्राविड प्रत्यय తన్మె तन्मै से यह भिन्न मालूम होता है।

(२) आर, आरी, कार :

संस्कृत के, कार, कारिक, कर्तृक, कर्तृका—आदि प्रत्ययों से विशेषण शब्द, व्यावसायिक नाम तथा कर्ता (करने वाला) सूचित होते हैं। इन प्रत्ययों का हिन्दी तथा तॆलुगु में एक समान प्रयोग दिखाई देता है।

उदा० (हिं०)---लोहा—लुहार, सोना—सुनार, कुंभ---कुम्हार (कार> आर) पूजा–पुजारी, जुआ–जुआरी, खेल–खिलारी (ड़ी), भीख---भिखारी (कारिक> आरी)

(तॆ०)माट–माटकारि (वाक्चतुर) మాట-మాటకారి, पट्टु---पट्टुकारि (रेशम बुनने वाला) పట్టు-పట్టుకారి (कारी> कारि = కారి)

कम्मरि (लुहार) కమ్మరి, कुम्मरि (कुम्हार) కుమ్మరి, पूजरि (पूजारी) పూజరి, जूदरि (जुआरी) జూదరి, कंचरि (कंसेरा) (कारी> अरि అరి)

---

१. "त्वतलो: प्पण:" प्राकृत व्याकरण, पा· ४ सू. ४३७

२. दे० 'त्वार्थे तनश्च विकृतौ स्यात्"

(आन्ध्र शब्द चिंतामणि, हलंत-सू. २८)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

टक्कु–टक्करि ([illegible]) [illegible] पोडुगु–पोँडुगरि (लम्बू) పొడుగు–పొడుగరి, गड्डुसु–गड्डुसरि (कठोर), (स्वार्थ 'अरि' प्रत्यय)

संस्कृत : कार> तमिळ : कारन्, तेँलुगु : कारुड्> काडु (संधि में 'गाडु')—आट–आटगाडु (खिलाड़ी) ఆట–ఆటగాడు; अंदमु–अंदगाडु (सुन्दर पुरुष) అందము– అందగాడు, बिच्चमु–बिच्चगाडु (भिखारी) బిచ్చము–బిచ్చగాడు.

संस्कृत : कर्तृका> तेँ० : कत्तिय–कत्ते (स्त्री लिं०)—अंदगत्तिय (सुन्दरी) అందగత్తియ, आटगत्तिय (खिलाड़िन) ఆటగత్తియ, बिच्चगत्ते (भिखारिन) బిచ్చగత్తె

संस्कृत : कार (कृति या कार्य के अर्थ में) :

(हिं०) फटकार, दुत्कार, इनकार।

(तेँ०) नुडि (वाक्)–नुडिकारमु (मुहाविरा) నుడి–నుడికారము, कोँलत (नाप या तोल)–कोँलगारमु (नापने की-मजदूरी కొలత–కొలగారము, नयगारमु (मृदुता మణి–మణిగారము मणि-मणिगारमु (मणियों का काम)

(३) ड़, ड़ा, ड़ी :

अपभ्रंश में तथा हिन्दी आदि आ० भा० आ० भाषाओं में—'ट' 'ड' प्रत्यय के समान जोड़ा जाता है जो बहुधा 'अल्पत्व' अथवा 'प्रियता' को सूचित करता है। विशेष रूप से व्रज तथा राजस्थानी में इस 'ड' की प्रचुरता पायी जाती है। ट, ड, आदि मूर्धन्य व्यंजनों के विकास में द्राविड भाषाओं का प्रभाव माना ही जाता है। वर्णविचार के प्रकरण में यह बताया जा चुका है कि तेँलुगु में, पूर्वावस्था के ऱ (ఱ), ळ, और (ఴ)—परवर्ती भाषा में 'ड' के रूप में बदल गये हैं। म० भा० आ० भाषा में र, ड़, ल और ळ आपस में परिवर्तित हो कर भिन्न-भिन्न बोलियों में प्रचलित हुए हैं। इस 'ड' प्रत्यय का मूल स्रोत द्राविड में अनुमानित किया जा सकता है। संस्कृत में भी, वाचाल और वाचाट, उच्चाल और उच्चाट आदि दोनों रूप वाले शब्द मिलते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी में--ड़, ड़ा, ड़ि, ड़ी, अंत वाले उन शब्दों के उदाहरण नीचे दिये जाते हैं जिनमें अल्पत्व अथवा प्रियत्व का स्फुरण कराने के लिए, 'ड' प्रत्यय का प्रयोग दिखाई देता है :

(हिं०)–बच्छ--**बच्छड़**, आम–आमड़ा, दुख–दुखड़ा, कोठ–कोठड़ी । (अपभ्रंश)--**हियड़ा** (हृदय), गोरड़ी (गोरी), सासुड़ी (सास) । जोगड़ा, पलंगडी ।

बंगला के 'खागड़ा', 'पातड़ा' जैसे शब्दों में भी इस ड़ा का अल्पार्थ में प्रयोग मिलता है । साथ ही 'टा' प्रत्यय से मोटी या भद्दी वस्तुओं का और 'टी' से छोटी और सुंदर वस्तुओं का द्योतन उस भाषा में होता है । जैसे : मानुष्टा-मानुष्टी ।

ते॑लुगु में టి टि और డి डि विशेषण प्रत्यय भी बनते हैं । जैसे : చెవుడు चे॑वुडु (बहरापन) చెవిటి चे॑विटि (बहरा); పచ్చ पच्च (हरापन) పచ్చటి पच्चटि (हरे रंग का); ఎఱుపు ऍरुपु (ललाई) ఎఱ్ఱటి ए॑र्रटि (लाल वर्ण का); డి ड़ि स्वार्थ में भी आता है, जैसे : తెలివి ते॑लिवि–తెలివిడి ते॑लिविडि (जानकारी), విరివి विरिवि–విరివిడి विरिविड़ि (विस्तार); వినికి विनिकि–వినికిడి विनिकिड़ि (सुनाई) లేమి लेमि–లేమిడి लेमिड़ि (अभाव या गरीबी) इ०

प्यार जताने के लिए स्त्रीवाचक शब्दों के साथ कभी कभी డు डु जोड़ा जाता है, जैसे : అమ్మడు अम्मडु (अक्सर बेटी के संबोधन में), రాధడు राधडु (राधा नाम वाली लड़की के लिए)

तमिळ में డా ड़ा, అడా अड़ा पुं. लिं. के तथा డీ ड़ी, అడీ अड़ी स्त्री लिं. के संबोधन में लघुता या आत्मीयता सूचित करते हैं । ते॑लुगु में రా रा और వే 'वे' इसके समानार्थक हैं । जैसे పోరా पोरा (जा रे), తినవే तिनवे (खा री) इ० प्राचीन प्रयोगों में ఏ पुंल्लिग भी द्योतित करता है । जैसे : రావే, ఈశ్వర, కావవే ! रावे ! ईश्वर, काववे ! (हे प्यारे भगवान ! तू आ और रक्षा कर)

४. संस्कृत के 'वान्' और 'मान्' प्रत्यय ते॑लुगु में वंत और मंत के रूप में प्रयुक्त होते हैं । जैसे बुद्धिमान బుద్ధిమంతుడు बुद्धिमंतुडु; धनवान ధనవంతుడు धनवंतुडु इ० । పనిమంతుడు पनिमंतुडु (कार्य कुशल) जैसे एकाध प्रयोगों में मान्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
संस्कृत प्रत्यय का योजन ठेठ तेॅलुगु शब्द के साथ देखा जा सकता है जो नियम का अपवाद है।

५. हिन्दी में ई स्त्रीलिंग प्रत्यय है, जैसे भतीजा—भतीजी, ममेरा—ममेरी। तेॅलुगु में भी इसका प्रयोग कहीं कहीं मिल जाता है। जैसे : వగలాడు वगलाडु (विलासी)– వగలాడి वगलाडि (विलासिनी); వెంకడు वेंकडु (पुरुष का नाम)–వెంకి वेंकि (स्त्री का नाम) इ०

६. हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले **खोर**, **गिरी**, **दार**, प्रत्ययों का भी प्रयोग आधुनिक तेॅलुगु में कभी कभी मिल जाता है। जैसे పేచీకోరు **पेचीकोरु**; దగాకోరు **दगाकोरु**; గుమాస్తాగిరీ **गुमास्तागिरी**; జమీందారు **ज़मींदारु**; హక్కుదారు **हक्कुदारु**। పెత్తందారు **पे॑त्तंदारु** (प्रबंधक) शब्द में ठेठ तेॅलुगु शब्द के साथ 'दार' प्रत्यय का प्रयोग मिलता है। **अप** और **दुर** तत्सम-पुर-प्रत्यय हैं (अपकीर्ति, दुर्बुद्धि)। तेॅलुगु में पुर-प्रत्ययों का अभाव है। परंतु అపనమ్మకము अपनम्मकमु (अविश्वास) దురలవాటు (दुरभ्यास) जैसे दो चार प्रयोग अपवाद स्वरूप व्यावहारिक शैली में मिल जाते हैं।

१३०. मुहाविरे :

मुहावरों का संबंध विशेषरूप से जनता की बोलचाल से होता है, उसमें परिवर्तन की अत्यंत संभावना रहती है। तेॅलुगु और हिन्दी के मुहावरों में पूर्णतया समान दिखाई देने वाले कई हैं, उन सबकी सूची तैयार करना प्रयोजनकारी होगा। यहाँ पर उदाहरण के लिए थोड़े से इनेगिने मुहावरे दिये जा रहे हैं :—

१. आँखें लाल करना—कंड्लु एॅर्र॑ चेयुट — కండ్లు ఎఱ్ఱ చేయుట
२. आँखों में धूल झोंकना—कंड्ललो दुम्मु कोॅट्टुट — కండ్లలో దుమ్ము కొట్టుట
३. आँख मारना—कन्नु कोॅट्टुट — కన్ను కొట్టుట
४. आँखें सिर पर चढ़ जाना—कंड्लु नेॅत्तिकि एॅक्कुट — కండ్లు నెత్తికి ఎక్కుట
५. आगा पीछा करना—वेॅनुक मुंदाडुट — వెనుక ముందు ఆడుట
६. आस्मान टूट पड़ना—मिन्नु विरिगि मीद पडुट — మిన్ను విఱిగి మీద పడుట
७. औंधे मुंह गिरना—बोॅक्कबोर्ल पडुट — బొక్కబోర్ల పడుట
८. कमर कसना—नडुमु कट्टुट — నడుము కట్టుట

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

९. कलेजा पानी-पानी होना—गुंडे नीरै पोवुट గుండె నీరై పోవుట

१०. गले मढ़ना—में डकु कट्टुट మెడకు కట్టుట

११. गप हाँकना—गप्पालु को ट्टुट గప్పాలు కొట్టుట

१२. गुड़ियों का खेल—बो म्मलाट బొమ్మలాట

१३. चुटकी बजाना—चिटुक वेयुट చిటుక వేయుట

१४. चोटी हाथ में आना—जु.ट्टु चे तिकि वच्चु.ट జుట్టు చేతికి వచ్చుట

१५. जी छोटा कर लेना—मनसु चिन्न बुच्चु. को नुट మనసు చిన్న బుచ్చు. కొనుట

१६. ठोकरें खाना—तन्नुलु तिनुट తన్నులు తినుట, దెబ్బలు తినుట

१७. ढिंढोरा पीटना—दंडोरा को ट्टुट దండోరా కొట్టుట

१८. तोते की रटन्त—चिलुक पलुकुलु पलुकुट చిలుక పలుకులు పలుకుట

१९. दाँत पीसना—पंड्लु को रुकुट పండ్లు కొరుకుట

२०. दाल न गलना—पप्पु उडकक पोवुट పప్పు ఉడకక పోవుట

२१. दुम दबा लेना—तोक मुडुचु.को नुट తోక ముడుచుకొనుట

२२. दीठ लगना—दिष्टि तगुलुट దిష్టి తగులుట

२३. पर लग जाना—रें क्कलु वच्चु.ट రెక్కలు వచ్చుట

२४. पाँव पकड़ना—काल्ळु पट्टुको नुट కాళ్లు పట్టుకొనుట

२५. पाले पड़ना—पाल पडुड పాల పడుట

२६. प्राण हथेली पर लेना—प्राणालु अरचेतिलो- ప్రాణాలు అరచేతిలో
नुंचु.को नुट నుంచు కొనుట

२७. पार पाना—अंतु कनुगो नुट అంతు కనుగొనుట

२८. पीठ दिखाना—वें न्नुजूपुट, वे न्निच्चु,ट వెన్ను జూపుట, వెన్నిచ్చుట

२९. पोल खोलना—गुट्टु बयट पे ट्टुट గుట్టు బయట పెట్టుట

३०. पीछे पड़ना—वेंट बडुट వెంట బడుట

३१. फूट फूट कर रोना—वें क्कि वें क्कि एड्चु.ट వెక్కి వెక్కి ఏడ్చుట

३२. फूल उठना—उब्बि पोवुट ఉబ్బి పోవుట

३३. फूटी कौड़ी—चिल्लि गव्व చిల్లి గవ్వ

३४. बगुला भगत होना—कों ग जपमु चेयुट కొంగ జపము చేయుట

३५. भूत सवार होना—दय्यमु पट्टुट దయ్యము పట్టుట

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३६. मन होना——मनसु अगुट   మనసు అగుట

३७. मुंह में पानी भर आना——नोटिलो नील्ळु ऊरुट   నోటిలో నీళ్లూరుట

३८. मुंह फेर लेना——मूति मुडुचु.कोॅनुट,   మూతిముడుచుకొనుట,
पेॅड मोॅगमु पेॅट्टुट   పెద మొగము పెట్టుట

३९. मीन मेख गिनना——मीन मेषालु लेॅक्किंचु.ट   మీనమేషాలు లెక్కించుట

४०. रंग में भंग होना——रंगमु चेॅडुट   రంగము చెడుట

४१. विष उगलना——विषमु ग्रक्कुट   విషము గ్రక్కుట

४२. सिर नीचा होना——तलवंपुलगुट   తలవంపులగుట

४३. सिर चढ़ना, या चढ़ाना——नेॅत्तिकेॅक्कुट,   నెత్తికెక్కుట,
ऍक्किंचु.कोॅनुट   ఎక్కించుకొనుట

४४. हाथ धो लेना——चेयि कडुगुकोॅनुट   చేయి కడుగు కొనుట

४५. हाथ फैलाना या पसारना——चेयि ज़ाचुट   చేయి జాచుట

४६. हवा लगना——गालि तगुलुट   గాలి తగులుట

४७. हाथ मलना——चेतुलु नलुपु कोॅनुट   చేతులు నలుపుకొనుట

४८. काल करना——कालमु चेयुट   కాలము చేయుట

४९, शहद की छुरी——तेॅने पूसिन कत्ति   తేనె పూసినకత్తి

१३१. कहावतें :

मुहाविरों के समान ही कहावतें भी भाषा की सजीवता की परिचायक होती हैं। कई कहावतें संस्कृत के प्रचार के कारण उससे सीधे भारतीय भाषाओं में आ गयी हैं। साधारण जनता की भावाभिव्यक्ति एक सी होने के कारण समानार्थक कहावतें देशी भाषाओं में अनेकों हैं; किन्तु यहाँ पर हिन्दी और तेॅलुगु से संबंध रखने वाली थोड़ी ऐसी कहावतें दी जा रही हैं जिनमें अर्थसाम्य के अतिरिक्त कहीं कहीं शाब्दिक समानता भी कुछ अंश तक पायी जाती है :

१. अंधो में काना राजा——ग्रुड्डिलो मेॅल्ल——గ్రుడ్డిలో మెల్ల

२. आप भला तो जग भला——नोरु मंचिदैते ऊरु मंचिदि——
నోరు మంచిదైతే ఊరు మంచిది

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३. ओखली में सिर दे कर मूसल की चोटों से डरना—

रोट्लो तल दूर्चि रोकटि पोट्लकु वे॑रचु.ट

రోట్లో తలదూర్చి రోకలి పోట్లకు వెఱచుట

४. कभी गाड़ी नाव पर और कभी नाव गाड़ी पर—

ओड पैन बंड्लु वच्चु.नु. बंड्लमीद ओडलु वच्चु.नु

ఓడ పైన బండ్లు వచ్చును, బండ్ల మీద ఓడలు వచ్చును.

५. घर का भेदी लंका जारै—इंटि गुट्टु लंककु चेटु—

ఇంటి గుట్టు లంకకు చేటు.

६. चार दिन की चाँदनी—मूडु नाळ्ळ मुच्च.ट—

మూడునాళ్ల ముచ్చట.

७. जो चढ़ेगा सो गिरेगा—पे॑रुगुट विरुगुट को॑रके—

పెరుగుట విరుగుట కొరకే.

८. नाच न जाने आँगन टेढ़ा—आड लेक मद्दे॑ल ओटु दनुट—

ఆడ లేక మద్దెల ఓటుదనుట.

९. बगल में छुरी मुंह में रामराम—चं.कदुड्डु शरणार्थि—

చంకదుడ్డు శరణార్థి.

१०. माता देखे पोटरी महरी देखे मोटरी—अम्म कडुपु चू.चिन, आलु मूट जूचु.नु.

అమ్మ కడుపు చూచిన, ఆలు మూట జూచును.

१२. रस्सी जल गयी, पर ऐंठन न गयी—चिंत च॒च्चिननु पुलुसु चा॒वलेदु

చింత చచ్చినను పులుసు చావలేదు.

१३. सिर मुंडाते ही ओले गिरे—तल मुणगंगाने वडगंड्ल वान—

తల ముణగంగానె వడగండ్ల వాన.

१४. हाथ कंगन को आरसी क्या ?—मुंजेति कंकणमुनकु अद्दमेल ?

ముంజేతి కంకణమునకు అద్దమేల ?

१५. कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी—कुक्क तोक ए॑प्पुडू वंकरे—

కుక్క తోక ఎప్పుడూ వంకరే.

१६. खोदा पहाड़ निकली चुहिया—को॑ण्ड त्रव्वि ए॑लुकनु पट्टिनट्लु—

కొండ త్రవ్వి ఎలుకను పట్టినట్లు.

१७. अंडा सिखावे बच्चे को कि चींचीं कर—ग्रुड्डु वच्चि पिल्लनु वे॑क्किरिंचिनट्लु—

గ్రుడ్డువచ్చి పిల్లను వెక్కిరించి నట్లు.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३. वाक्य–विचार

१३२. समानाधिकरण (Appositional construction)

रचना की दृष्टि से तेॅलुगु भाषा में क्रिया रचना संश्लिष्ट न हो कर कृदंतीय होती है। इस कारण से वाक्य में विधेयांश कर्ता के समानाधिकरण में विशेषणवत् प्रयुक्त होता है। जैसे :

1. సత్యవాది లోకవిరోధి **सत्यवादि लोक विरोधि** (सत्य बोलने वाला लोक-विरोधी) 2. ఈ దానమునకు భంగము కావించినవాడు పాతకము చేసినవాడు **ई दानमुनकु भंगमु काविंचिनवाडु पातकमु चेसिनवाडु।** (इस दान को तोड़ने वाला पातक करने वाला) 3. కృష్ణుడు ద్రౌపది మానము కాపాడినాడు **कृष्णुडु द्रौपदि मानमु 'कापाडिनाडु'** (कृष्ण ने द्रोपदी का मान बचाया) इस अंतिम वाक्य में पूर्ण क्रिया के रूप में प्रयुक्त 'కాపాడినాడు' 'कापाडिनाडु' अपने मूल अर्थ में కాపాడినవాడు **'कापाडिनवाडु'** है, अर्थात् "बचाने वाला" है, जो कृष्ण का विशेषण कहा जा सकता है।

१३३. सामान्य क्रिया का लोप :

१. यह हमारा घर है २ वे मेरे पिता हैं। हिन्दी के इन वाक्यों में क्रिया के सामान्य रूप—है–हैं–का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। परंतु तेॅलुगु के इनके समानर्थक वाक्यों में उसकी आवश्यकता नहीं होती। जैसे 1. ఇది మా ఇల్లు **इदि मा इल्लु।** 2. ఆయన మా తండ్రి **आयन मा तंड्रि।** "एता आमादेर बारी" जैसे बंगला वाक्यों में भी सामान्य क्रिया का लोप देखा जाता है।

१३४. वाक्य में शब्दों का क्रम :

हिन्दी तथा तेॅलुगु के साधारण वाक्यों में शब्दों का स्थान–क्रम प्राय: एक सा पाया जाता है। पहले कर्ता, बाद कर्म और अंत में क्रिया शब्द रखे जाते हैं। कर्ता के विशेषण कर्ता के पूर्व में, कर्म से संबंधित शब्द कर्म से पूर्व तथा क्रिया से संबंध रखने वाले अव्यय आदि शब्द क्रिया के पहले आते हैं। उदा॰ **"उस छोटे से बालक ने, एक सफ़ेद घोड़े को, बड़े धैर्य के साथ पकड़ लिया।"**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
ఆ చిన్న పిల్లవాడు ఒక తెల్లగుఱ్ఱమును చాల ధైర్యముతో పట్టుకొనెను **आ चिन्न पिल्लवाडु ओक तॆल्ल गुर्रमुनु चाल धैर्यमुतो पट्टुकॊनॆनु**। इ० किन्तु पद्य रचना में आवश्यकता के अनुसार यह क्रम बदलता रहता है।

१३५. वाक्य-भेद :

भारतीय भाषाओं के आधुनिक व्याकरणों में अंग्रेज़ी प्रक्रिया के नमूने पर वाक्यों का वर्गीकरण—साधारण (Simple), मिश्र (Complex), और संयुक्त (Compound) में किया जाता है। हिन्दी तथा तॆलुगु के संबंध में भी यही विभाग प्रचलित हो गया है। **जो, जब, जहाँ, जैसा, जितना**—आदि संबंधवाचक शब्दों के प्रयोग के कारण हिन्दी में मिश्र वाक्य (Complex sentences) सहज ही बन पड़ते हैं जिनमें दो पूर्ण क्रिया वाले अंश पाये जाते हैं। जैसे : १. **जो आपका उपकार करेगा, उसे कभी मत भूलिए; २. जैसा तुम बोलोगे वैसा ही मैं करूँगा।** इ० परंतु तॆलुगु में इस प्रकार के स्वतंत्र संबंधवाचक सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण शब्दों का अभाव होने के कारण उपर्युक्त मिश्र वाक्यों के स्थान में, एक ही पूर्ण क्रिया वाले साधारण वाक्य (Simple sentences) ही बन जाते हैं। जैसे : 1. మీకు మేలుచేసినవానిని ఎన్నటికిని మరువవద్దు **मीकु मेलु चेसिनवानिनि ऍन्नटिकिनि मरुववद्दु** 2 నీవు చెప్పినటులనే నేను చేసెదను **नीवु चॆप्पिनटुलने नेनु चेसॆदनु**। इन तॆलुगु के वाक्यों में हिन्दी के समान पूर्ण क्रिया वाले उपवाक्य (Clauses) नहीं रहते; **मीकु मेलु चेसिनवानिनि** మీకు మేలుచేసిన వానిని तथा **नीव चॆप्पिनटुलने** నీవు చెప్పినటులనే केवल वाक्यांश (Phrases) मात्र हैं।

१३६. तॆलुगु की वाक्य रचना में मिश्र वाक्यों का एकदम अभाव भी नहीं है। संज्ञा-उप वाक्य (Noun-clause) के साथ मिश्र वाक्य सहज ही बन जाते हैं। जैसे : తమరు ఈ పని చేయలేదనివారు నాతో చెప్పిరి **तमरू ई पनि चेयलेदनि वारु नातो चॆप्पिरि**। इसमें తమరు ఈ పని చేయలేదు **तमरु ई पनि चेयलेदु** (आपने यह काम नहीं किया) संज्ञा-उपवाक्य है। వారు నాతో చెప్పిరి **वारु नातो चॆप्पिरि** (उन्होंने मुझसे कहा) प्रधान वाक्य है जिसकी मुख्य क्रिया చెప్పిరి **चॆप्पिरि**—है। संज्ञा-उपवाक्य इस मुख्य क्रिया का कर्म बन जाता है। అని **अनि** 'कि' का समानार्थक योजक शब्द है।

१३७. **जो, जैसा, जब जहाँ**—आदि संबंध वाचक शब्दों के बदले उनके प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग तॆलुगु आदि द्राविड़ भाषाओं में यत्र-तत्र पाया जाता है; परंतु यह रीति इन भाषाओं के लिए सहज नहीं है, उसका प्रचलन भी सीमित है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उदा० ఎవడు మీకు ఉపకారము చేయునో వానిని ఎన్నటికిని మరువ వద్దు **ऍवड्डु मीकु उपकारमु चेयुनो वानिनि ऍन्नटिकिनि मरुववद्दु।** మీరు ఎట్లు చెప్పెదరో అటులనే నేను చేసెదను **मीरू ऍट्लु चॆप्पॆदरो अटुलने नेनु चेसॆदनु।** यह माना जाता है कि ऐसे प्रयोग संस्कृत रचना के प्रभाव से इन भाषाओं में चल पड़े हैं।

१३८ उपवाक्यों का स्थान :

१. **'उन्हों ने मुझसे कहा कि आप ने यह कार्य नहीं किया।'**—हिन्दी के इस मिश्रवाक्य में प्रधान वाक्य है—'उन्हों ने मुझ से कहा'; संबंधित उपवाक्य है—"आप ने यह कार्य नहीं किया।" इस रचना में प्रधान वाक्य का स्थान पहला है, संबंधित उपवाक्य का उसके पश्चात्। तॆलुगु की वाक्यारचना में यह क्रम उलट जाता है। जैसे : తమరు ఈ పని చేయలేదు అని వారు నాతో చెప్పిరి. **तमरु ई पनि चेयलेदु अनि वारु नातो चॆप्पिरि।** इस में उपवाक्य पहले आता है, अंत में प्रधान वाक्य। 'अनि' जो 'कि' का पर्याय है दोनों को जोड़नेवाला संयोजक है। यह योजक शब्द हमेशा उपवाक्य के अंत में आता है : " **तमरु ई पनि चेयलेदु अनि।**" परंतु हिन्दी में योजक शब्द 'कि' उपवाक्य के आरंभ में ही रहता है।

२. "**जो पाप करेगा, वह मनुष्य अवश्य दुख भोगेगा**' इस में उपवाक्य पहले आया है। "**वह मनुष्य अवश्य दुख भोगेगा जो पाप करेगा।**"—इस में उपवाक्य अंत में आया है। हिन्दी में उपवाक्य का स्थान निर्दिष्ट नहीं रहता, परंतु इसके समानार्थक तॆलुगु वाक्य में उपवाक्य का स्थान सर्वप्रथम रहता है; मुख्य-वाक्य हमेशा अंत में रहता है। जैसे : ఎవడు పాపము చేయునో అట్టి మనుష్యుడు తప్పక దుఃఖము ననుభవించును **एवडु पापमु चेयुनो अट्टि मनुष्युडु तप्पक दुःखमु ननुभविंचुनु**

१३९. परोक्ष उक्ति :

हिन्दी में परोक्ष-उक्ति (Indirect Narration) के उपवाक्य आधुनिक शैली में अंग्रेज़ी के प्रभाव से प्रचलित हो रहे हैं। अंग्रेज़ी में प्रधान वाक्य और उसके उपवाक्य में मेल रहना आवश्यक है, मुख्यतया क्रिया पदों के काल तथा पुरुषों में। उदा० He said that he would go to Bombay tomorrow. इसमें He said भूतकाल में होने के कारण would go भी भूतकाल का ही हो गया है। इसके हिन्दी तथा तॆलुगु के पर्याय वाक्यों में साधारणतया, उपवाक्य प्रत्यक्ष उक्ति में (Direct Narration) में रखा जाता है; जैसे—'उसने कहा कि **मैं कल बंबई जाऊँगा।**' నేను రేపు

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

బొంబాయికి వెళ్లగలను అని వాడు చెప్పెను. परन्तु आजकल की शैली में अंग्रेजी से प्रभावित वाक्य अक्सर दृष्टिगोचर हो रहे हैं। जैसे--'उसने कहा कि वह कल बंबई जाएगा'—వాడు రేపు బొంబాయి వెళ్లగలడని చెప్పినాడు. परन्तु यह रीति भारतीय भाषाओं की परंपरा से भिन्न पड़ जाती है।

संस्कृत की वाक्य रचना में भी परोक्ष उक्ति दिखाई नहीं देती। कथित या सोची बात को व्यक्त करने वाला उपवाक्य प्रत्यक्ष उक्ति में ही होता है। 'इति' प्रधान वाक्य से उसे जोड़ने वाला योजक होता है। उदा० 'इदं उवकम् पिब इति सः अब्रवीत्।' अथवा "सः अब्रवीत् इदं उदकम् पिब इति।" खड़ी बोली में यह वाक्य यों बनेगा–'उसने कहा कि तू यह पानी पी।'

योजक :

खड़ी बोली का योजक शब्द 'कि' फ़ारसी के 'केह् ' से लिया हुआ है। संस्कृत का 'इति' प्राकृतों में 'ति' बन गया। परन्तु हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय भाषाओं में—'इति', 'इतिकृत्वा' अथवा 'ति' का विकास नहीं हुआ। अपभ्रंश में 'भणिवि', मराठी में 'म्हणूँन् ', नेपाली में 'भनि', बँगाला में 'बोलिया', पूर्वी हिन्दी में 'बोलके'—ये सब 'इति' के समानार्थक प्रयोग हैं। परन्तु इन शब्दों पर द्राविड भाषा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। तमिळ का 'एन्रु', तेॅलुगु का 'अनि', कन्नड का 'एन्दु' का शाब्दिक अर्थ 'कहकर' या 'बोलके' होता है, 'भणिवि', 'भनि', 'म्हणूंन् ', 'बोलिया' का भी वही अर्थ है। हिन्दी की दखिनी शैली में तेॅलुगु कन्नड आदि द्राविड भाषाओं की वाक्य-रचना का प्रभाव स्पष्ट रूप से अंकित दिखाई दे रहा है। नीचे खड़ी बोली तथा दखिनी के समानांतर वाक्य उदाहरण केलिए दिये जा रहे हैं :

१. ख० बो०—हम ने सुना कि कहीं से एक चीता शहर के अंदर घुस आया है।

द०—कहीं से एक चीता शहर के अंदर घुस आया करके हमने सुना।

२. ख० बो०—मैंने सुना कि वह तीन दिन से भूखा है।

द०—वह तीन दिन से भूखा है बोलके मैं सुना।

३. ख० बो०—मालूम होता है कि उस का नौकर पैसा चुराकर भाग गया है।

द०—उस का नौकर पैसा चुरा कर भाग गया सरीका है।

४. ख० बो०—यहाँ से जो गाँव दिखाई पड़ रहा है, वह घनपुर कहलाता है।

द०—यहाँ से दिखाई पड़ रहा गाँव घनपुर कहलाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५. ख० बो०—यह बात नहीं है कि केवल हिन्दू समाज के अंदर ही त्रुटियाँ आ गईं हों।

द०—केवल हिन्दू समाज के अंदर ही त्रुटियाँ आ गई हों सो बात नहीं है।

६. ख० बो०—जो लोग मर गयें वे वापस नहीं आते।

द०—मरे सो लोग वापस नहीं आते।

इस प्रकार, हिन्दी तथा तेलुगु भाषाओं में यद्यपि पारिवारिक संबंध (Genealogical Relationship) नहीं है, फिर भी दोनों के विकास की दशा में, मुख्यतया, अपभ्रंशों की दशा में, पारस्परिक प्रभाव के कारण अनेक अंशों में रचनात्मक साम्य (Morphological Affinity) दिखाई दे रहा है। क्या हिन्दी क्या तेलुगु सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं की धारा आर्य-द्राविड की सम्मिलित गंगाजमुनी है।

— —

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सहायक-ग्रन्थ-सूची

1. **A Grammar of the Hindi Language :**
   Rev. S. H. Kellog, Second Edition, 1893.

2. **The Grammatical Structure of Dravidian Languages:**
   Jules Bloch; Deccan College Hand-book
   Series: 3, Poona, 1954.

3. **Linguistic Survey of India :**
   G. A. Grierson, Vol. IV.

4. **Camparative Grammar of the Tamil Language :**
   P. S. Subrahmanya Sastry, Tiruvadi, Tanjore District, 1947.

5. **Verbal Composition in Indo-Aryan :**
   Dr. R. N. Vale; Deccan College Dissertation Series, 9, Poona.

6. **The Origin and Development of the Bengali Language :**
   Dr. S. K. Chatterji, Calcutta University Press.

7. **Journal of Oriental Research :**
   Madras, Vol. 8 & 9.

8. **Dravidian Barrowings from Indo-Aryan :**
   University of California Publications in Linguistics, Vol. 26.

9. **Indian Linguistics :**
   Turner Jubilee Volume-Calcutta.

10. **Collected Papers on Dravidian Linguistics :**
    Prof. T. Burrow, Annamalai University, S. India.

11. **पातंजल महाभाष्य :**
    निर्णयसागर प्रेस, बंबई ।

12. **ऋक् प्रातिशाख्य :**
    मंगलदेव शास्त्री, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद ।

13. **प्राकृत व्याकरण :**
    हेमचन्द्र, बाम्बे संस्कृत एॅन्ड प्राकृत सीरीज़ ६०, १९३६.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

14. प्राकृत प्रकाश (वररुचि) :
डा० पी० एल्० वैद्य ।

15. भारतीय आर्य भाषा--"ल' आँदो एरियाँ"--ज्यूल्स ब्लाख :
डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश ।

16. हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग :
डा० नामवर सिंह, साहित्यभवन, इलाहाबाद ।

17. हिन्दी भाषा का उद्गम तथा विकास :
डा० उदयनारायण तिवारी, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, प्रयाग ।

18. प्राकृत-विमर्श :
डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय ।

19. हिन्दी की गद्य शैली का विकास :
जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ।

20. हिन्दी भाषा का विकास :
डा० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकाडमी, इलाहाबाद ।

21. दखिनी हिन्दी :
डा० बाबूराम सक्सेना, हिन्दुस्तानी एकाडमी, इलाहाबाद ।

22. ఆంధ్రశబ్ద చింతామణి :
వావిళ్ల రామస్వామి శాస్త్రులు & సన్స్, చెన్నపురి.

23. ఆంధ్రభాషా వికాసము :
గంటి జోగిసోమయాజులు, మహారాణీ పేట, విశాఖపట్టణం.

24. భాషా చారిత్రిక వ్యాసములు :
కోరాడ రామకృష్ణయ్య, కోరాడ ప్రచురణాలయము, మద్రాసు.

25. బాలవ్యాకరణము :
చిన్నయసూరి, వావిళ్ల రామ స్వామి శాస్త్రులు & సన్స్ చెన్నపురి.

26. ఆంధ్రభాషానుశాసనము :
మల్లాది సూర్యనారాయణ శాస్త్రి.

27. కావ్యాలంకార చూడామణి :
వావిళ్ల రామస్వామి శాస్త్రులు & సన్స్, చెన్నపురి.

28. ఆంధ్ర మహాభారతము : (విరాట ఉద్యోగపర్వములు)
వావిళ్ల రామస్వామి శాస్త్రులు & సన్స్, చెన్నపురి.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	३	प्रयुक्त हो '	प्रयुक्त होते हैं
,,	४	अत: ते	अत:
४	१३	'स'	'त्स'
६	१४	ఠేగాఞ్ఞ	ఠేగాఞ్డ
८	२९	तालव्य शा	तालव्य श
११	१३	स्वारांतता	स्वराँतता
,,	२६	త్రయత్నాత్రయాత్	ప్రయత్నాత్రయాత్
१२	१६	ఠరిషత్తు	పరిషత్తు
,,	२४	व्याकरश	व्याकरण
१५	६	ऐ॑	ऍ
२४	१६	వచాఠ	పచాఠ
२७	१३	ऊण्म	ऊष्म
३५	२१	अ सूचियाँ	ये सूचियाँ
,.	२६	र्धयेमागधी	अर्धमागधी
३६	४	अहैर	और
,,	६	करकु	कुरुक
३७	१४	आभ्यंतरिक	जो आभ्यंतरिक
,,	२२	अघोष उच्चरित	सघोष उच्चरित
४७	२१	భాఠఠదేశము	భారతదేశము
४८	५	भारतेशमुनकु	भारत देशमुनकु
५१	२८	शद्ब	शब्द
५५	२१	"जीविहिं मज्झे"	"जीवहिं मज्झे"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६९	७	ఎరరు	ఎవరు
७७	१	कृदंत है	कृदंत विशेषण है
,,	१३	कृदंत है	कृदंत विशेषण है
८८	२८	पोवुचु.ड	पोवुचुं ड
१०३	२३	भोक्तिुम्	भोक्तुम्
११२	६	కట్టి	కట్టి
११३	१	मंद लेना	मूँद लेना
,,	२०	तंश्लिष्ट	संश्लिष्ट
११६	८	दिछले	पिछले
,,	१७	समुच्य	समुच्चय
११७	७	हाय के पर्याय हैं	'हाय' का पर्याय है।
११८	१२	बरदलो	वरदलो
११९	१७	బండి అందరు	బండి అందదు
१२०	४	धक्कंघक्का	धक्कंधक्का
१२१	७	टला टोली	टाला टोली
१२७	६	చిన్న-తన్నము	చిన్న-చిన్నతనము
,,	७	పని-పనితనము	పసి-పసితనము
,,	१२	లోభితనం	లోభితనం
१२८	१५	नयगरमु	नयगारमु

———

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी, हैदराबाद

के

हिन्दी प्रकाशन

१. पद्माकर–भा० १
(आन्ध्र के हिन्दी लेखकों के सेमीनार (१९६५) में पढ़े गये लेखों का संकलन–संपादक: श्रीराम शर्मा) – रु. ६.००

२. आंध्र भागवत-परिमल
(तॆलुगु के महाकवि पोतनामात्य-कृत 'आंध्र महाभागवतमु' के चार उपाख्यानों का हिन्दी पद्य-रूपांतर। रूपान्तरकार: श्री वारणासि राममूर्ति 'रेणु') – रु. ५.००

३. तॆलुगु की बीस कहानियाँ
(अनुवादक : श्री बालशौरि रेड्डी) – रु. ५.००

४. हिन्दी तॆलुगु व्याकरणों का एक तुलनात्मक अध्ययन
(द्वितीय-मुद्रण। लेखक: श्री एस. वि. शिवराम शर्मा, एम.ए.) – रु. ६.००

५. उर्दू पथ–प्रदर्शक
(रहनुमाए-उर्दू का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक: श्रीनिवास लाहोटी) – रु. २.००

६. तॆलुगु का उपन्यास साहित्य
(आन्ध्र के जननीवन के परिचायक तॆलुगु के प्रतिनिधि उपन्यासों की हिन्दी में रूपरेखा तथा आलोचना। संपादक: डा० भीमसेन 'निर्मल') – रु. ६.००

७. आधुनिक तॆलुगु कविता–भा० १
(पिछले साठ वर्ष कीं तॆलुगु-अभ्युदय कविताओं का प्रतिनिधि संकलन, हिन्दी लिप्यंतरण और पद्यानुवाद। संपादक: डा० चावलि सूर्यनारायण मूर्ति) – रु. ७.५०

८. आधुनिक तॆलुगु कविता–भा० २
(आधुनिक तॆलुगु साहित्य की अभ्युदय (प्रगति) वादी कविताओं का प्रतिनिधि संकलन। हिन्दी लिप्यंतरण तथा पद्यानुवाद। संपादक & अनुवादक: श्री बैरागी) – रु ७.५०

९. रामप्पा का मंदिर
(आन्ध्र प्रदेश का प्रमुख शिल्प केन्द्र 'रामप्पा मंदिर' पर लिखा गया श्रव्य-रूपक। लेखक: डा० सी. नारायण रेड्डि) – रु. २.००

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ఆంధ్ర ప్రదేశ
సాహిత్య అకాడమి